भारतवर्ष का इतिहास

पहिला भाग।

ई. मार्सडिन, बी. ए., एफ. आर. जी. एस., एम. आर. ए. एस.

और

लाला सीताराम, बी. ए., एफ. ए. यू., एम. आर. ए. एस.

रचित।

मैकमिलन एण्ड कम्पनी लिमिटेड
कलकत्ता, बम्बई, मद्रास, लण्डन
१९१९

कीमत ॥=)

53/H.i.S.L.

भारतवर्ष का इतिहास

पहिला भाग।

Abhinav Sapru

ई. मार्सडेन, बी. ए., एफ. आर. जी. एस., एम. आर. ए. एस

और

लाला सीताराम, बी. ए., एफ. ए. यू., एम. आर. ए. एस.

अभिनव

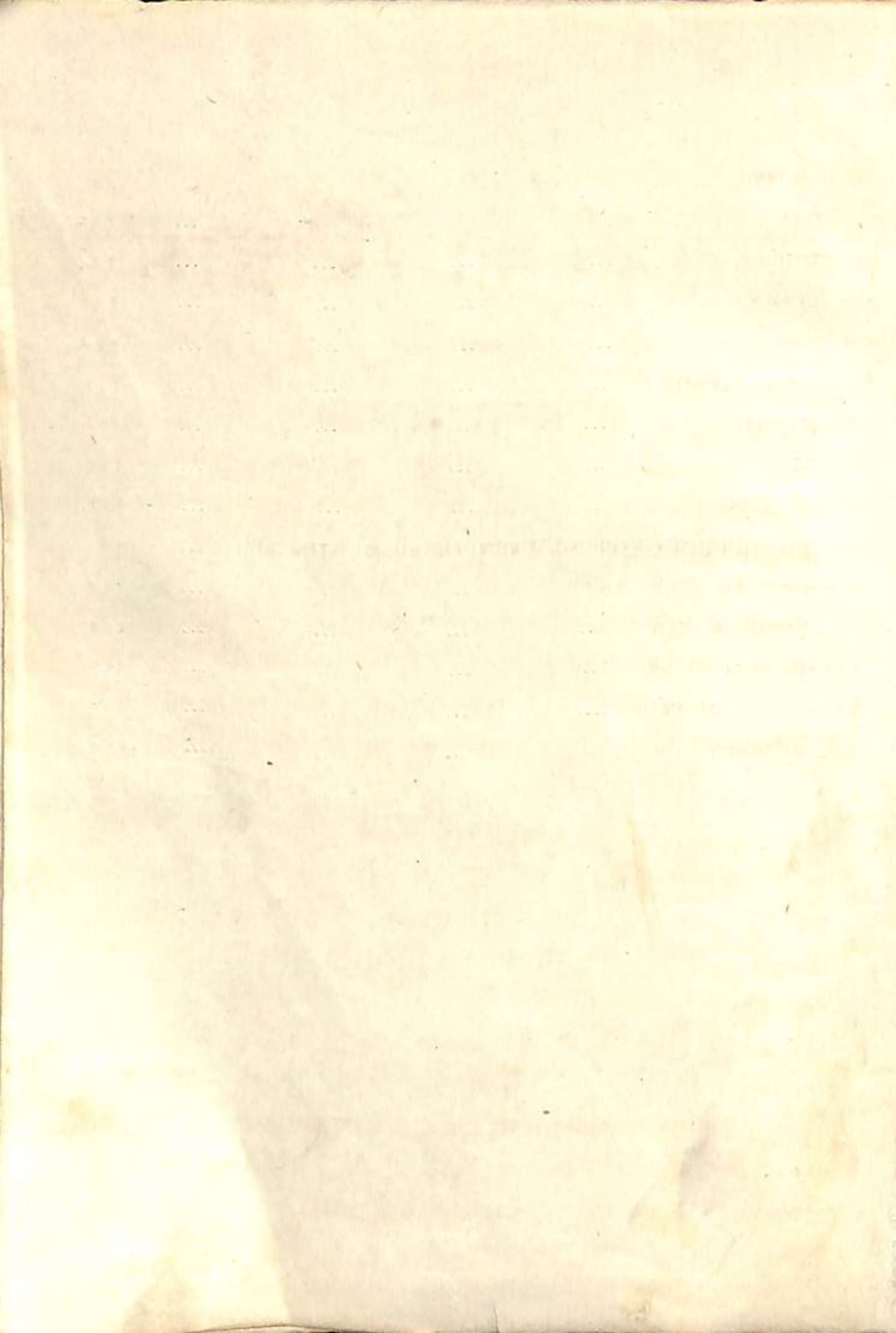
रचित।

मैकमिलन एगड कम्पनी लिमिटेड
कलकत्ता, बम्बई, मद्रास, लगडन
१८१८

PRINTED BY B. K. DAS AT THE WELLINGTON PRINTING WORKS
10, HALADHAR BARDHAN LANE, CALCUTTA.

सूचीपत्र ।

ॽ



भारतवर्ष का इतिहास।

पहिला भाग।

१—भारतवर्ष—उसके पहाड़ और नदियां।

१—भारतवर्ष एक बहुत बड़ा देश है। यह एशिया के दक्षिण त्रिभुज के आकार समुद्र में घुसा हुआ है। इसकी उत्तर की भुजापर बड़े ऊंचे पहाड़ों की श्रेणी हिमालय के नाम से प्रसिद्ध है और इसके पूर्व और पश्चिम समुद्र लहरें मारता है।

२—हिमालय दो शब्दों से बना है, हिम बरफ़ और आलय घर, बरफ़ का घर। यह पृथ्वी भर में सब से ऊंचा पहाड़ है और इस देश को एशिया के और देशों से अलग करने को एक बड़ी भीत सा उठा हुआ है। हिमालय की चोटियां सदा बरफ़ से ढकी रहती हैं। ठंढक भी ऊपर ऐसी है कि वहां न जीव जन्तु रह सकते हैं न पेड़ उग सकते हैं।

३—यह श्रेणी सीधी पूर्व के समुद्र से पश्चिम के समुद्र तक चली जाती तो उत्तर की ओर से इस देश में कोई न आ सकता; पर पूर्व और पश्चिम दोनों सिरों पर पहाड़ बहुत नीचे हो गये हैं, जिन के बीच बीच में बड़ी बड़ी घाटियां हैं, जिन्हें दरा या दर्रा कहते हैं, और इनमें से होकर लोग आते जाते हैं। यह घाटियां

भारतवर्ष के पहाड़ और नदी

हिन्दूकुश पहाड़
खैबर घाटी
सुलेमान पहाड़
सिन्ध की नीचान भूमि
सिन्ध नदी
बड़ा मरुस्थल
अर्वली पहाड़
गंगा की नीचान भूमि
ब्रह्मपुत्र नाम नदी
गंगा नदी
विन्ध्या पर्वत
नर्मदा नदी
छोटा नागपुर की ऊंची भूमि
दक्षिण की ऊंची भूमि
बंगाल की खाड़ी
अरब का समुद्र
मैसूर की ऊंची भूमि

भी कहीं कहीं हज़ारों फ़ीट ऊंची हैं और इनमें बहुधा बरफ़ जमी रहती है।

४—उत्तर-पश्चिम की ओर नीची पहाड़ियों की एक श्रेणी है, उसका नाम सुलेमान है और उसका मुख्य दर्रा खैबर कहलाता है। उत्तर-पूर्व में पटकोई की पहाड़ी है। इस पहाड़ी और हिमालय के पूर्व के सिरे के बीच में होकर महानद ब्रह्मपुत्र ने अपने लिये राह बनाली है। उत्तर-पूर्व में भारत में आने की जितनी राहें हैं सब ब्रह्मपुत्र ही की बनाई हुई हैं।

५—हिमालय के दक्षिण हिन्दुस्थान का बड़ा मैदान है जिस में दो बड़ी नदियां सिन्धु और गङ्गा बहती हैं। सिन्धु पश्चिम के भाग को सींचती और गङ्गा पूर्व के भाग की प्यास बुझाती है। इस लम्बे चौड़े देश के दक्षिण बिन्ध्याचल और सतपुरे के पहाड़ हैं जो भारतवर्ष के बीच में पटके की तरह बंधे पड़े हैं। जैसे हिमालय पहाड़ भारतवर्ष को एशिया से अलग करता है वैसे ही बिन्ध्याचल दक्षिण देश को उस भाग से बांटे हुए है जो मुख्य हिन्दुस्थान के नाम से प्रसिद्ध है।

६—दकन या दखिन (दक्षिण) भारतवर्ष का वह भाग है जो मुख्य हिन्दुस्थान के दक्षिण में है। बिन्ध्याचल पहाड़ दोनों के बीच में है। यह पहाड़ पश्चिम को ओर बराबर समुद्र तक चला गया है परन्तु पूर्व में इसकी उंचाई घटती गई है यहां तक कि इनके नीचे होने से चुटिया नागपुर का पठार बन गया है। जो लोग दखिन में बसे हैं वह प्राचीन काल में इसी राह हिन्दुस्थान से गये हैं।

७—दखिन के देश में पहाड़ियां और नदियां भरी पड़ी हैं। पश्चिम में जो पर्वतश्रेणी है वह पश्चिमीय घाट के नाम से प्रसिद्ध है। पूर्व की पर्वतश्रेणी को पूर्वीय घाट कहते हैं। यह श्रेणी

पच्छिमी से बहुत नीची है। दखिन की प्रायः सब नदियां पच्छिमीय घाट से निकलती हैं और पूर्व की ओर बहती हुई पूर्वीय घाटों को चीरती समुद्र में गिरती हैं। दोनों घाटों और समुद्र के बीच में कुछ कुछ तरी है। पूर्वीय घाट की तरी सिकुड़ कर उत्तर में बहुत छोटी रह गई है, परन्तु दक्षिण में इसकी चौड़ाई बहुत है और यहां इसे कारनाटिक का मैदान कहते हैं। उत्तर से दक्षिण जाने का रास्ता इन्हीं तरेटियों में होकर है।

२—प्राचीन समय में भारतवर्ष की दशा।

(१) पत्थर और धात का समय।

१—हज़ारों बरस पहिले भारतवर्ष जङ्गली देश था। सारे देश में बड़े बड़े वन खड़े थे जिनमें जङ्गली जीवजन्तु फिरा करते थे। पेड़ों की घनी छांह में अजगर लोटते थे। न कहीं शहर थे, न गांव, न घर, न सड़कें।

२—कहीं कहीं थोड़े से बनमानुस रीछों की तरह खोहों में या बन्दरों की तरह पेड़ों पर रहा करते थे। इनका डील छोटा, रंग काला, चेहरा मोहरा भोंडा था; नंगे और मैले रहते और बन के फल फूल बेर और कन्दमूल खाते थे; कभी कभी बनैले सुअर और हिरन भी मारकर खा जाते थे। इनके पास चाकू छुरे न थे। काटने का काम चकमक पत्थर के पैने टुकड़ों से लिया करते थे। इससे हम इन लोगों को पत्थर के समय के आदमी कहते हैं। यह लोग लकड़ियों को रगड़ कर आग बनाना भी जानते थे।

३—इन लोगों की यह दशा बहुत दिनों तक रही। पीछे धीरे धीरे इन्हों ने कुछ उन्नति की और बनों में रहने के लिये छोटी छोटी झोपड़ियां बनाईं; पत्तों या पशुओं की खाल से अपना तन

ढांकने लगे ; फिर तीर क़मान और भाले बना लिये जिन से हिरन मार लिया करते थे। इनके खाने पीने की वस्तु भी अच्छी हो गई जिस से बनमानुसों की अपेक्षा यह लोग मोटे ताज़े और बली भी हो गये। यह लोग मिट्टी की हांडियां बनाते और उनमें साग पात पका लेते थे। कुछ दिन पीछे धातों का काम भी जान गये और उनकी कटारियां और भालों की अनी बनाने लगे। इस समयवाले धात के समय के मनुष्य कहे जाते हैं।

(२) भारतवर्ष की पुरानी जातियां—कोल।

१—इस देश में पहिले जो लोग बसे वह सब जहां तक हम जानते हैं दो ही बड़ी जाति के थे एक कोल दूसरे द्रविड़। कोल वंश उत्तर और मध्य भारत में बसा था और द्रविड़ वंशवाले जो गिनती में बहुत थे देश भर में फैले थे।

२—किसी किसी विद्वान का यह भी मत है कि कोल धात के समयवालों की सन्तान हैं। जसे धात के समयवाले पत्थर के समयवालों से बढ़कर निकले वसे ही धातवालों की सन्तान में जो बली बुद्धिमान और श्रेष्ठ हुए कोल कहलाये। बहुतों का यह मत है कि कोलों का असली घर कहीं और था। वहां से यह लोग उत्तर-पूर्व की राह से हिन्दुस्थान में आये। हम निश्चय करके कह नहीं सकते कि कौन विचार ठीक है केवल इतना जानते हैं कि प्राचीन काल में यह लोग उत्तर और मध्य भारत में फैले हुए थे।

३—इनके पास ढोर न थे ; यह शिकार करके मांस खाते और धरती खोद कर अनाज बोते थे। पहिले इनके पास धरती गोड़ने को लकड़ी के हथियार थे पीछे इन्हों ने लोहे के फाल बना लिये। इनके कुल अलग अलग रहते थे। एक कुल एक गांव में रहता

था। यह लोग अपने पितरों को पूजा करते थे। जो जातियां पीछे से भारत में आईं उनमें कोई कोई कोल कुल ऐसे मिलजुल गये कि अब उनका अलग करना कठिन है। पर अब भी इनके दस बारह कुल ऐसे हैं जो हिन्दुओं से नहीं मिले और हज़ारों बरस से अलग अलग चले आते हैं। ऐसे कोल गिनती में ३०००० हैं और पूर्वीय बंगाला, चुटिया नागपुर, उड़ीसा और मध्य देश के पहाड़ी इलाक़ों में बसे हैं। इनकी बड़ी उपजातियां भील और सन्ताल के नाम से प्रसिद्ध हैं।

(२) भारतवर्ष की पुरानी जातियां—द्रविड़।

१—द्रविड़ों के पुरखों का ब्योरा हम उतना ही कम जानते हैं जितना कि कोलों के पुरखों का। सम्भव है कि द्रविड़ धात के समयवालों की सन्तान हों और यह भी हो सकता है कि इनके पुरखें भी वही हों जो कोलों के थे। कुछ अचरज नहीं जो बरसों तक भारत के उपजाऊ और हरे भरे भागों में रहकर कुछ लोग अपने पहाड़ी भाइयों की अपेक्षा अधिक बली और सभ्य हो गये हों और द्रविड़ उन्हों के वंश में हों। कोई कोई विद्वान यह मानते हैं कि द्रविड़ पश्चिम-उत्तर देशों से भारतवर्ष में आये; बहुत दिनों तक उत्तर भारत में बसे रहे और कोलों से लड़ते भिड़ते दक्षिण में पहुंच गये।

२—बहुतों का यह विचार है कि द्रविड़ दक्षिण से आये। दक्षिण कहां से? इस विषय में भी दो मत हो सकते हैं। एक यह कि यह लोग उस महादेश से आये हों जो भारतवर्ष के दक्षिण हिन्दसागर में बहुत दूर तक फैला हुआ था और अब बैठते बैठते समुद्र में डूब गया है; दूसरा यह कि उन टापुओं से आये हों जो एशिया के दक्षिण आस्ट्रेलिया तक फले हैं। पुराने समय में यह

टापू भारतवर्ष से मिले हुए थे; अब वह सूखा रास्ता समुद्र में डूब गया है।

३—द्रविड़ ढोरों के बड़े बड़े गल्ले रखते थे। उन्हों ने घने बन काटे, धरती साफ़ की और उसमें खेती कियारी का काम शुरू किया। द्रविड़ गांव में रहते थे। गांव में एक मुखिया रहता था जिसकी आज्ञा सब मानते थे; पृथिवी को धरतीमाता कहते और उसे पूजते थे। सांपों और पेड़ों की भी पूजा होती थी।



द्रविड़ों की नागपूजा।

द्रविड़ अपने देवताओं से भक्ति और प्रीति नहीं करते थे बरन उनसे डरते थे और उनसे यह बिनती करते थे कि तुम हमें दुख न दो। द्रविड़ यह समझते थे कि उनके देवता रक्त पीने से प्रसन्न होते हैं; इसी से वह मुर्ग़, बकरे, भैंसे उनको चढ़ाया करते थे।

४—हम यह जानते हैं कि प्राचीन समय में भारतवर्ष के उत्तर और दक्षिण में द्रविड़ों के बड़े बड़े नगर थे। उनमें उनकी बहुत सी जाति और कुल बसते थे। बड़े बड़ प्रान्तों में राजा राज करते थे। मुखिया उनको खेतों की पैदावार का एक भाग देता था। इन्हीं

लोगों ने पहिले पहिल गांवों के प्रबन्ध और बन्दोबस्त के नियम बनाये। उनमें बहुत से अब तक जारी हैं। यह लोग बड़े व्यापारी थे। भारतवर्ष में आर्यों के आने से पहिले ही यह लोग जलमार्ग से दूसरे देशों में सागवान की लकड़ी, मलमल, मोर, चन्दन की लकड़ी और चावल भेजते थे; बढ़ई, लोहार और जुलाहे का काम अच्छी तरह जानते थे। उस समय के विचार से इनको सभ्य कहना अनुचित नहीं है।

५—द्रविड़ कोलों के पास पड़ोस में रहते पर उनसे बहुत बली, गिनती में अधिक, और सभ्यता में बहुत बढ़े थे। जो धरती अधिक उपजाऊ थी वह द्रविड़ों ने आप ले ली जो बची वह कोलों के लिये छोड़ दी। कहीं कहीं द्रविड़ और कोल दोनों मिलजुलकर एक भी हो गये। जब बाहर से और जातियां एक के पीछे दूसरी लगातार भारतवर्ष में आने लगीं तब पहिले तो द्रविड़ और कोल उनसे लड़े पीछे उन में मिल गये। भारत के उत्तर के देशों से आनेवालों का ऐसा तांता लगा कि कुछ दिन पीछे हिन्दुस्थान के पश्चिम के भागों में जिन्हें अब पंजाब, काश्मीर और राजपुताना कहते हैं कोल और द्रविड़ों का नाम तक न रह गया। परन्तु उत्तर भारत के मध्य भाग, गङ्गा की तरेटी, और सारे मध्य देश में इनकी संख्या अधिक थी। यह बातें उन प्रान्तों के रहनेवालों के रंग, सिर की बनावट, आंख, नाक और डीलडौल से सिद्ध होती हैं। इन के देखने से यह सिद्ध होता है कि इन प्रान्तों के रहनेवालों की किसी किसी जाति में थोड़ा बहुत द्रविड़ और कोल अंश मिला हुआ है।

६—दक्षिण भारत के रहनेवालों की बनावट में जो द्रविड़ हैं बहुत कम भेद पड़ा है। वह अब तक द्रविड़ कहलाते हैं। हज़ारों बरस तक गरम देश में रहने से उनका रंग बहुत

काला हो गया है। भारतवर्ष के और देशों में इतने काले लोग नहीं रहते। दक्षिण हिन्दुस्थान में आज ५ करोड़ ७० लाख द्रविड़ बसते हैं और १४ भिन्न भिन्न बोलियां बोलते हैं जिनमें टामिल, तिलगू, मलयाड़म् और कनाड़ी प्रधान हैं।

७—हिन्दुस्थान के किसी किसी भाग में कुछ पुरानी द्रविड़ जातियां अभी तक ऐसी हैं जिन्हें हिन्दू कहना कठिन है। यह जान पड़ता है कि और द्रविड़ों की नाईं इन्हें सभ्यता प्राप्त न हुई। ऐसे लोग दक्षिण के पहाड़ी देशों में बसते हैं और गोंड और खांद इनकी प्रसिद्ध जातियां हैं।

(४) जातियां जो बाहर से आकर हिन्दुस्थान में बस गईं।

१—मध्य एशिया हिमालय पहाड़ के उत्तर में है। वहां बड़ी ठंडक पड़ती है क्योंकि बड़े बड़ पहाड़ सदा बरफ़ से ढके रहते हैं। धरती कड़ी और पथरीली है। पानी कम बरसता है। नदियां भी थोड़ी हैं। जो जातियां इन पहाड़ी देशों में बसी हैं वह अपने ढोरों के लिये घास चारे की खोज में इधर उधर फिरा करती हैं। अनाज भी वहां पैदा नहीं होता, इससे उनका निर्वाह कठिनाई से होता है।

२—हिमालय के दक्षिण एक हज़ार मील तक ऐसे मैदान हैं जो गरम हैं, जिन में सूर्य का प्रकाश बहुत रहता है, बड़ी बड़ी नदियां बहती हैं, धरती उपजाऊ है, खाने पीने का सुभीता है और सब तरह का अनाज पैदा होता है। बहुत ही प्राचीन समय से उत्तर के ठंढे देशों के रहनेवाले पहाड़ों के दर्रों को राह दक्षिण के हरे भरे देशों में आते रहे और जब उन्हों ने देखा कि उनके उत्तर के देश की अपेक्षा यहां सब तरह से सुख चैन है तो यहीं के मदानों में बस गये।

३—कुछ दिन पीछे जब उत्तर से और लोग आये तो उन्हों ने पहिले आये हुओं को दक्षिण हटा दिया या उनसे मिलजुल कर एक हो गये। ऐसा कई बार हो चुका है।

४—आज दिन उनमें से बहुतेरी जातियों का नाम भी कोई जानता। यहां तक निश्चय हुआ है कि नीचे लिखी जातियां क्रम से समय समय पर बाहर से आकर भारत में बस गईं:—तूरानी या मंगोल, आर्य, ईरानी, यूनानी, शक या सीथियावाले, हूण, अरब के रहनेवाले, अफ़गान या पठान, तुर्क, मुग़ल।

५—इस किताब में इन सब जातियों का कुछ कुछ हाल बताया जायगा। जैसे यह कि कौन जाति के लोग कैसे कब और कहां भारत में बसे? तूरानी पूर्व और उत्तर भाग में रह गये ईरानी, यूनानी और अरबी पश्चिमोत्तर भाग से आगे न बढ़े। मुग़ल, तुर्क और पठान बहुधा उत्तर भारत के सिन्धु और गङ्गा की तरेटियों में बसे। कुछ जातियां जैसे शक और हूण उत्तर-पूर्व और मध्य भारत के पश्चिमीय भाग में रहने लगीं। आर्य लोग इन सब से पहिले आये थे सब से आगे पहुंचे और दक्षिण देश को छोड़ जहां उनमें से बहुत थोड़े लोग गये थे सारे देश में फैल गये।

(५) तूरानी या मङ्गोल।

१—मङ्गोलिया मध्य एशिया का वह देश है जिसे चीनी-तातार कहते हैं। मङ्गोल यहीं के रहनेवाले थे और यहीं से यह लोग चीन और आस पास के देशों में फैले। मुसलमान इतिहास रचने वाले इस देश को तूरान कहते हैं, और इसके निवासियों को तूरानी या तातारी।

२—इनका डील छोटा, सिर चौड़ा, नाक चिपटी, आंखें छोटी और तिरछी, रंग पीला लिये भूरा था। आर्यों के भारत में आने से

बहुत पहिले यह लोग उतरे थे और पूर्व-उत्तर के उन प्रान्तों में भर गये जो अब आसाम और बङ्गाले के नाम से प्रसिद्ध हैं। यह लोग उन पहाड़ी रास्तों से आये थे जिनमें से होकर ब्रह्मपुत्र और उसकी सहायक नदियां भारत में प्रवेश करती हैं। यह लोग कोलों और द्रविड़ों से अधिक बली और लड़ाके थे। मङ्गोल पहिले कोलों और द्रविड़ों से लड़े पर कुछ दिन पीछे धीरे धीरे उन्हीं में मिलजुल गये। बहुत दिनों से भारतवर्ष में रहने और दूसरी जातियों से मिल जाने से इनके रूप रंग में बड़ा भेद पड़ गया है फिर भी इन प्रान्तों के रहनेवालों के रूप रंग डील डौल के देखने से स्पष्ट जान पड़ता है कि इनके पुरखा कौन थे।

३—कोल और द्रविड़ तो इस देश में पहिले से बसे थे और तूरानी उस समय में आये जब प्रामाणिक इतिहास की नेव भी न पड़ी थी, और न जिसका कोई पता लगता है। इससे उचित यह जान पड़ता है कि आर्यों के आने से पहिले के समय को ऐतिहासिक समय से पहिले का काल कहें। इस समय का ठीक अनुमान नहीं हो सकता। गोल गोल इतना कह सकते हैं कि ईसा के जन्म से २००० बरस पहिले तक इसकी सीमा है।

३—आर्य।

१—सब से प्राचीन ग्रन्थ जिसमें हिन्दुस्थान के पुराने रहनेवालों का ब्यौरा मिलता है वेद है। इसके पढ़ने से जाना जाता है कि अब से अनुमान ४००० बरस पहिले भारतवर्ष के उत्तर और पश्चिम के भाग में जिसे अब पंजाब कहते हैं कुछ ऐसी जातियां बसी थीं जिनका रंग गोरा और डील लम्बा था। यह लोग अपने को आर्य कहते थे।

२—इनके विषय में हम इतना ही जानते हैं कि इनकी जन्म-भूमि तुर्किस्तान थी और यहां से चलते चलते अफ़ग़ानिस्तान होते हुए हिमालय पहाड़ के पश्चिमोत्तर के दर्रों की राह इस देश में आ गये। आर्य्य लोगों का रंग गोरा, डील बड़ा, माथा ऊंचा और रूप सुन्दर था। यह उन पीले नाकचिपटों से भिन्न थे जो पूर्व की ओर मङ्गोलिया में रहते थे।

३—इन लोगों ने गांव और छोटे छोटे नगर बसा रक्खे थे; भेड़, बकरी, गाय, बैल पालते थे; धरती जोतते बोते थे; जौ, गेहूं की खेती करते थे और कपड़ा बिनना जानते थे। पर लोहे के हथियार बनाना इन्हें नहीं आता था। ताम्बा और रांग आग पर गलाते थे और उनको मिलाकर कांसा बना लेते थे। इसी के चाकू, छूरी और बरछियां बनती थीं।

४—आस पास के बहुत से कुल मिलकर एक जाति के नाम से प्रसिद्ध थे जिसका एक सरदार रहता था और वही काम पड़ने पर सेनापति बन जाता था। यह जातियां बढ़ते बढ़ते इतनी बढ़ गईं कि जन्मभूमि में समा न सकीं। इस लिये कुछ जातियां दक्षिण-पश्चिम चली गईं और पारस में जा बसीं और उन्हीं के कारण इस देश का नाम ईरान पड़ गया जो आर्यान का दूसरा रूप है। कुछ आर्य भारतवर्ष में चले आये और बहुत दिनों तक पंजाब में बसे रहे।

५—जो आर्य हिन्दुस्थान में आकर बसे उनको अङ्गरेज लोग इन्डो आर्यन् कहते हैं जिसका अर्थ हिन्दुस्थानी आर्य है। यह लोग लिखना नहीं जानते थे और हमारे लिये ऐसा कोई लेख नहीं छोड़ गये जिससे उनका पूरा हाल जाना जाय। पर यह लोग देवताओं की स्तुति मन्त्र पढ़कर करते थे और अपनी सन्तान को शुद्धता और स्वच्छता के साथ उन मन्त्रों का पढ़ना सिखाते थे।

मन्त्र ऐसे कण्ठ हो जाते थे कि उनका भूलना कठिन था। यही कारण है जो सैकड़ों बरस तक मन्त्र सुन ही सुनकर कण्ठ किये गये। कुछ दिन पीछे लिखने की भी रीति निकली और मन्त्र लिख डाले गये। इस मन्त्रों के संग्रह को वेद कहते हैं। वेद और विद्या की ही बात है। वेदों का समय प्राचीन काल की विद्या-कलाओं का समय है। इन से हम को हिन्दुस्थानी आर्यों के बहुत कुछ पुराने इतिहास की छाया मिलती है।

६—यह लोग बहुत दिनों तक पंजाब की नदियों के किनारे सीधी सादी चाल से रहते थे। इन्हों ने बन काटकर धरती साफ़ की; खेती कियारी का डौल डाला; अनाज विशेष करके जौ, गेहूं की सुन्दर फ़सलें पैदा कीं; दिव्य देवताओं को पूजते और उनसे सब प्रकार की सहायता की आशा रखते थे। हिन्दुस्थान में आने से पहिले जब वह ठंडे देशों में रहते थे इनको भोजन बनाने और शरीर गरम रखने के लिये आग परम आवश्यक थी। इस लिये यह लोग अग्निदेव की बड़ी पूजा करते थे पर जब यह पंजाब में आये और देखा कि खेती के लिये मेंह भी चाहिये तो आकाश के इन्द्रदेव की उपासना करने लगे और उनकी स्तुति करने को मन्त्र पढ़ने लगे। यह लोग यह जानते थे कि गरज इन्द्र की बोली और बिजुली उसकी बरछी है। यह बरछी जब काले मेघों की पीठ में चुभती है तो उनसे पानी निकलकर धरती पर बरसता है।

७—यह लोग यह भी मानते थे कि मरने के पीछे जीव वायु और आकाश के ऊपर एक ज्योतिर्मय लोक में पहुंचता है जहां कोई दुख नहीं है, सदा प्रकाश रहता है परम आनन्द और शान्ति छाई रहती है, मित्रों और सगों से भेंट होती रहती है। इस लोक के शासक को यह लोग यम कहते थे जिसके सामने मरने पर सब को जाना पड़ता है और वही उनके कर्मों पर बिचार करता

है। इनके सिवाय और भी देवता थे जैसे वरुण (नीला आकाश), सवितृ या सूर्य, वायु (हवा), रुद्र (गरज), और उषस् (सवेरे का लाल और सुनहरा आकाश)।



आर्यों की सूर्य पूजा।

८—पुराने हिन्दू आर्य आजकल के हिन्दुओं से कई बातों में भिन्न थे। इनमें जातिभेद न था, न इनके शिवालय और ठाकुरद्वारे थे, न ठाकुर और मूर्त्तियां। लड़कियां स्वयंवर करती थीं; विधवाओं का विवाह होता था। आर्य अन्न और मांस खाते थे और सोमरस पीते थे जिससे आंखें चढ़ जाती थीं।

४—वेदों का समय ।

(ईसा के पहिले २००० से १५०० तक ।)

१—जब आर्य पंजाब में आये तो उनको यह देश कोल द्रविड़ और दूसरी जातियों से भरा मिला, जिनका अब कोई नाम तक नहीं जानता। आर्यों को उनसे बड़ी लड़ाइयां लड़नी पड़ीं। इनका हाल वेदों में आया है। पर आर्य कम थे, पुराने रहनेवाले गिनती में बहुत थे। यह जान पड़ता है कि कुछ दिन पीछे आर्यों ने उनसे मेल कर लिया और उनके साथ नातेदारियां जोड़ने लगे। उस समय में जाति पांति का बिचार न था।

२—आर्य लोग धीरे धीरे पंजाब में फैल गये; बन काटे, खेत बनाये, जौ गेहूं की खेती की; जो लोग देश में पहिले से बसे थे उनसे लड़े; कभी आपस में भी लड़ बैठते थे। आर्य पंजाब में सब एक साथ नहीं आये, समय समय पर भिन्न भिन्न कुल आकर बसते गये। जो पहिले आये उन्हों ने उपजाऊ धरती अपने बस में करके अच्छे अच्छे घर बनाये। पीछे आनेवालों ने चाहा कि उनसे घर और धरती छीन लें। इसपर बड़ी लड़ाइयां हुईं जिनका हाल पोथियों में लिखा है।

३—हम यह नहीं कह सकते कि आर्यों का सब से पहिला कुल हिन्दुस्थान में कब आया और कितने दिनों में उसने सिन्धु की तरेटी पर अपना अधिकार जमा लिया। विद्वानों का यह मत है कि इस बात को लगभग ४००० बरस हुए होंगी अर्थात् ईसा से २००० बरस पहिले आर्य पहिले पहिल खैबर की घाटी होकर हिन्दुस्थान में घुसे। विद्वान लोग यह भी मानते हैं कि आर्यों को यहां के असली रहनेवालों से लड़ते भिड़ते सरस्वती नदी तक

पहुंचने में, जो सिन्धु की सब से पूर्व की सहायक नदी थी, लगभग ५०० बरस लगे होंगे।

४—जिस नदी को अब हम घाघरा कहते हैं उसका नाम उस समय में दृषद्वती था और अब जिसका नाम सरसुती है वह सरस्वती कहलाती थी। इन दोनों नदियों के बीच का देश बड़ा उपजाऊ था। इसकी लम्बाई ६० मील और चौड़ाई २० मील थी। आर्य लोग इस टुकड़े को परम पवित्र मानते थे और इसे ब्रह्मावर्त (देवताओं का देश) कहा करते थे। आर्य कहते हैं कि इस देश के आचार व्यवहार सब उज्ज्वल और उत्तम थे।

५—आर्यों ने ५०० बरस में पंजाब पर अपना अधिकार जमा लिया। यह समय वेदों का समय कहा जा सकता है। वेद चार हैं। सब से बड़ा और सब से पुराना ऋग् वेद है। और तीन पीछे के बने हैं। इनका व्यौरा आगे लिखा जायगा। ऋग् वेद स्तुतियों का संग्रह है। यह ग्रन्थ संसार की बहुत पुरानी पुस्तकों में से है। इसमें अग्नि, इन्द्र, और अनेक आर्य-देवताओं की स्तुति के १०२८ मन्त्र हैं। जब कोई बूढ़ा आर्य नित्य ईश्वर की स्तुति करता था तो वह सदा एकही वाक्य एकही ढंग से कहता था। उसकी सन्तान को सुनते सुनते वह वाक्य कंठाग्र हो जाते थे और बूढ़ों को देखते देखते लड़के भी वैसे ही मन्त्र पढ़ना सीख लेते थे। यही क्रम एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक और एक शताब्दी से दूसरी शताब्दी तक जारी रहा और वेद का ज्ञान, सुन सुन कर और रट रट कर एक के पीछे दूसरे को होता गया।

६—आर्य ऋषियों ने हिन्दुस्थान आने से पहिले जो मन्त्र रचे थे उनमें से बहुतों का पता भी नहीं चलता। जो बचे हैं वह सब ऋग्वेद में मिलते हैं। यह अनुमान किया जाता है कि ऋग्वेद में वह मन्त्र जो सब से पीछे जोड़े गए ईसा से १५०० बरस पहिले बने

थे जब आर्य लोग सिन्धु की तरेटी के सब से पूर्व के भाग ब्रह्मावर्त में रहते थे। इन मन्त्रों में सिन्धु का नाम बहुत आया है; गङ्गा का केवल दो बार सो भी सब से पीछे बने मन्त्रों में है।

७—भारतवर्ष के पुराने आर्यों का हाल जो कुछ हमने जाना है सब ऋग्वेद से। वेद की भाषा वैदिक है जो पिछली और प्रचलित संस्कृत का पहिला रूप है। बहुत दिनों तक थोड़े से पण्डितों को छोड़ वेद को कोई समझ नहीं सकता था। आज कल अङ्गरेज़ी और कई भाषाओं में इसका अनुवाद हो गया है। वेद मन्त्र बहुत पहिले के बने हैं परन्तु बरसों तक उनका किसी ने ऐसा संग्रह न किया जैसे अब छापे जाते हैं। बनने से ५०० बरस पीछे तक उनकी गिनती भी ठीक न हुई थी।

५—रामायण का समय।

१—जब आर्यों को गंगा यमुना की तरेटी में रहते बहुत दिन बीत गये तो उनमें से कई कुल अपने सरदारों के साथ पूर्व की ओर उस देश में बढ़े जो गंगा और हिमालय के बीच में है और एक एक करके गोमती, घाघरा, गंडक और कोसी नदियों को जो पहाड़ से उतर कर गंगा में मिल जाती हैं, पार कर गये; गंगा के दक्षिण चम्बल और बेतवा की तरेटियों को लांघते विन्ध्याचल पहाड़ तक पहुंच गये और जो देश विन्ध्याचल और हिमालय के बीच में है उसका नाम मध्यदेश रख लिया।

२—भरत और पांचालवंश के सिवाय जो और बड़ी बड़ी जातियां उत्तर हिन्दुस्थान में बसी थीं उनमें से किसी किसी जाति का नाम हम अब भी जानते हैं। जिस प्रान्त को अब अवध कहते हैं वहां

गंगा और गंडकी नदी के बीच कोशल वंश के क्षत्रिय रहते थे और अयोध्या उनकी राजधानी थी।

जो देश अब बिहार के उत्तर में तिरहुत नाम से प्रसिद्ध है वहां गंडकी के पूर्व विदेहों का राज था और उनकी राजधानी मिथिला थी।



काशी।

जहां गोमती गंगा में आकर मिलती है उसके पास गंगा के तीर पर काशी का राज था और काशी नगरी जिसको अब बनारस कहते हैं और जो हिन्दुओं का बहुत बड़ा तीर्थ है उसकी राजधानी थी।

३—यह अनुमान किया जाता है कि इस प्रान्त पर अपना अधिकार जमाते २०० बरस लगे होंगे। इस काल की रामायण का

समय कह सकते हैं क्योंकि हिन्दुओं के एक बहुत बड़े ग्रन्थ रामायण में जो घटनायें लिखी हैं वह इसी समय की हैं।

४—जिस रूप में रामायण की पोथी अब देखी जाती है वह बहुत पीछे का रचा है जिसे ब्राह्मणों का समय कह सकते हैं। आजकल दो ग्रन्थ रामायण के नाम से प्रसिद्ध हैं एक वाल्मीकि का बनाया दूसरा तुलसीदास का रचा। इनमें वाल्मीकि का ग्रन्थ बहुत पुराना समझा जाता है। परन्तु जिस समय का हाल इसमें लिखा है उस से बहुत दिन पीछे यह ग्रन्थ रचा गया। जिस समय वाल्मीकि ने यह काव्य रचा था, हिन्दुओं का धर्म उनकी बोल चाल, उनके रीतरसम में बहुत कुछ अदल बदल हो गया था इस से यह कहना कठिन है जिन आचार व्यवहार का बर्णन इस ग्रन्थ में है वह किस समय के हैं। इस की एक कहानी तो पुरानी है। समय समय पर अवसर पाकर और कहानियां जोड़ी गई हैं और इन सब का ऐसे ढंग से बर्णन कर दिया गया है कि सब एक ही समय की जान पड़ें। जिस कथा को हम प्रधान मानते हैं वह निस्सन्देह उन आर्य वंशों और राजाओं से सम्बन्ध रखती हैं जो महाभारत की लड़ाई के पहिले पूर्व और दक्षिण के प्रान्तों को जाकर बसे थे।

५—ऋग्वेद के मन्त्र इसी समय के लिखे भासते हैं और इस समय में उनका वह क्रम ठीक किया गया था जिस क्रम में वह अब देखे जाते हैं। जसा हम ऊपर लिख चुके हैं कि ऋग्वेद सब से पुराना ग्रन्थ है। इसमें १०२८ मन्त्र हैं और इनमें बहुत से ऐसे हैं जिनको ईसा के १५०० बरस पहिले आर्य ऋषि बना चुके थे। इस प्राचीन काल में पुरोहितों और पुजारियों की कोई अलग जाति न थी। देवताओं को पशु मारकर बलि नहीं दी जाती थी। पूजा में अन्न और सोमरस चढ़ाया जाता था।

६—ज्यों ज्यों आर्य लोग उत्तर हिन्दुस्थान में फैले और देश के

असली रहनेवालों से मेल जोल हो गया इन का धर्म भी धीरे धीरे बदल गया। यज्ञ और बलिदान होने लगे और उनके विधि पूर्वक करने के लिये पुजारियों के समाज बन गये। इसी समय दो नये वेद बने एक यजुर् अर्थात यज्ञों का वेद—इसमें ऋग्वेद की वह ऋचायें हैं जो यज्ञ करानेवाले ब्राह्मण यज्ञ कराने के समय देव आराधन के लिये पढ़ा करते थे। यज्ञ की कुछ विधियां भी इस में लिखी हैं। इसे हम आर्यों की पूजा की पोथी कह सकते हैं। दूसरा सामवेद है; इस में ऋग्वद के वह मन्त्र हैं जो यज्ञ के समय एक प्रकार के यज्ञ करानेवाले पुरोहित गाया करते थे। यह आर्यों के देवस्तोत्रों का ग्रन्थ है। इन से बहुत दिन पीछे चौथा वेद बना। इस में ऐसे मन्त्र हैं जिनके उच्चारण से सब प्रकार के दुखों का निवारण होता है। इस का नाम अथर्ववेद है।

ब्राह्मण—सैकड़ों बरस पीछे जब आर्य गंगा यमुना के बीच में फला गये और यज्ञ करनेवाले ब्राह्मणों की गिनती भी बढ़ी और बल भी बढ़ा तो इन्हों ने यज्ञों के विधान को बढ़ाते बढ़ाते इतना कर दिया कि वह वेदों से भी बढ़ गये। अब उन्हों ने चारों वेदों के साथ एक एक नया खंड मिलाया। यह खंड ब्राह्मण कहलाते हैं। इन में यज्ञ करानेवाले पुरोहितों के, जिनको ऋत्विक और अध्वर्यु कहते हैं, कर्म विस्तार समेत लिखे हैं। ऋग्वेद ब्राह्मण में मन्त्र पढ़नेवाले के लिये मन्त्रों के उच्चारण की विधि लिखी है। सामवेद ब्राह्मण में मन्त्रों के गाने की विधि हैं, यजुर्वेद ब्राह्मण में ऋत्विजों के कर्म लिखे हैं जो अपने हाथ से यज्ञ और हवन करते थे। अथर्ववेद ब्राह्मण में वेद के मन्त्रों की व्याख्या की गई है।

आरण्यक—इनमें से कोई कोई ब्राह्मण आरण्यक कहलाते हैं। इन में उन ऋषियों मुनियों के धर्म कर्म का वर्णन है जो घर बार त्याग कर बस्ती से दूर बनों में आश्रम बना लेते थे।

आरण्यक भी वेदों के नाम से पुकारे जाते हैं, जैसे ऋग्वेदारण्यक यजुर्वेदारण्यक। इतना न भूलना चाहिये कि सामवेद और अथर्ववेद के साथ कोई आरण्यक नहीं है।

उपनिषद्—यह जान पड़ता है कि कुछ दिन बीते प्राचीन आर्य इन विधानों और नियमों के संग्रहों से उकता गये और उनके मन में ऐसे प्रश्न उठे "यह संसार जो हम देखते हैं क्या है? कैसे बना? हम कहां से आये? कहां जायेंगे?" ऐसे प्रश्नों के उत्तर जो आर्य ऋषियों को सूझे उपनिषदों में लिखे हैं। उपनिषद् ब्राह्मणों के पीछे या ईसा के जन्म से पहिले बन चुके थे। इन के रचनेवालों को यह सिद्ध हो चुका था कि वेद के देवताओं चन्द्र, सूर्य, वायु और आकाश का बनानेवाला एक और ही है जो इनसे बड़ा और शुद्ध है। इस को ब्रह्म कहते थे। यह मानते थे कि सारा जगत ब्रह्म ही से निकला और ब्रह्म में समा जायगा। वह कहते थे कि जैसे समुद्र का जल बादल बनकर आकाश में उड़ता है, धरती पर बरसता है, फिर नदियों में बहता हुआ समुद्र में मिलकर उसमें लीन हो जाता है ऐसेही सारा विश्व उसी एक परमब्रह्म परमात्मा से निकला और उसी में लीन हो जायगा।

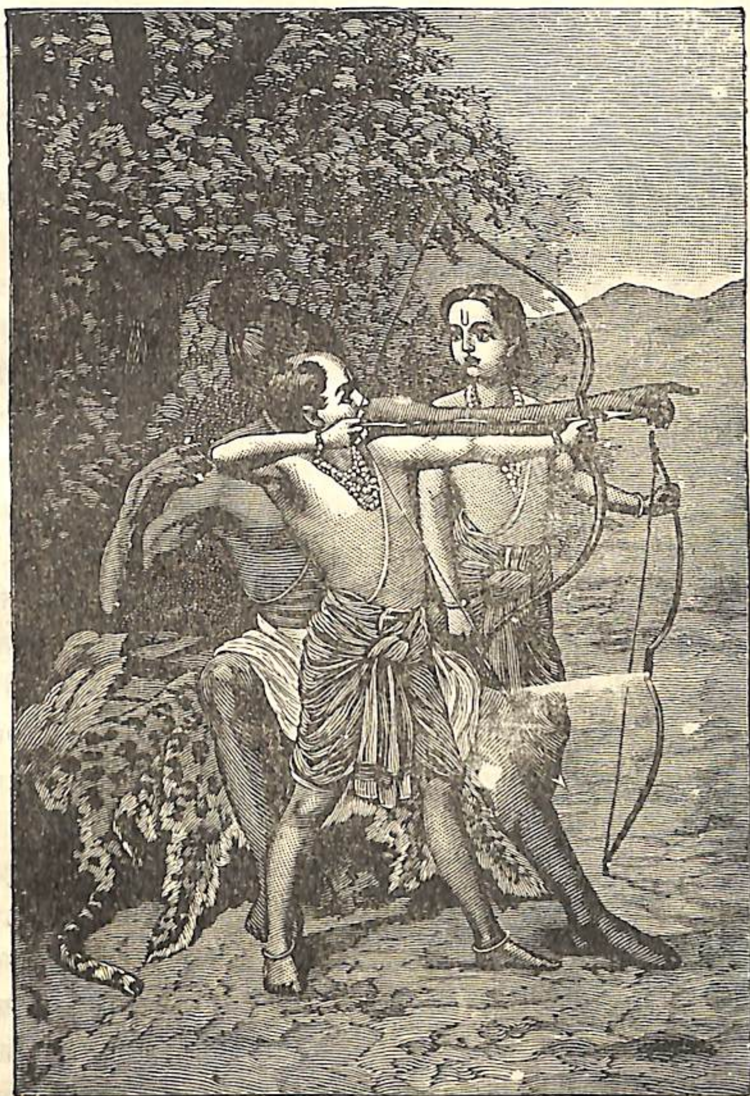
हिन्दुओं के पुराने ग्रन्थ दो श्रेणियों में बंटे हैं। एक श्रुति जो सब से पुरानी है दूसरी स्मृति जिन में पीछे के ग्रन्थ हैं। श्रुति का अर्थ ईश्वर का वाक्य। वेद ब्राह्मण आरण्यक और उपनिषद श्रुति हैं। स्मृति का अर्थ वह आचार व्यवहार के नियम जो स्मरण किये जाते थे।

६—श्रीरामचन्द्र जी की कथा।

१—रामायण में श्रीरामचन्द्र जी का चरित लिखा है। अयोध्या के राजा दशरथ की तीन रानियां थीं। जेठी रानी का नाम कौशल्या और सब से छोटी का कैकेयी था। कौशल्या के लड़के श्रीरामचन्द्र थे और वह ही राज्य के उत्तराधिकारी थे। पर राजा दशरथ कैकेयी को जो सब से छोटी और परम सुन्दरी थी, बहुत मानते थे और मानो उन्हीं के हाथ बिकेसे थे। कैकेयी की यह इच्छा थी कि उनका बेटा भरत राज पावे। मझली रानी सुमित्रा के भी दो लड़के लच्मण और शत्रुघ्न थे।

२—राजा के बड़े बेटे राम सारे देश में वीरता और पराक्रम में अद्वितीय थे। वह सुशील और सत्यप्रिय थे। अवधवासी उनको देख देख कर जीते थे। राजा भी उन पर और बेटों से अधिक स्नेह रखते थे और उन्हीं को राजतिलक देना भी चाहते थे।

३—अवध से दूर पूर्व की ओर गंडक नदी के पार मिथिला का राज था। वहां के राजा महाराज जनक को सीता नाम की एक बेटी बड़ी रूपवती थी। बड़ बड़े राजकुमारों ने उसके साथ बिवाह के सन्देसे भेजे थे। पिताने बेटी को अधिकार दे दिया था कि वह अपना बर आप चुन ले, इसलिये स्वयम्बर रचने का बिचार किया गया और इस बात की चरचा चारों ओर फैल गई। राजा जनक को अपने पुरखों से एक बहुत बड़ा धनुष मिला था जो कि बहुत कड़ा था। सीता ने कहा कि जो कोई इस धनुष को तोड़ देगा वहीं मेरा पति होगा। झुंड के झुंड राजा मिथिला में आ उपस्थित हुए। एक एक करके सबने ज़ोर लगाया परन्तु कोई उस धनुष को न तोड़ सका। धनुष इतना भारी था कि बहुतेरों से तो हिला भी नहीं। परन्तु जब राम की बारी आई तो उन्हों ने सहज ही उसे



राम धनुर्विद्या शिक्षण ।

तोड़ डाला। सीता ने उसी समय फूलों की माला उनके गले में डाल दी, जिसका आशय यह था कि राम ही मेरे बर हैं। फिर बड़ी धूम धाम के साथ उन का बिवाह हो गया और अयोध्या में आकर महाराज दशरथ के महलों में सुख से दिन बिताने लगे।

४—कुछ दिन पीछे महाराज दशरथ को बुढ़ापे ने आ दबाया मानों यह दिखाई देने लगा कि अब हम कुछही दिनों के पाहुने हैं और वह समय आ गया कि कोई युवराज नियत किया जाय जो राज के काम काज में बढ़े राजा की सहायता करे और उसके पीछे उसकी जगह राज करे। सब यही चाहते थे कि राम युवराज हों। प्रधान मन्त्री सभासद और नगर के छोटे बड़े सब राम की बड़ाई करते थे। महाराज दशरथ ने इस सर्वप्रिय राजकुमार को बुलाया और कहा कि कल तुम युवराज बनाये जाओगे। नगर में रागरंग होने लगा, क्योंकि नगरवासी राम को जी जान से चाहते थे।

५—कैकेयी को जब समाचार मिला तो वह आग बगूला हो गई। अपने कपड़े फाड़ डाले, गहने उतार कर फेंक दिये, धरती पर लोट गईं और जब राजा आये तो उनसे मुंह से भी न बोलीं। बूढ़ा राजा कैकेयी के हाथ तो बिका हुआ ही था, उसने कैकेयी के कहने से यह मान लिया कि भरत युवराज हों और राम चौदह बरस का बनवास भोगें।

६—राजा दशरथ ने प्रतिज्ञा तो कर ली पर पीछे बहुत पछताये क्योंकि अपने प्यारे बेटे को देश बाहर करने का बिचार उन्हें काटे खाता था। अवध के लोग जो वीर और बुद्धिमान रामचन्द्र को जी से चाहते थे बहुत बिगड़े। कौशल्या ने राम को समझाया कि तुम बन को न जाओ पर राम ने एक न सुनी और कहा कि पहिले तो पिता कैकेयी को बचन दे चुके हैं दूसरे यह कि बेटे का धर्म है कि पिता की आज्ञा पालन करे। राम चाहते थे कि अकेले

ही बन को चले जायं पर सीता ने कहा कि मैं यहां तुम्हारे बिना रहना नहीं चाहती, स्त्री का धर्म यह है कि जहां पति रहे वहीं उसकी सेवा में रहे चाहे घर में हो चाहे बनवास में हो। लक्ष्मण भी भाई का साथ छोड़ना नहीं चाहते थे और उनके साथ बन को चले।

७—राम सीता और लक्ष्मण यमुना से दक्षिण के बनों में चले गये और चलते चलते विन्ध्याचल के दक्षिण मध्य भारत के प्रसिद्ध दंडक बन में जा पहुंचे। इनके घर छोड़ने के थोड़े ही दिन पीछे राजा दशरथ परलोक सिधारे। कैकेयी ने बिचारा कि मेरा बेटा भरत राज करेगा। परन्तु भरत सत्यव्रत और सत्यप्रिय थे और राम से बड़ा सनेह रखते थे; पिता के देहान्त के पीछे राम की खोज में चले और उनसे बड़ी बिनती की कि आप घर लौट चलें और अवध में राज करें परन्तु राम ने उनकी बात न मानी और कहने लगे कि पिताने मुझे चौदह बरस के बनवास की आज्ञा दी है और मैंने उनकी आज्ञा मान ली है। राजकुमार अपने बचन से नहीं फिरा करते हैं। जब तक चौदह बरस न बीत जायं तब तक मैं अवध में पर नहीं रख सकता। भरत को उलटे पैर लौट आना पड़ा। उन्हों ने राज पाट को अपना नहीं जाना और रामचन्द्र जी की खड़ाऊं गद्दी पर रख दी। इस का अभिप्राय यह था कि राज के असली मालिक रामचन्द्र जी हैं और उनके लौट आने तक उनकी जगह राज का काम काज और प्रजा का पालन करता रहूंगा।

८—कई बरस तक रामचन्द्र जी बनों में फिरते रहे। राम और लक्ष्मण प्रति दिन आखेट को जाया करते थे। एक दिन उनके पीछे एक बड़ा बली राजा रावण जो दक्षिणीय भारत के कुछ भाग पर राज करता था सीता जी की सुन्दरता का बखान सुनकर अकेले में



श्रीराम, सीता और लक्ष्मण गङ्गा उतर रहे हैं

कुटी में आया और उन को उठा कर लंका में जिसको अब सीलोन कहते हैं, अपने घर ले गया। वहां फुसला कर और धमका कर रावण ने चाहा कि सीता को अपनी रानी बनावे पर उस पति-व्रताने उसकी ओर आंख उठा कर भी न देखा। रावण ने उन को एक घने बाग में अलग बन्द कर दिया और सिपाहियों का पहरा बैठा दिया।

९—राम लक्ष्मण ने पश्चिमीय घाट के प्रतापी राजा सुग्रीव से मित्रता करली। सुग्रीव ने बहुत बड़ी सेना देकर अपने सेनापति हनुमान को राम की सहायता के लिये भेजा। हनुमान की सहायता से राम लक्ष्मण लङ्का पहुंचे, रावण को मारा और सीता जी को छुड़ा कर कुशल पूर्वक ले आये।

१०—इसी समय बनवास की अवधि भी पूरी हुई। राम लक्ष्मण सीता जी समेत अवध में आये। बहुत दिनों तक रामचन्द्र जी ने राज किया। प्राचीन समय के राजाओं में यह राजा बड़े प्रसिद्ध हुए हैं। इन्हें हिन्दू परमेश्वर का अवतार मानकर पूजते हैं। सीता जी से इन के दो पुत्र थे कुश और लव। राजपूतों के दो बड़े परिवार जिनका वर्णन आगे किया जायगा अपने को लव और कुश की सन्तान बताते हैं।

७—महाभारत का समय।

१—जब आर्यों को पंजाब में अपना अधिकार जमाये और ब्रह्मावर्त ऐसे रमणीय स्थान में रहते बहुत दिन बीत गये तब उन्होंने जाना कि उन से पूर्व का देश जिस में गंगा और यमुना बहती हैं इससे भी बढ़कर रमणीय और उपजाऊ है। अब वह गिनती में इतने बढ़ गये थे कि सिन्धु की घाटी में उनका निर्वाह कठिन

था इस के सिवाय नये आर्यों के झुंड के झुंड अफगानिस्तान और कश्मीर से चले आते थे जो पहिले आये हुए आर्यों को आगे ठेलते जाते थे। आर्य लोग पंजाब के दक्षिण तो जा नहीं सकते थे क्योंकि उस दिशा में चार सौ मील तक रेत ही रेत था जो आंधियों में एक स्थान से दूसरे स्थान तक उड़ता फिरता था। इस लिये उनमें से बहुत से यमुना नदी पार करके गंगा की ओर चल पड़े।

२—परन्तु यह देश भी बस्तियों से भरा था। यहां भी द्रविड़ कोल जाति के लोग रहते थे और कुछ मिली जुली जातियां भी थीं जो द्रविड़ और कोल के मिलने से उत्पन्न हुई थीं। यह लोग गिनती में आर्यों से कम से कम बीस गुने अधिक रहे होंगे परन्तु बहुत दिन तक भारतवर्ष के गरम मैदानों में रहते रहते न तो आर्य जाति के मनुष्यों की भांति लम्बे चौड़े ही थे, न वैसे बलवान ही थे और न उन के समान बुद्धिमान और चतुर थे। बहुत दिनों तक आर्य इन को नीच समझते रहे और इन का निरादर करते थे। इसलिये उनको दास कहा गया है। दूसरे पुराने निवासियों को आर्य अपने ग्रन्थों में असुर दानव और दैत्य कहकर सम्बोधन करते हैं। इनके विषय में कहा गया है कि इनका रंग काला और इनका रूप भोंड़ा था। यह कच्चा मांस खाते थे। इनकी नाक चिपटी थी और इनका कोई धर्म्म न था। इस बात का ध्यान रहे कि यह उनका बखान उनके बैरियों का किया हुआ है। इतना निश्चय होचुका है कि इनमें से बहुतेरे सभ्य थे और उनके बड़ बड़ नगर बसे थे; और और देशों से वणिजव्यापार करते थे। उस समय के लिखे द्रविड़ ग्रन्थों का यदि पता लगता तो अवश्य उनमें आर्यों के विषय में भी वही बातें होती जो आर्यों ने अपने शत्रुओं के विषय में अपने ग्रन्थों में लिखी हैं। पहिले तो आर्य इनसे लड़ते रहे; अन्तको उनसे मित्रता करली और उन्हीं में मिल गये। इस

भांति नये नये कुल बने जैसे कि पश्चिम की आर्यों में यूरोप जाने से बने थे।

३—इस तरह बहुत से आय गंगा की उपजाऊ तरैटियों में जाकर बसे। यहां आने के पीछे भी वह लोग नये नये मन्त्र बनाते गये। और इसी से उन्हों ने इस भूमि का नाम ब्रह्मर्षि देश रक्खा।

४—जान पड़ता है कि इन्हों ने पहिले पहिल यमुना के ऊपरी भाग को पार करके गंगा के ऊपर के भाग में तीन सौ मील तक जीत लिया और यमुना के तीर एक नगर बसाया जिसका नाम अपने बड़े देवता के नाम पर इन्द्रप्रस्थ रक्खा। यह नगर पीछे उत्तरीय हिन्दुस्थान की राजधानी हो गया और दिल्ली के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस से साठ मील की दूरी पर गंगा के ऊपरी भाग में एक और नगर बसाया गया जिसका नाम हस्तिनापुर रक्खा गया। यहां से चल कर बहुतेरे दक्षिण की ओर चल पड़े और प्रायः डेढ़ सौ मील की दूरी पर दो और नगर बसाये। एक आगरा यमुना के तट पर और दूसरा कन्नौज़ जिसको वह काम्पिल्य भी कहते थे। गंगा के तट पर इस के आगे जाकर कुछ आगे आर्य लोग उस स्थान पर पहुंचे जहां गंगा और यमुना मिलती हैं। यहां पांचवां नगर बसाया उस का नाम प्रयाग था। अब इस को इलाहाबाद कहते हैं।

५—कुछ लोगों का बिचार है कि आर्यों को इस भूमि के विजय करने में प्रायः तीन सौ बरस लगे हुए होंगे। उस समय भी वेद के देवताओं की पूजा होती थी परन्तु आर्यों के आचार व्यवहार में धीरे धीरे अन्तर पड़ता गया। इस तीन सौ बरस के समय को महाभारत का समय कह सकते हैं क्योंकि संस्कृत की बड़ी पोथी महाभारत में जिस लड़ाई का वृतान्त है वह इसी समय में हुई थी।

६—आर्यों की बहुत से प्राचीन जातियों और परिवारों के नाम तक मिट गये हैं। यह लोग भारतवर्ष के पुराने निवासियों से लड़े और इन के आपस में भी लड़ाइयां हुईं। महाभारत में उन दो जातियों के नाम दिये हैं जिन में महायुद्ध हुआ था। महाभारत शब्द से महायुद्ध समझना चाहिये जोकि राजा की सन्तान में हुआ था। इस युद्ध का ठीक समय ऊपर कह दिया गया परन्तु महाभारत ग्रन्थ इस से बहुत पीछे रचा गया। इस लड़ाई की कहानियां पहिले योहीं कही जाती थीं। कवि और भाट राजाओं महाराजाओं की सभा में यह कहानियां सुनाया करते थे। बढ़ते बढ़ते यह कहानी बहुत बढ़ गई। समय समय पर इस में बहुत से दृष्टान्त जुड़ते गये। पीछे उस समय में जिसे हम ब्राह्मणों का समय कहते हैं व्यास जीने उन कहानियों को इकट्ठा करके उनका क्रम निश्चित किया और पद्य में रच डाला। यही काव्य अब महाभारत के नाम से प्रसिद्ध है। महाभारत में आर्यों के जिन आचार व्यवहार का वर्णन है उनके विषय में यह कहना कठिन है कि वह महाभारत के समय का ठीक पता देते हैं या नहीं। यह भी निश्चय नहीं हुआ कि इस कहानी में कहां उस ब्राह्मण समय से जोड़ मिलाया गया है जो इस के पीछे आया था और जिसमे आर्यों की बोल चाल और आचार व्यवहार में बहुत कुछ भेद हो गया था।

८—कौरवों और पांडवों की लड़ाई।

१—प्राचीन काल में आर्यों के दो बड़े कुल थे, जिन के नाम आज तक चले आये हैं, पहिला भरत या कुरुवंश जो गंगा नदी की ऊपरी तरेटी में रहता था और जिसकी राजधानी हस्तिनापुर

थी ; दूसरा पाञ्चाल वंश जो कुछ नीचे उतर कर गंगा के किनारे रहता था। इसकी राजधानी कामपिल्य अथवा कन्नौज़ थी।

२—भरतवंश के राजा धृतराष्ट्र जन्म के अंधे थे। उन्हों ने अपने छोटे भाई पांडु को राज दे दिया था। इन के सौ बेटे थे जिन में दुर्योधन सब से बड़ा था। यह लड़के अपने पुरखा कुरु के नाम से कौरव कहलाते थे। पांडु के भी पांच बेटे थे और पांडव कहलाते थे। इन में से बड़े और प्रसिद्ध युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन थे।

३—सब ने राज-मन्दिर में साथ ही साथ विद्या पढ़ी और गुण सीखे ; पर सदा आपस में लड़ते झगड़ते रहते थे। बात यह थी कि कौरव चाहते थे कि पांडु के पीछे हम राज पावें और पांडव चाहते थे कि हम राज करें। जब पांडु के मरने का समय आ पहुंचा धृतराष्ट्र अपने सौ पुत्रों की सहायता से हस्तिनापुर की गद्दी पर बठ गया। पांडव दुखी होकर बहुत दिनों तक इधर उधर फिरते रहे कि कोई अच्छी जगह मिल जाय जिसमें वह बस जायं।

४—इस समय के पाञ्चाल के राजा का नाम द्रुपद था। उसकी बेटी द्रौपदी बड़ी रूपवती थी। उन दिनों यह रवाज था कि एक नियत दिन पर कन्या अपना बर आप चुन लेती थी। राजा द्रुपद ने भी एक ऐसा ही दिन ठीक किया कि द्रौपदी अपना बर चुन ले। जब सब राजकुमार सभा में आकर बैठ गये तो द्रौपदी की ओर से यह कहा गया कि जो कोई मेरे पिता के धनुष से निशाने पर तीर मार देगा वही मेरा पति होगा। बहुत से राजकुमारों ने अपने बल की परीक्षा ली पर सुफल-मनोरथ न हुए। कौरवों का भी यही हाल हुआ। पर अर्जुन जो अपने भाइयों के साथ वहीं उपस्थित था आगे बढ़ा और कमान पर तीर

चढ़ा कर जो छोड़ा तो सीधा निशाने पर बठा और उसी समय द्रौपदी का ब्याह हो गया।

५—जब कौरवों ने देखा कि अब पांडवों का सहायक उनका ससुर पाञ्चाल का राजा है तो उन्हों ने हस्तिनापुर का आधा राज बांट कर पांडवों को दे दिया। पांडवों ने वह पश्चिमीय भाग जिसमें यमुनाजी बहती हैं ले लिया और उसमें इन्द्रप्रस्थ को नेव डाली। जो घने बन और जङ्गल उस प्रान्त में थे वह कुछ तो काट डाले और कुछ जला दिये और उन असभ्य जातियों को जो यहां पर बसी हुई थीं निकाल कर अपना राज स्थिर कर लिया।

६—इसपर भी कौरवों से चुपचाप न बैठा गया। उन्हों ने पांडवों को बुलाकर उनके साथ पासों का खेल खेला और चालाकी से उनका राज पाट ही नहीं बरन उनको स्त्री भी जीत ली। इन बेचारों को हस्तिनापुर छोड़ना और फिर १२ बरस तक बनवास भोगना पड़ा। तेरह बरस के पीछे उन्हों ने चाहा कि हमारा राज हमको मिल जाय। पर कौरव कब मानते थे, उन्हों ने न दिया।

७—निदान कौरवों पांडवों में बड़ा भारी युद्ध हुआ। दोनों के साथ बहुत से राजा उनके सहायक थे। श्रीकृष्ण जी पांडवों के साथ थे। यह द्वारका के राजा थे जिसे अब गुजरात कहते हैं और बड़े भारी योद्धा थे। अब हिन्दू इनको अवतार मानते हैं। दिल्ली से उत्तर-पश्चिम की दिशा में कुरुक्षेत्र के मैदान में जहां अब पानीपत बसा हुआ है अठारह दिन तक घमसान की लड़ाई हुई। कौरव हार गये और एक एक करके मारे गये और पांडव हस्तिनापुर के राज के मालिक हुए।

६—हिन्दुओं का पुरातत्व ।

(ईसा से पहिले १००० बरस से २०० बरस तक ।)

(१) जाति की उत्पत्ति ।

१—ईसा से पहिले एक हज़ार बरस से दो सौ बरस तक के समय को हिन्दुओं का प्राचीन काल कह सकते हैं। आर्य जाति के द्रविड़, कोल, तूरानी और प्राचीन भारतवासियों के साथ मिल जुल जाने से बहुत सी जातियां बन गई थीं। जातिभेद भी लोग मानने लगे थे। ब्राह्मण पुजारी और पुरोहित का काम करते थे, वेद के प्राचीन देवता और आर्य जाति के सीधे सादे धर्म को लोग भूल चुके थे। वेदों की भाषा भी अब नहीं बोली जाती थी। इसकी जगह ब्राह्मणों के लिखने की भाषा संस्कृत हो गई थी। साधारण पुरुषों की बोली तरह तरह की प्राकृत थी जिससे आजकल की प्रचलित भाषायें निकली हैं।

२—प्राचीन काल में आर्यों के घरों पर कोई बड़ा बूढ़ा या घर का मालिक अपने कुल की ओर से अग्नि और इन्द्र देवताओं की पूजा किया करता था, और उसके बेटे पोते खेत जोतते थे या कपड़ा बुनते थे। छोटे बालक गाय बैल चराते थे, औरतें दूध दुहती थीं, चरखा कातती थीं या घर के और धंधे करती थीं। लड़ाई के समय मर्द तलवार और तीर कमान लेकर शत्रु से लड़ने जाते थे। इस जाति का सब से बहादुर और समझदार मनुष्य सर्दार या सेनाध्यक्ष बनता था। सर्दार देवताओं से प्रार्थना करता था कि लड़ाई के समय वह उसको सहायता करें, और लड़ाई के अन्त में उनको धन्यवाद देता था।

३—जब आर्यों ने उत्तरीय भारत पर आक्रमण करना आरम्भ किया तो नित्य का लड़ाई झगड़ा रहने लगा। परिवारों के बड़े बूढ़ों को और जाति के सर्दारों को इतना अवकाश न मिलता था कि वह वेदों के मन्त्र या देवताओं की वन्दना को याद करते। इस कारण हर जाति में कुछ ऐसे मनुष्य नियत किये गये जिनका पूजा पाठ करना करानाही कर्तव्य कर्म था। इसको छोड़ वह और कोई काम नहीं करते थे। कुछ दिन बीतने पर जाति के लोग उनको बड़े धर्मात्मा और साधू समझने लगे। इन लोगों की एक नई जाति बन गई और वह ब्राह्मण कहलाने लगी।

४—इस समय सर्दारों या उनके सिपाहियों को खेतीबाड़ी या और किसी काम के करने का भी अवकाश न मिलता था। इस कारण जाति के बहुत से बहादुर पुरुष युद्ध के निमित्त नियत किये गये। जाति का सर्दार उनका अध्यक्ष होता था और राजा कहलाता था। होते होते यह भी एक अलग जाति हो गई जो क्षत्रिय कहलाने लगी। बहुत दिनों तक ब्राह्मण और क्षत्रिय बराबर दरजे पर रहे। पीछे ब्राह्मण क्षत्रियों से श्रेष्ठ समझे जाने लगे।

५—बचे बचाये मनुष्य जो खेतीबारी करते थे या कपड़ा बुनते थे अथवा और कोई कार्य करते थे वैश्य कहलाये। यह भारतीय आर्यों की तीसरी जाति थी।

६—चौथी जाति सब से बड़ी थी—यह शूद्र कहलाती थी। इसमें उन पहिले आर्यों की सन्तान मिली जुली थी जिन्हों ने प्राचीन भारतवासियों की स्त्रियों से व्याह कर लिया था और उन जातियों के वह मिले हुए लोग भी थे जो आर्यों के साथ रहते रहते उन्हीं के सदृश हो गये थे।

७—जो असभ्य जातियां आर्यों के साथ न मिलीं और जिनको आर्यों ने जीत लिया वह दास की दशा पर आ गईं और सब से

नीची जाति समझी जाने लगीं। यह लोग चाण्डाल कहलाते थे। इनको बस्तियों के अन्दर रहने की आज्ञा नहीं थी, इस कारण गांव के बाहर झोपड़ियां डालकर रहते थे।

८—इस भांति बहुत समय बीत जाने पर वह जाति बनी जिसको हिन्दू कहते हैं। इसको इस ढंग में आये हुए कम से कम तीन हज़ार बरस हो गये। हिन्दुओं के बहुत से परिवार थे। पृथक पृथक परिवारों के पृथक पृथक राजा ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और चाण्डाल होते थे। बड़े बड़े नगर बस गये, मन्दिर बन गये, नये नये देवताओं की पूजा होने लगी। इन पुराने नगरों में एक काशी था। जो लोग एक उद्यम करते थे उनकी एक जाति बन गई। होते होते सैकड़ों जातियां हो गईं जो अब तक विद्यमान हैं। एक जाति दूसरी जाति का उद्यम नहीं कर सकती। एक जाति के लोग न दूसरी जातिवालों के साथ खाना खा सकते हैं न शादीब्याह करते हैं। जातिभेद का विचार भारतही के रहनेवालों में पाया जाता है और कहीं नहीं है।

९—हिन्दू धर्म भी धीरे.धीरे रूप बदलता जाता था। आर्यों के प्राचीन देवता अग्नि और इन्द्र को लोग भूल चुके थे, ऐसा कोई बिरला था जो इनकी पूजता हो। आर्यों और पुराने भारतवासियों के धर्मों के मेल से जो नया धर्म बना वही अब हिन्दुओं का धर्म था। इस धर्म के बड़े देवता ब्रह्मा, विष्णु और शिव माने जाने लगे। इनके सिवाय और भी देवता थे। इसी प्रकार आर्यों की वैदिक भाषा और प्राचीन भारतवासियों की भाषा के मेल से पण्डितों की लिखने की संस्कृत और साधारण मनुष्यों के बोल चाल की वह भाषा बनी जिसको प्राकृत कहते हैं और जिस से आजकल की हिन्दी, बङ्गाली और प्रचलित भाषायें निकली हैं।

१०—हम कह नहीं सकते कि जातियों के अलग होने में कितना समय बीता। केवल इतना जानते हैं कि मनु जी के समय से पहिले यह रीति भलीभांति प्रचलित हो चुकी थी। मनु जी ने आचार व्यवहार (धर्म्मशास्त्र) का संग्रह इस समय के अन्त में किया था। यह संग्रह ईसा के जन्म से लगभग ५०० बरस पहिले हुआ था। इस धर्म्मशास्त्र में जातियों का बिस्तारपूर्वक बर्णन है। मनु जी ने हिन्दुओं के चार बर्ण लिखे हैं—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र; पर यह भी कहते हैं कि जो शूद्र जातियां बर्णों के संकर (गड़बड़) होने से बनी थीं उनकी संख्या बहुत थी।

यह ८०० बरस का समय ईसा के जन्म से १००० बरस पहिले से २०० बरस पहिले तक ब्राह्मणों का समय कहा जा सकता है क्योंकि इसमें ब्राह्मणों का अधिकार बहुत था।

(२) प्राचीन हिन्दू राज।

(ईसा से पहिले १००० बरस से २०० बरस तक।)

१—प्राचीन आर्य सर्दार अपने अपने परिवारों को संग लिये हुए उत्तरीय भारत की बड़ी बड़ी नदियों के बराबर बराबर बढ़े और उनकी उपजाऊ तरैटियों पर अपना अधिकार जमा लिया। वेदों के समय में वह सिन्धु नदी की तरैटी में रहे। उसके पीछे गंगा और यमुना की उत्तरीय तरैटियों में पांच बड़े बड़े नगर और राज्य स्थापित किये, फिर उन नदियों के बराबर बराबर चले जो उत्तर की दिशा में हिमालय से और दक्षिण में विन्ध्याचल से निकल कर गंगा जी में मिली हैं और अन्त में महानदी, गोदावरी और दूसरी दखिन की नदियों के किनारे किनारे बस गये।

२—प्राचीन काल में हिन्दुओं के बहुत बड़े बड़े राज थे। प्रायः

हर एक स्थान में क्षत्रियों का राज था पर कहीं कहीं शूद्र भी राज करते थे। कितने ही स्थान पर सैकड़ों बरस तक एक ही परिवार के राजा क्रम से राज करते रहे। इनमें आपुस में भी लड़ाई होती रहती थी। जो अधिक शक्तिमान होता था वह शक्तिहीन को दबा लेता था। हर एक राजा का दर्बार था। हर दर्बार के अमीर, सिपाही, कवि और पुरोहित अलग अलग थे। इनमें से बहुत सी रियासतों के नाम भी किसी को याद नहीं है। जिन जिन का हमको ज्ञान है उनका नीचे वर्णन किया जायगा।

३—इस समय सब से बड़ी शक्तिमान रियासत दक्षिण बिहार में मगध की थी। इसके उत्तर में गंगा जी के पार विदेह की रियासत थी। मगध पर कई शताब्दियों तक बहुत से राजवंश क्रम से राज करते रहे। कहा जाता है कि धीरे धीरे गंगा जी की तरेटी की रियासतें मगधराज्य के आधीन हो गईं।

४—आजकल जिसको बङ्गाला कहते हैं उस समय उसका पूर्वीय भाग बङ्ग कहलाता था और पश्चिमीय अङ्ग के नाम से प्रसिद्ध था। उड़ीसा एक तीसरी रियासत में मिला हुआ था जिसे कलिङ्ग कहते थे। मालवे का सुन्दर पहाड़ी प्रान्त जिसमें कि चम्बल नदी बहती है अवन्ति कहलाता था। अवन्ति के दक्खिन में सौराष्ट्र या सोरठ का देश था जिसे अब गुजरात बोलते हैं। दखिन में गोदावरी के तीर अंध्र का राज्य स्थापित था।

५—इस समय उत्तरीय भारत का धर्म, वहां के शास्त्र और रस्म रिवाज दक्खिन और मध्य भारत में भी फैल गये थे। ब्राह्मण देश देश में फिरते थे; जहां जाते थे वहीं उनका धर्म, उनका शास्त्र और उनकी बोली भी उनके साथ जाती थी। दखिन की द्रविड़ जातियां भी ब्राह्मणों के बहुत से देवताओं को पूजने लगीं और उनकी भाषा में भी संस्कृत के बहुत से शब्द मिल गये। उत्तरीय

भारत के ब्राह्मणों और आर्यों ने अपनी विद्वता, योग्यता और सभ्यता के प्रभाव से दक्खिन के लोगों को अपने आधीन कर लिया। इस समय में दक्खिनी द्रविड़ों ने भी बड़े बड़े नगर बसाये और मन्दिर बनाये। इनको भी रियासतें थीं। विद्या और कला को भी बहुत सी बातें उन्हों ने जान ली थीं पर उत्तरीय भारत के ब्राह्मण उनसे अधिक विद्वान थे। ब्राह्मणों ने उनके धर्म और उनकी भाषाओं पर अपना सिक्का बिठाकर यह प्रामाणित कर दिया कि हम तुमसे बढ़कर हैं। इस से यह न समझना चाहिये कि द्रविड़ों ने अपना धर्म और अपने देवता सब बदल डाले। जिस तरह उत्तरीय भारत के हिन्दुओं का धर्म कुछ आर्य कुछ द्रविड़ कुछ कोल और तूरानियों के धर्म से मिल जुल कर बना था उसी तरह दक्खिनी हिन्दुओं का धर्म द्रविड़, कोल और आर्यों के धर्म से मिल जुल कर उत्पन्न हुआ। इसमें पेड़ पल्लव और नागों की पूजा का अंश द्रविड़ों के धर्म से लिया गया है।

६—जो हाल कि द्रविड़ देश के विषय में लिखा गया है वही मध्य भारत के विषय में भी कहा जा सकता है। उत्तरी भारत के ब्राह्मण और व्यापारी कुल दक्खिन में फैल गये। व्यापारी तरह तरह का माल अपने साथ ले जाते थे तो ब्राह्मण अपना धर्म, अपनी भाषा, अपने आचार और व्यवहार का प्रचार करते थे। इसी तरह धीरे धीरे सारा भारतवर्ष हिन्दू हो गया। यद्यपि हर जाति की पृथक भाषा थी फिर भी उसमें संस्कृत के बहुत से शब्दों ने भर कर लिया था। हर एक धर्म के पृथक देवता थे पर बहुत से देवता उत्तरीय भारत के पूजे जाने लगे। यद्यपि देश देश के ब्राह्मण अपने अपने यहां की भाषा बोलते थे पर वह संस्कृत के लिखने पढ़ने का अभ्यास रखते थे और उनके सब शास्त्र संस्कृत ही भाषा में थे।

७—दक्खिन की सब से प्राचीन और शक्तिमान् चार रियासतें थीं। पहिली पाण्ड्य, टामिल देश के धुर दक्षिण में थी ; इसकी राजधानी मदुरा थी। दूसरी चोल, टामिल देश में पाण्ड्य की उत्तर दिशा में ; इसकी राजधानी काञ्ची (कांजीवरम) थी। तीसरी चेर कर्नाटक देश में जो आज कल मैसूर के नाम से प्रसिद्ध है। चौथी केरल जो पश्चिमीय घाट और समुद्र के बीच में थी। इसको अब मलयवार और त्रावंकोड़ कहते हैं। इनमें नित्य लड़ाई झगड़े रहते थे ; विशेष करके पाण्ड्य और चोल की रियासतों में। कुछ विद्वानों का विचार है कि उत्तरीय भारत के क्षत्रियों ने इन रियासतों की नेव डाली थी ; कुछ का कथन है कि पहिले ही से यहां द्रविड़ राजा राज करते थे। कहते हैं कि अगस्त्य मुनि द्रविड़ देश में आये थे और पाण्ड्य की राजधानी में बहुत दिनों तक एक राजा के पाहुने रहे और उन्हों ने इस देश के निवासियों को अपना धर्म सिखाया। पश्चिमीय घाट की सब से ऊंची चोटी उनके नाम पर आज तक अगस्त्यमलय कहलाती है।

(२) प्राचीन हिन्दू समय की विद्या और कला।

(ईसा से पहिले १००० बरस से २०० बरस तक।)

१—जब आर्य भारतवर्ष की हरी भरी और उपजाऊ तरैटियों में बस गये तो ब्राह्मणों को जिनकी एक पृथक जाति बन गई थी पढ़ने लिखने के हेतु बड़ा समय मिलता था। अब वह न तो लड़ाई में जाते थे और न खेतीबारी करते थे। जिस किसी वस्तु की उन्हें आवश्यकता पड़ती थी वह और जातियों के लोग उन्हें पहुंचा देते थे। पूजा के पीछे सारा दिन अपना था। इनको वेद कंठ करना पड़ता था और इसमें निःसन्देह बड़ा समय व्यतीत

होता था फिर भी इतना अवकाश मिलता था कि वह कविता करें शास्त्र बनायें अथवा विद्या और कला सीखें।

२—इस पुस्तक में इस बात का वर्णन पहिले हो चुका है कि रामायण और महाभारत काव्य इसी समय में लिखे गये और इन दोनों में बहुत से ऐसे क़िस्से कहानियां हैं जो वाल्मीकि और व्यास जी से बहुत पहिले राजाओं महाराजाओं के दर्बार में भाट और कवि गाया और सुनाया करते थे। इनमें बहुत सी प्राचीन आर्यराजाओं की कीर्त्तियां वर्णित हैं और उनकी वीरताओं के साथ ही साथ बहुत से देवी देवताओं की अख्यायिकायें भी हैं।

३—ब्राह्मणों ने संस्कृत बड़े ध्यान से पढ़ी थी और उसके व्याकरण को बहुत ऊंचे पद पर पहुंचा दिया था। व्याकरण पर उन्हों ने बड़ी बड़ी पुस्तकें लिख डालीं। उस समय का सब से प्रसिद्ध वैयाकरण पाणिनि हुआ है। संस्कृत व्याकरण का ग्रन्थ जो इसने लिखा है वह अपने ढंग का अद्वितीय है। ऐसी और कोई पुस्तक सारे संसार में कदाचित न निकलेगी।

४—उस समय के हिन्दुओं ने जब रात को आकाश का अवलोकन किया और चन्द्रमा की चाल पर ध्यान दिया तो ज्यौतिषशास्त्र की नीव डाल दी और उन २७ नक्षत्रों के नाम रक्खे जिनमें चन्द्रमा क्रम से प्रवेश करता है। उन्हों ने उन १२ राशियों को भी पहिचाना जिनमें पूर्णिमा के दिन चन्द्रमा रहता है और उनके नाम रक्खे।

५—उन्हों ने गिनती की रीति निकाली और अङ्कगणित के सूत्र बनाये। दहाई पर गिन्ती की रीति निकालना इन्हीं आर्यों की बुद्धि का चमत्कार है। पश्चिमीय जातियों ने भी यह गुर इन्हीं से सीखा है। यज्ञ की वेदियों को नाप कर नियमों के अनुसार बनाया करते थे, इस कारण रेखागणित और क्षेत्रमिति की रीतियां

भी भलीभांति जान गये। वर्गक्षेत्र, वृत्तक्षेत्र और त्रिभुजक्षेत्र के करणसूत्र अच्छी तरह मालूम हो चुके थे।

६—इस प्राचीन काल के हिन्दुओं ने जीवनरहस्य और उसका मूलतत्व, संसार की अस्थिरता, परमेश्वर, मनुष्य, आत्मा, भूत वा भविष्य हर विषय पर बरसों तक बड़ा ध्यान दिया ; जिसका इनको ज्ञान हुआ और जो कुछ इनकी समझ में आया सब लिखते गये। इस छान बीन का परिणाम यह हुआ कि छ प्रधान मत बन गये जिसको दर्शन कहते हैं।

७—सांख्य दर्शन कपिल मुनि का रचा हुआ है। इनका यह बचन है कि हम उसी बस्तु का बिश्वास कर सकते हैं जिसका कि हमको इन्द्रियों से ज्ञान हो सकता है या जिसे हम अनुमान कर सकते हैं या जो कोई प्रामाणिक बचन हो। यह कहते हैं कि ईश्वर प्रमाणों से सिद्ध नहीं हो सकता। इनकी शिक्षा यह थी कि पृथ्वी अपने आपही प्रकृति से बनी है। प्रकृति सदा से संसार में उपस्थित है और उपस्थित रहेगी। प्रकृति अपने स्वाभाविक गुणों के अनुसार अदलती बदलती रहती है और भांति भांति के रूप धारण करती है। संसार की सारी बस्तु और दशायें इसी प्रकृति के पलटते रहने, बढ़ने और घटने से उत्पन्न होती है। यह प्रकृति के साथ पुरुष (आत्मा) को भी अनादि और अविनाशी मानते हैं। इनका कथन है कि प्रकृति और पुरुष का न तो आदि है न अन्त ; यह हर काल में थे और सदा रहेंगे। मनुष्य की आत्मा कुछ काल तक एक शरीर में रहती है और अपने कर्मों के अनुसार ऊंची नीची योनि में जाती है। पुरुष प्रकृति से भिन्न है पर उसे अपना समझता है। जब मनुष्य को भेद का पूरा पूरा ज्ञान हो जाता है तो आवागमन से छूट जाता है और मोक्ष को प्राप्त कर लेता है।

८—दूसरा दर्शन योग है। यह पातञ्जलि ऋषि का बनाया हुआ है, जो ईसा से प्राय: २०० बरस पहिले हुए थे। इनका मत वही है जो कपिल का है पर यह ईश्वर को मानते हैं। मनुष्य की आत्मा के मोक्ष होने का एक उपाय यह भी है कि मनुष्य परमात्मा का ध्यान करे और प्रकृति के बन्धन से छूट कर उसमें लीन हो जाय।

९—तीसरा दर्शन गौतम ऋषि का चलाया हुआ न्याय है। न्याय में प्रमाणों से किसी वाक्य का झूठ सच जांचना सिखाया जाता है। गौतम की शिक्षा यह है कि आत्मा को छोड़ सारी वस्तुओं को परमेश्वर ने बनाया है। आत्मा अनन्त और अविनाशी है। आत्मा जब पूरा पूरा ज्ञान प्राप्त कर लेता है तो शरीर के बन्धन से छूट जाता है।

१०—चौथा दर्शन वैशेषिक कहलाता है इसके रचयिता कणाद ऋषि हैं। कणाद का कथन है कि पृथ्वी उन छोटे छोटे कणों से बनी है जिनमें किसी प्रकार का रूपान्तर नहीं हो सकता और जो नित्य हैं पृथ्वी और उसपर की सारी वस्तु कितनी ही क्यों न बदलती रहें। आत्मा के विषय में उनकी शिक्षा वही है जो गौतम की है।

११—शेष दोनों दर्शन मीमांसा कहलाते हैं। इनमें से पहिले का नाम पूर्व मीमांसा है। इसको जैमिनि ऋषि ने रचा था। इसका अभिप्राय यह है कि लोग जो अपना धर्म्म कर्म्म भूल गये हैं उनको सावधान करे और सच्चा धर्म्म सिखाये। मनुष्य का धर्म्म यह है कि वेद की शिक्षा के अनुसार चले और उसी की दी हुई रीतियों के अनुसार पूजा करे। मन्त्र पढ़े और यज्ञ और हवन करे। जैमिनि परमेश्वर के विषय में कुछ नहीं कहते।

दूसरे को उत्तर मीमांसा अथवा बादरायण व्यास का वेदान्त

कहते हैं। यह वह व्यास जी नहीं हैं जिन्हों ने महाभारत की रचना की थी। यह अपनी शिक्षा को उपनिषदों के अनुसार बताते हैं और इनका कथन है कि मनुष्य को चाहिये कि परमेश्वर की आराधना करे। आत्मा, सत और समस्त सृष्टि का जन्म उसी से हुआ है, और अन्त में सब उसी से मिल जायगा। फिर वही वह रह जायगा और कुछ न रहेगा। बादरायण का कथन है कि मनुष्य की आत्मा परमेश्वर ही का एक अंश है जिस तरह चिनगारी अग्नि का अंश है। अर्थात् एक शरीर से दूसरे शरीर में प्रवेश करती है। इसको अद्वैत वेदान्त कहते हैं। कारण यह कि वह जगत को ईश्वर से भिन्न नहीं समझता और ऐक्यता की शिक्षा देता है। दोनों परमेश्वर के स्वरूप हैं। यथार्थ में एक ही हैं भेद कुछ भी नहीं है। जो कुछ है सो एक वही परमात्मा है।

१२—ब्राह्मण सारी जातियों के गुरु और राह बतानेवाले थे। इस कारण उन्हों ने सब जातियों के कर्तव्य निश्चित किये और उनके लिये नियम बना दिये। पहिले यज्ञ और हवन की रीतियां बनाईं और और उनके हर भाग के विषय में पृथक पृथक नियम बतलाये। फिर ब्रह्मभोज और जेवनार के क़ायदे स्थिर किये। गृहस्थ के धर्म और उसके निबाहने की रीतियां बड़ी सुगमता के साथ वर्णन कीं। यह सब बातें श्लोकों में लिखी हैं जो कंठ किये जाते हैं। मनु जी के धर्मशास्त्र में आचार व्यवहार के नियम हैं। मनु यह बताते हैं कि शासन कैसे होता है और अपराधियों को किस प्रकार दंड देना चाहिये। जान पड़ता है कि मनु स्मृति पहिले सूत्रों में रची गई थी; श्लोक बहुत पीछे बने हैं।

१०—महात्मा बुद्ध।

(ईसा से पहिले ५५७ बरस से ४७७ बरस तक।)

१—प्राय: २५०० बरस से अधिक हुए, ब्राह्मणों के समय के पीछे कोशल की शक्तिमान रियासत के कुछ पूर्व शाक्य वंश के क्षत्रिय बसते थे। इनका बहुत छोटा सा कुल था। कपिलवस्तु इनकी राजधानी थी ; शुद्धोदन इनके राजा थे। यह नगर बनारस से सौ मील उत्तर था। शुद्धोदन बड़ा प्रतापी और शक्तिमान राजा था और चाहता था कि मेरे पीछे मेरा बेटा गौतम भी ऐसा ही बीर और प्रतापी हो। उसने उन्हें शस्त्र-विद्या की सब कलायें सिखाईं जैसे भाला और तलवार चलाना, धनुर्विद्या इत्यादि। गौतम जब १८ बरस के हुए तो एक परम रूपवती राजकुमारी से जिसका नाम यशोधरा था, उनका व्याह हो गया। और व्याह के दस साल पीछे उनके एक पुत्र भी हुआ।

२—बचपन ही से गौतम सोच बिचार में रहा करते थे। इनका हृदय बड़ा कोमल था और बहुतही मीठे बचन बोलते थे ; जीव जन्तु पर बड़ी दया करते थे। आखेट को चले हैं, तीर धनुष पर चढ़ा हुआ है, चुटकी दबा ली है, कुछ कुछ धनुष भी खींच लिया है, पर यह देख कर कि भोला भाला हिरन बेखटके नन्हें नन्हें दांतों से महीन महीन दूब चर रहा है, बस कमान वहीं रख दी और सोच में पड़ गये। "हाय, हाय, इस पशु ने मेरा क्या बिगाड़ा है ? इसने किसको सताया है जो मैं इसे मारूं ?" ऐसा सोचकर तीर तरकश में रख लिया और घर लौट आये। घोड़दौड़ हो रही है, घोड़ा वायु की भांति उड़ा जाता है ; सम्भव है कि बाज़ी जीत ले पर संकेत पर पहुंचने से पहिले जो

घोड़े के हांपने और लम्बी लम्बी सांस लेने पर ध्यान जा पड़ा, वहीं रुक गये और लज्जित होकर बोल उठे, "हाय, हाय, क्या बाज़ी के कारण इस निरपराध पशु का सताना ठीक है? बाजी जाय तो जाय पर इस घोड़े को दुख देना ठीक नहीं है।" घोड़दौड़ से अलग हो गये और घोड़े को चमकारते दिलासा देते एक ओर ले गये।

३—एक दिन वसन्त ऋतु में पिता ने कहा, "आओ बाहर चलो, देखो वृक्षों और खेतों पर कैसा जोबन आया हुआ है।" बाप बेटे धीरे धीरे सवार चले जाते थे। वसन्त तो था ही। चारों ओर बाग़ही बाग़ थे। पृथ्वी पर हरी हरी दूब उगी हुई थी। खेतियां लहलहा रही थीं। वृक्ष फलों से लदे हुए थे। गौतम इन्हें देखकर प्रसन्न हुए। पर उन्हों ने देखा कि एक हरवाहा बड़ी क्रूरता से एक बैल को जिसकी पीठ में घाव है मार मार कर हांक रहा है। बेचारा पशु पीड़ा के मारे बैठा जाता है। फिर क्या देखा कि एक बाज़ एक पिड़की का मांस नोच नोच कर खा रहा है। आगे बढ़े तो देखा कि एक पिड़की मक्खियां पकड़ पकड़ निगल रही है। यह सब देख कर उनको बड़ा शोक हुआ और वह घर चले आये।

४—कुछ दिनों के पीछे गौतम ने एक स्वप्न देखा। उन्हें जान पड़ा कि एक महा बूढ़ा जो मारे निर्बलता के चल भी नहीं सकता उनके सामने है और स्वप्न ही में जैसे कोई उनसे कह रहा है, "देखो गौतम तुम भी ऐसे बूढ़े और निर्बल हो जाओगे।" फिर उन्हों ने एक महा रोगी मनुष्य को देखा जो मारे पीड़ा के कांख रहा था और फिर उनसे किसी ने कहा, "गौतम तुम भी एक दिन ऐसे ही रोगग्रसित होगे और तुम्हें भी ऐसी ही पीड़ा होगी।" फिर उन्हें एक जीवरहित मनुष्य जो बिल्कुल ठंडा होकर अकड़

गया था दिखाई दिया और फिर उनसे किसी ने कहा, "देखो गौतम एक दिन तुम्हें भी मरना है।"

५—इसके कुछ दिनों पीछे गौतम ने जिनकी आयु अब ३० बरस की थी अपने पिता और स्त्री पुत्र को छोड़ दिया, अपने राजकीय वस्त्र उतार डाले और सिर मुंडा कर गेरुआ वस्त्र धारण कर लिया और बन को चले गये। वह इसी की खोज करते रहे कि किस उपाय से संसार दुख और पाप से रहित हो सकता है। राजगृह के पास जो मगध की राजधानी थी दो ब्राह्मण तपस्वी रहते थे। गौतम उनके पास भी गये पर वह उनके संसार के दुख दर्द से बचने अथवा मोक्ष का कोई उपाय न बता सके। फिर पटने से दक्षिण गया के आस पास के घने बन में चले गये। वहां छ बरस बराबर तपस्या की, कड़े कड़े व्रत रक्खे और शरीर की ताड़ना की पर इस से भी उनका मनोरथ सिद्ध न हुआ। गया जी का मन्दिर इस बात का स्मारक है कि यहां गौतम ने छ बरस तपस्या की थी।



राजकुमार सिद्धार्थ।

६—अन्त में वह दिन भी आया कि गौतम को शान्ति मिली। एक बड़े वृक्ष के नीचे ध्यान धरे बैठे थे कि अचानक उनके हृदय में एक प्रकाश सा जान पड़ा जिससे उनका हृदय

शान्त हुआ। उन्होंने जान लिया कि व्रत रखने से और शरीर को कष्ट देने से कोई लाभ नहीं है। लोक और परलोक में आनन्द प्राप्त करने का उपाय यही है कि मनुष्य शुद्धता से रहे, सब पर दया करे और किसी को न सताये। गौतम को बिश्वास हो गया कि मोक्ष का सच्चा रास्ता यही है।

७—अब गौतम ने अपना नाम बुद्ध रख लिया। और संसार को सीधी राह बताने और शिक्षा देने के हेतु देश विदेश फिरने लगे। पहिले काशी जी गये; वहां स्त्री पुरुष सब को अपना धर्म सुनाया। तीन ही महीने ठहरे थे कि उनके ६० चेले हो गये। इन सब से उन्हों ने कहा कि जाओ और हर एक दिशा में धर्म का प्रचार करो। फिर राजगृह गये यहां के राजा.प्रजा सब ने उनका धर्म ग्रहण किया। इसके पश्चात कपिलवस्तु गये जहां इनके पिता राज करते थे। घर से बिदा होते समय यह राजकुमार थे। अब जो लौट कर आये तो गेरुआ बस्त्र, हाथ में कमंडल और सिर मुंडा हुआ था। बाप, स्त्री, पुत्र और समस्त शाक्य-वंश ने उनका व्याख्यान सुना और उनके चेले हो गये। इस से ४५ बरस बीतने पर ८० बरस की आयु तक बुद्ध जी एक स्थान से दूसरे स्थान जाकर अपने धर्म का प्रचार करते रहे। इस भांति सारे मगध देश, कोशल अर्थात् बिहार और संयुक्त प्रान्त आगरा और अवध में धीरे धीरे इनका मत फैल गया।

११—बुद्धमत।

१—बुद्ध जी का मत ऐसा अच्छा और उनका जीवन ऐसा शुद्ध था कि बहुत से मनुष्य उनके अनुगामी हो गये। क्या धनी, क्या कङ्गाल, क्या बड़ा क्या छोटा, स्त्री पुरुष, हर जाति और धर्म के

लोगों ने इनके मत को धारण किया। साधारण मनुष्यों पर इनके धर्म का बड़ा अच्छा फल पड़ा, कारण यह कि इनका कथन था कि मेरे माननेवाले कुल स्त्री, पुरुष जो सच बोलें शुद्ध रहें और पाप से बचते रहें वह बराबर हैं और मोक्षपद को पहुंच सकते हैं।

२—बुद्ध की शिक्षा का सारांश यह है कि मनुष्य को चाहे लोक चाहे परलोक में उसके कर्मों का फल मिलता है। पाप करने से दुख दर्द मिलता है और अच्छे कामों से सुख। बुद्ध जी का कथन है कि लाख बलिदान, यज्ञ और हवन करो कि देवता प्रसन्न हों पर इससे अपने किये हुए पाप का नाश नहीं कर सकते। करोड़ जप करवाओ और मन्त्र पढ़वाओ पर इससे कभी तुम्हारी राह नहीं सुधर सकती। जो बोयेगा सो काटेगा, जैसा करेगा वैसा भरेगा। वह यह भी कहते थे कि मरने के पीछे मनुष्य की आत्मा कर्मों के अनुसार और और योनियों में जाती है और बारम्बार जन्म लेती और मरती है। आत्मा को मोक्ष उस समय मिलता है जब मनुष्य पाप के फन्दे से निकल जाय, दुख दर्द और काम क्रोध मद लोभ से रहित हो जाय, न दुख को दुख जाने न सुख को सुख। मित्र और बैरी दोनों को बराबर समझे। ऐसी दशा को बुद्ध जी निर्वाण कहते हैं। इस दशा को पहुंच कर आत्मा आवागमन से छूट जाती है, ऊंची नीची योनियों में मारी मारी फिरने से बची रहती है, भवसागर को पार करके शान्ति के कुंज में निवास करती है। अब आत्मा अचल और अटल हो जाती है और इसको परम आनन्द मिल जाता है।

३—बुद्ध जी के चेले जो संसार को छोड़ कर जप तप करने की अभिलाषा करते थे भिक्षु कहलाते थे और स्त्रियां जो घर बार छोड़ कर तपस्विनी हो जाती थीं भिक्षुणी कहलाती थीं। इनके रहने के लिये बस्तियों से दूर बहुधा पहाड़ों के खोह में बिहार बनवा दिये

जाते थे। यहां भिक्षु और भिक्षुणियां जप तप और पढ़ने लिखने में अपना समय व्यतीत करती थीं। यह सब सिर मुड़ाते थे गेरुआ वस्त्र पहिनते थे और भिक्षा पर निर्बाह करते थे। मगधदेश में इस भांति के बहुत से बिहार थे इस कारण उस प्रान्त का नाम ही बिहार हो गया।



अजन्ता की खोह में भिक्षुओं का स्थान।

४—बुद्ध जी अपने चेलों को यही शिक्षा दिया करते थे कि तुम भी मेरी राह पर चलो और दूसरों को इसी राह पर लाने का उद्योग करो। वह इसी सलाह पर चले यहां तक कि बुद्ध जी के जीते जी हज़ारों हिन्दू उनके मत के अनुगामी हो गये। इनमें से मगध देश के राजा बिम्बिसार भी थे। धीरे धीरे यह मत यहां तक बढ़ा कि हज़ार बरस तक भारत में सब से अधिक बढ़ती इसी की रही।

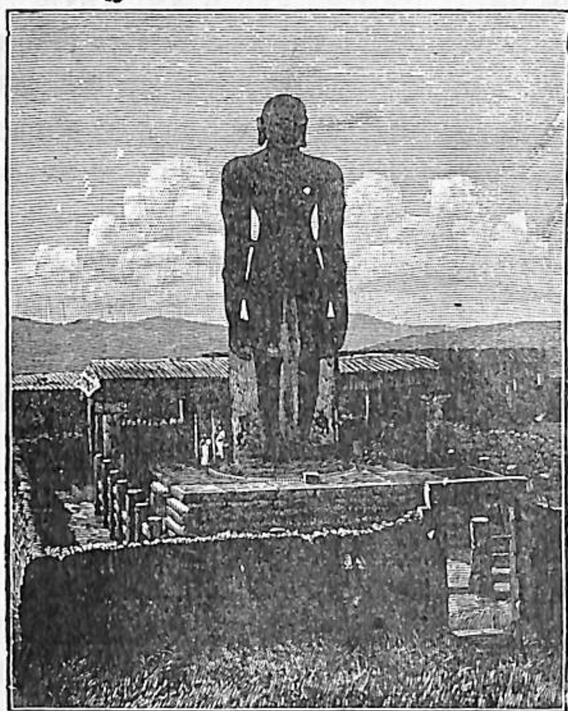
५—बुद्ध जी की मृत्यु के पीछे ईसा से ४७७ बरस पहिले उनके ५०० चेले इकट्ठे हुए। उनकी इच्छा यह थी कि अपने गुरु के कहे हुए वाक्यों का संग्रह करें। जब उनके समस्त वाक्य इकट्ठा कर लिये गये तो सबों ने उनको कंठ कर लिया और उनको तीन भाग में जिनको त्रिपिटक कहते हैं अलग अलग किया। पहिले पिटक में वह उपदेश हैं जो बुद्ध जी ने अपने चेलों को दिये थे। दूसरे में वह धर्म्म हैं जिनके अनुसार मनुष्य को रहना उचित है। तीसरे में बुद्ध मत के धर्म्म का वर्णन है। यह बुद्धमतवालों की पहिली सभा थी। इसके सौ बरस पीछे प्रायः ३७७ बरस ईसा से पहिले ७०० भिक्षुओं की दूसरी सभा हुई। इसमें वह मतभेद की बातें जो इस समय में उत्पन्न हो गई थीं ते की गईं। इसके २३५ बरस पीछे मगध के प्रसिद्ध सम्राट महाराज अशोक ने पटने में तीसरी सभा की। चौथी और अन्तिम सभा महाराज कनिष्क ने इसके ३०० बरस पीछे इकट्ठी की। यह शक जाति के राजा थे और उत्तर-पश्चिमीय भारत पर राज करते थे।

६—इस हज़ार बरस के समय को, अर्थात् ३०० बरस ईसा के पहिले से लेकर सन् ७०० ई० तक, बुद्धमत का समय कह सकते हैं क्योंकि इस काल में यह मत बढ़ते बढ़ते सब मतों से बढ़ गया था।

१२—जैन।

१—जिस समय बुद्ध जी जीते थे और अपने मत को फैला रहे थे उसी समय एक और क्षत्रियकुमार ने जिसका नाम वर्धमान था अपना नाम महावीर रखकर एक नया मत फैलाया, जो कि बहुत सी बातों में बुद्धमत से मिलता जुलता है। यह जिन

अर्थात सिद्ध कहलाते थे। इनके मत को जिनमत या जैनमत कहते हैं। इसके माननेवाले जैनी कहलाते हैं। यह भी उत्तरीय भारत में रह कर उपदेश करते थे। जैनी लोग कहते हैं कि हमारा मत बुद्धमत से पुराना है और कुछ विद्वानों का विचार



कार्कुल में जैनियों की मूर्त्ति।

है कि उनका कहना ठीक भी है। गुजरात देश के नगर पालिताना में जैनियों के बड़े बड़े सुन्दर मन्दिर बने हुए हैं। यहां तक कि वह मन्दिरों का नगर कहलाता है। इन मन्दिरों में कुछ ऐसे हैं जो हज़ार बरस पहिले के बने हैं। आबू पहाड़ पर जैनियों के

दो मन्दिर हैं जो भारत के अत्यन्त सुन्दर और बड़े प्रसिद्ध मन्दिरों में गिने जाते हैं। यह निरे संग मरमर के बने हुए हैं, जो तीन सौ मील से यहां लाया गया था। महावीर स्वामी की मृत्यु के दो सौ वर्ष पीछे प्रसिद्ध राजा चन्द्रगुप्त के समय में मगध देश में बड़ा भारी अकाल पड़ा। उस समय बहुत से जैनी उत्तरीय हिन्दुस्थान को छोड़कर दक्षिण देश करनाटक में चले गये जिसे अब मैसूर और कनाड़ा कहते हैं। अभी तक यहां कुछ जैनी बसे हुए हैं। अब जैनियों के दो भाग हो गये थे। एक तो स्वेताम्बर अर्थात उज्वल वस्त्र धारण करनेवाले दूसरे दिगम्बर जो नग्न रहा करते थे। आज दिन १५ लाख जैनी भारत के तमाम हिस्सों में बसे हुए हैं। बुद्ध मत की तरह जैनियों के भी साधू होते हैं। जैनी लोग दया करने का इतना विचार रखते हैं कि जहां तक हो सकता है छोटे से छोटे जीवों को भी हत्या नहीं करते। यह भी कर्म्म की गति को मानते हैं और निर्वाण को मुक्ति समझते हैं। इनका भी यही मत है कि मृत्यु के पीछे मनुष्य की आत्मा बहुत से पशुओं और दूसरी योनियों में प्रवेश करती है और बार बार जन्म मरण के फेर में आती है। जैनी बस्ती से दूर घने बनों या पेड़ों में ढके पहाड़ों पर अपने मन्दिर बनाते हैं और इन मन्दिरों के भीतर या उनके आस पास अपने तीर्थंकरों की बड़ी बड़ी मूर्त्तियां रखते हैं। दक्षिण देश के कनाड़ा प्रान्त में कार्कुल स्थान में जैनियों की एक मूर्त्ति है जो एक ही पत्थर को काट कर बनाई गई है और ४२ फुट ऊंची है।

१३—बौद्धमत का समय।

(१) यूनानियों का भारतवर्ष में प्रवेश।

१—यहां तक हमको भारत और उसके निवासियों के विषय में जो कुछ मालूम हुआ है वह सब भारत की पुस्तकों से मिला है। भारत का सब से पहिला इतिहास साल समेत जो हमको मिलता है वह यूनानियों की लेखनी से लिखा गया था।

२—जो आर्य फ़ारस में जाकर बसे थे उन्हों ने वहां एक बड़ा राज स्थापित कर लिया था। बुद्ध के समय अर्थात ईसा से ५०० बरस पहले फ़ारस का बादशाह सिन्धुनद से लेकर रूम के समुद्र तक सारे पश्चिम एशिया पर राज्य करता था। एशियाई तुर्की, फ़ारस, अफ़गानिस्तान और पंजाब का वह हिस्सा जो सिन्धुनद के पार बसा है सब उसके राज में था।

३—फ़ारस का एक राजा ज़रकसीज़ नाम इस बड़े राज पर सन्तोष न करके उस जलडमरूमध्य के पार गया जो यूरोप और एशिया को अलग करता है, और एक बड़ी भारी सेना लेकर यूनान पर चढ़ दौड़ा। यूनानियों ने उसे हरा दिया और उसकी सेना के सब से बड़े हिस्से को मार कर उसे अपने देश से निकाल दिया।

४—इस समय यूनानी यूरोप की सारी आर्य जातियों से बढ़ थे; विद्या और गुण और शस्त्र-विद्या में भी सब से निपुण थे। ज़रकसीज़ के हारने के बहुत दिनों पीछे यूनानियों में एक बहुत बड़ा राजा हुआ जिसका नाम सिकन्दर था। इसने बिचार किया कि फ़ारस पर चढ़ाई करूं और फ़ारसवालों को यूनान पर चढ़ाई करने का स्वाद चखा दूं। इसने कोई ३५००० यूनानी सिपाही साथ लिये और फ़ारस पर चढ़ आया।

५—सिकन्दर की आयु २० बरस की थी। फिर भी यह पृथ्वी के बीर धीर योद्धाओं में गिना जाता था और अब तक सिकन्दर महान के नाम से प्रसिद्ध है। इसने कुल एशियाई तुर्की और फ़ारस को विजय किया और फ़ारस के राजा दारा से जितनी लड़ाई लड़ा सब जीतता गया। इसके पीछे तुर्किस्तान अफ़गानिस्तान पर विजय पाता हुआ खैबर दर्रे से जिधर से किसी समय में आर्य लोग पंजाब में आये थे इसने भारत में प्रवेश किया।

६—पंजाब का पौरव नाम एक क्षत्रिय राजा सिकन्दर को जीतने की आशा से उसके सम्मुख आया। झेलम नदी के तट पर महा घोर युद्ध हुआ पर सिकन्दर और उसके यूनानी योद्धाओं ने पौरव और उसके सिपाहियों को हरा दिया। जब लड़ाई बन्द हो गई तब बन्दियों के समान पौरव सिकन्दर के सम्मुख उपस्थित किया गया। सिकन्दर ने पूछा कि तुम्हारे साथ कैसा व्यवहार किया जाय। पौरव ने उत्तर दिया कि जैसा राजा राजाओं के साथ करते हैं। सिकन्दर इस उत्तर से प्रसन्न हुआ और उसका राज उसे लौटा दिया।

७—सिकन्दर चाहता था कि गंगा नदी के तरेटी की ओर बढ़े और सब भारतवर्ष को जीत ले परन्तु उसके सिपाही व्याकुल हो गये थे और वह यूनान को ही लौटना चाहते थे। इस लिये सिकन्दर को उलटा लौटना पड़ा। एशियाई तुर्की के बाबुल नगर में पहुंच कर उसे ज्वर आ गया और वह मर गया।

८—सिकन्दर के मरने के पीछे उसका बड़ा राज्य उसके सेनापतियों में बंट गया। पहिला यूनानी सेनापति जो सिकन्दर की मृत्यु के पीछे बाख़्र का हाकिम हुआ मलयकेतु था। इसने पंजाब को अपने आधीन रखने का उपाय किया किन्तु सिकन्दर के भारत से लौट जाने के पीछे मगध के प्रसिद्ध राजा चन्द्रगुप्त ने

पंजाब को जीत लिया। मलयकेतु चन्द्रगुप्त को आधीन न कर सका और परस्पर सन्धि कर ली गई। चन्द्रगुप्त ने पांच सौ हाथी मलयकेतु को भेट दिये, मलयकेतु ने पंजाब पर अपना अधिकार त्याग देने का प्रण किया और चन्द्रगुप्त के साथ अपनी बेटी व्याह दी। चन्द्रगुप्त की सभा में मलयकेतु का राज-दूत भी रहने लगा जिसका नाम मेगस्थनीज़ था।

९—यूनानियों ने ३२७ बरस ईसा के पहिले जो सिकन्दर के साथ चढ़ाई की थी वह भारत के इतिहास में एक बड़ी भारी घटना जान पड़ती है। सिकन्दर के साथ विद्वान और गुणी यूनानी जो भारत में आये उन्हों ने जो बातें यहां की देखीं उन सब का हाल अपनी पुस्तकों में लिखा। उनके लिखे हुए सच्चे इतिहास तो अब नहीं मिलते हैं पर यनानी इतिहासलेखकों ने जो बातें अपनी पुस्तकों में इनसे लिख ली थीं, अभी तक पाई जाती हैं। मेगस्थनीज़ ने भी जो सिकन्दर की मृत्यु के २० बरस पीछे पटने में राज-दूत था कुछ हाल लिखा था जो उसने अपनी आंखों देखा या कानों सुना था। उसकी पुस्तक के कुछ भाग अभी तक मिलते हैं।

१०—मेगस्थनीज़ लिखता है कि भारतवासी मनुष्य जिनको उसने देखा सत्यवादी और वीर थे। स्त्रियां सीधी और पवित्र थीं। दासत्व का नाम तक न था। लोग एक दूसरे की बात पर विश्वास करते थे। कोई अपने दरवाज़े पर ताला नहीं लगाता था क्योंकि चोर और लुटेरे कहीं न थे। मुक़दमे इत्यादि होते ही न थे। बिरला ही कोई किसी पर नालिश करता था। मेगस्थनीज़ लिखता है कि उस समय हिन्दुस्थान में ११८ राजा राज्य करते थे। भारतवासियों में जो लोग गोरे थे वह ऊंची जाति के आर्य ब्राह्मण और क्षत्रिय थे और जो लोग काले थे वह शूद्र

और नीची जातियों के मनुष्य थे। हर एक बस्ती और गांव अपनी सब आवश्यकता की चीज़ों से भरा था, और दूसरे के आसरे न था क्योंकि इसमें प्रत्येक जाति के और प्रत्येक उद्यम के मनुष्य बसते थे। प्रजा अपने राज में और हाकिमों की रक्षा में सुख चैन से रहती थी।

(२) भारत के यूनानी राजा।

१—जब सिकन्दर भारत से लौट गया तो उसके हज़ारों यूनानी सिपाही पीछे तुर्किस्तान में रह गये। फ़ारस के यूनानी तुर्किस्तान को बाख़र कहते हैं। यूनानी सैनिकों ने बाख़र की स्त्रियों से व्याह कर लिया और उन्हीं के देश में बस गये। सिकन्दर के पीछे यूनानी बादशाह फ़ारस में पांच सौ और बाख़र में सौ बरस के लगभग राज करते रहे। इसके पीछे सीथियन के बड़े बड़े झुंडों ने आकर इनको तुर्किस्तान से निकाल दिया।

२—तीन सौ पचास बरस अर्थात ईसा मसीह से दो सौ पचास बरस पहिले और सौ बरस पीछे तक बाख़र के यूनानी राजा और उसके पीछे फ़ारस के यूनानी बादशाह अफ़ग़ानिस्तान और पंजाब के कुछ भाग पर राज करते थे। इनके नाम के सिक्के आज तक बहुधा वहां निकलते रहते हैं। इन बादशाहों में सब से प्रसिद्ध मीनाण्डर था जिसको भारतवासी लेखकों ने मलिन्द लिखा है। वह बौद्ध हो गया था। कहा जाता है कि यह बड़ा नेक राजा था। भारत के लेखकों ने ऐसा लिखा है कि यूनानी यहां के वासियों से मिल गये थे। पीछे उनका कहीं नाम तक नहीं सुनाई देता।

(३) भारतीय सिथियन।

(ईसा मसीह से १५० बरस पहिले से ४०० ई० तक।)

१—जो जातियां मध्य एशिया में बसी थीं यूनानी उनको सीथियन और उनके देशको सीथिया कहते थे। इन जातियों की गिनती बहुत थी। पांच सौ बरस अर्थात ईसा मसीह से १५० बरस पहले और ४०० बरस के अन्तर में यह जातियां एक एक करके उसी भांति भारत में आती रहीं जिस तरह पहिले आर्य लोग आये थे। यह कश्मीर, अफ़गानिस्तान, पंजाब, सिन्ध, गुजरात और मध्य भारत के पश्चिमी भाग में बस गये। ऐसा जान पड़ता है कि पहिले पहिल उन्हों ने पंजाब में भारतीय यूनानी राजाओं के साथ छोटी छोटी रियासतें बसाईं फिर सारे देश को जीतकर स्वाधीन कर लिया।

२—इनमें से जो जातियां पहिले पहिल भारत में आईं उनमें से एक शक थी। यह लोग सिन्ध, मालवा और पश्चिमी भारत में पहुंचे। शक राजाओं का कुटुम्ब जो पश्चिमीय राजाओं के नाम से प्रसिद्ध था, ४०० ईस्वी तक उज्जैन को अपनी राजधानी बनाकर मालवा में राज करता रहा। इसके पीछे भारतवासियों के प्रसिद्ध राजा विक्रमादित्य ने शक वंश को निकाल दिया।

३—एक और भारतीय सीथियन जाति कुशन कहलाती थी। यह ४५ ई० से २२५ ई० तक अर्थात् १८० बरस तक उत्तरीय भारत में रही। कनिष्क इस जाति का प्रसिद्ध राजा हुआ है। पुरुषपुर अर्थात् पेशावर उसकी राजधानी थी। पंजाब, कश्मीर और सिन्ध में उसका राज था। तुर्किस्तान और अफ़गानिस्तान

भी इसी के आधीन थे। इसके नाम के बहुत से सिक्के निकले हैं। यह बौद्ध था और उस मत को बहुत मानता और उसपर पूरा बिश्वास रखता था।

१४—बौद्ध समय के बड़े बड़े राजा और उनकी रियासतें।

(ईसा से २०० बरस पहिले से लेकर ६०० ई० तक)

१—हम पहिले लिख आए हैं कि प्राचीन हिन्दुओं के समय में सब से प्रसिद्ध राज्य मगध का था। इस प्रान्त को अब बिहार कहते हैं। पहिले यहां विदेहों का राज था। बौद्धों के समय में यह देश और भी बढ़ा। मगध के राजा बिम्बिसार ने बुद्ध जी का धर्म उपदेश सुना और उन्हीं के मत का हो गया। इस समय मगध की राजधानी राजगृह थी। पीछे जो वंश मगध देश का शासक हुआ शूद्र जाति का था। इसका मूल पुरुष नन्द था इस कारण से कुल वंश ही को नन्दवंश कहते हैं। नन्दों ने पाटलीपुत्र को जो गंगा और सोन नदी के सङ्गम पर बसा हुआ था अपनी राजधानी बनाया। जब सिकन्दर ने भारतवर्ष पर धावा मारा तब इस वंश का एक राजकुमार चन्द्रगुप्त नाम जो अपने यहां के राजा को राजगद्दी से उतारना चाहता था सिकन्दर से जा मिला और उस से प्रार्थना की कि आप मगध में चलें और वहां राज करें। पर यूनानी सिपाहियों ने इतनी दूर जाना स्वीकार न किया। जब सिकन्दर भारतवर्ष से लौट गया, तो चन्द्रगुप्त ने अपने मित्रों की सहायता से नन्द राजा को मार डाला और ईसा से प्राय: ३२१ बरस पहिले मगध का राजा बन बैठा।

(१) मौर्य वंश।

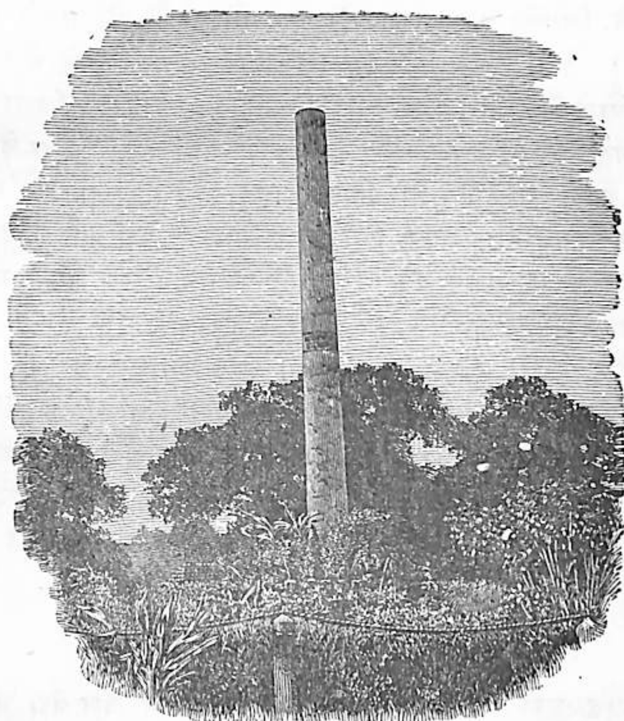
१—चन्द्रगुप्त मौर्य के समय में (ईसा से ३२१ बरस पहिले से लेकर २८७ बरस तक) उत्तरीय भारत में मगध एक बहुत बड़ा राज हो गया। कहते हैं कि गङ्गा जी की तरेटी से लेकर पंजाब तक सारा देश इसके आधीन था और प्राचीन आर्यों की समस्त रियासतें जो विदेह, पञ्चाल, कोशल के नामों से प्रसिद्ध थीं उसी राज में मिली थीं। चन्द्रगुप्त का कुल मौर्यवंश कहलाता है क्योंकि चन्द्रगुप्त की मां का नाम मुरा था। चन्द्रगुप्त ने पाटलीपुत्र में ३० बरस राज किया। हम पहिले लिख चुके हैं कि बाख़र अर्थात् तुर्किस्तान के बादशाह सिल्यूकस ने (मलयकेतु) उसके साथ सन्धि करके उसको अपनी बेटी व्याह दी थी। एक यूनानी राजदूत मेगस्थनीज़ नामी आठ बरस तक इसके दर्बार में रहा। इसने मगध देश और हिन्दुओं की रीति नीति जो उसने देखी या सुनी थी बड़े बिस्तार से लिखी थी। वह लिखता है कि पाटलीपुत्र एक बहुत बड़ा नगर था, नौ मील लम्बा दो मील चौड़ा था। मगध के राजा की सेना में ६ लाख पैदल और ४० हज़ार सवार थे। राजा बड़ी सुगमता और विज्ञता से शासन करता था।

२—चन्द्रगुप्त का पोता अशोक २७२ बरस से २३२ बरस तक इस वंश का तीसरा राजा हुआ। यह चन्द्रगुप्त से भी अधिक प्रसिद्ध हुआ। इसको बहुधा अशोक महान कहते हैं, क्योंकि यह अपने समय का सब से बड़ा और प्रतापी राजा था। जवानी में यह बड़ा लड़नेवाला था। यह कहा करता था कि कलिङ्ग देश को जीत कर अपने राज्य में मिला लूंगा; तीन साल तक लड़ा और कलिङ्ग को जीत लिया। इस लड़ाई में हजारों लाखों मनुष्यों को

मरते कटते देखकर उसको बड़ा तर्स आया और एकाएक उसका स्वभाव बिल्कुल बदल गया और कहने लगा कि अब मैं बुद्ध जी के धर्म पर चलूंगा और कभी किसी से लड़ाई न करूंगा। अशोक ने बुद्ध धर्म को अपने सारे राज का धर्म नियत किया और अपना नाम प्रियदर्शी रक्खा। इसका एक बेटा भिक्षु और एक बेटी भिक्षुणी हो गई। इसने दोनो को लङ्का भेजा कि वहां जाकर वे बुद्ध मत का प्रचार करें। बौद्ध समाज के दूसरे सम्मेलन को प्रायः सवा सौ बरस से अधिक हो चुके थे और बुद्ध मत में कई प्रकार के उलट फेर हो गए थे। इनके निर्णय करने के लिए ईसा से २४२ बरस पहिले अशोक ने इस धर्म के १००० महात्माओं और विद्वानों की तीसरी बड़ी समाज इकट्ठा की। आशय यह था कि बुद्ध धर्म को पीछे की मिलावटों से रहित करके बुद्ध जीके मूल धर्म के अनुसार हो जाय—यह समाज पाटलीपुत्र में इकट्ठा हुआ। बुद्ध धर्म के समस्त उपदेश पाली भाषा में लिख लिये गये। २००० बरस से कुछ अधिक से जो बुद्धमत के ग्रंथ दक्षिण एशिया में प्रचलित हैं यह इसी समाज के इकट्ठा किये हुए हैं। इसने बुद्ध धर्म प्रचार के निमित्त, कश्मीर, गांधार, तिब्बत, बर्मा दखिन और लङ्का में भिक्षु भेजे।

३—अशोक ने २१ शासन लिखाये और जगह जगह सारे भारत में पत्थर की लाटों और पहाड़ों पर अङ्कित करा दिये। इनमें से कई आज तक विद्यमान हैं। एक प्रयाग में है, एक गुजरात में गिरनार पर्वत पर है। इन शासनों में बुद्ध धर्म की बड़ी बड़ी बातें सब आ जाती हैं जैसे दया करो, सुशील बनो, अपने चित्त को शुद्ध करो, दान दो। एक शिला पर यह लिखा हुआ है कि अशोक ने कलिङ्ग देश जीत लिया और पांच यूनानी बादशाहों से संधि की। इनमें से तीन—मिश्र, यूनान और शाम के

बादशाह थे। इससे यह जाना जाता है कि अपने समय का अशोक बड़ा प्रसिद्ध और प्रतापी राजा था।



इलाहाबाद में अशोक की लाट।

४—ईसा से २३२ बरस पहिले अशोक का देहान्त हुआ। इस के ४० बरस पीछे मौर्य वंश का भी अन्त हो गया—मौर्य वंश के पीछे दो वंश और मगध में ऐसे हुए जिनके नाम छोड़ के अब और कुछ कोई नहीं जानता। अशोक के २०० बरस पीछे मगध का राज अंध्र वंश के हाथ लगा।

(२) अंध्र वंश ।

अंध्र आर्यों की एक जाति थी जो प्राचीन काल में गङ्गा की तरेटी से निकल कर महानदी और गोदावरी की तरेटियों में बस गई थी। यहां उसने एक राज्य स्थापन किया जिसने सैकड़ों बरस तक दखिन के पूर्वीय भाग और तिलङ्गाना पर राज्य किया। आज तक तैलङ्गी भाषा का दूसरा नाम अंध्र भाषा चला आता है। ईसा से २६ बरस पहिले जो हिन्दू राजा यहां राज करता था उसने देखा कि मगध राज बहुत शिथिल होगया है इस कारण उसने एक बड़ी सेना लेकर उत्तर की दिशा को प्रस्थान किया और मगध को जीत लिया। इसके पीछे ३०० बरस तक अंध्र वंश की एक शाखा मगध और पूर्वीय भारत और दूसरी दखिन पर राज्य करती थी। हम पहिले लिख चुके हैं कि ईसा से पहिले ४ शताब्दियों में पहिले बाख़र के यूनानियों और फिर शकों ने पंजाब और उत्तर-पश्चिमीय भारत को अपने आधीन किया था। अंध्र वंश के २४ राजाओं ने राज किया। उन्हों ने शकों को भारत के मध्य और पूर्व के भाग में घुसने नहीं दिया।

(३) गुप्त वंश ।

१—बुद्ध धर्म के समय के अन्त में मगध में उस वंश का राज था जो गुप्त के नाम से प्रसिद्ध है। ३०० ई० से ६०० ई० तक ३०० बरस के लगभग इस वंश का शासनकाल कहा जाता है। इस वंश के दो राजा बड़े नामी हुए हैं। एक समुद्रगुप्त और दूसरा चन्द्रगुप्त—विक्रमादित्य। इस चन्द्रगुप्त के साथ विक्रमादित्य की पदवी इस कारण सम्मिलित की गई थी कि इसमें और चन्द्रगुप्त मौर्य में भेद हो जाय जो इससे ७०० बरस पहिले मगध में राज करता था।

२—समुद्रगुप्त (३२६ ई० से ३७० ई० तक) बड़ा बली राजा हुआ है। यह एक बड़ी भारी सेना लेकर सारे मध्य भारत में होता हुआ धुर दक्षिण में पहुंचा और जिन राजाओं की रियासतों में होता गया उन सब को अपने आधीन करता गया। उसने उन देशों को अपने राज में तो नहीं मिलाया पर वहां से लूट का माल बहुत लाया। यह एक बड़े राजा होने के अतिरिक्त कवि भी था और बीणा बहुत अच्छी बजाता था। इलाहाबाद की लाट पर अशोक के लेख के नीचे एक लेख इसका अङ्कित कराया हुआ भी है। यह अशोक के लेख के बहुत पीछे का है। इस से जाना जाता है कि समुद्रगुप्त सारे उत्तरीय भारत का राजा था और दखिन के राजा उसको अपना महाराजाधिराज मानते थे।

गुप्त वंश के राजाओं का सम्वत ही पृथक है। यह ३१९ ई० से प्रारम्भ होता है। गुप्त राजा बुद्ध धर्म के अनुगामी न थे; वह वैष्णव थे और उन्हीं ने प्राचीन हिन्दू धर्म की उन्नति कराने में बड़ा उद्योग किया। बहुत दिनों तक गुप्त वंश के राजाओं ने शकों का सामना किया जो झुंड के झुंड भारत में चले आ रहे थे और उनको गंगा जी की तरेटी में घुसने न दिया।

द्वितीय चन्द्रगुप्त (३७५ से ४१३ ई० तक) समुद्रगुप्त से भी बलवान हुआ है। उसने विक्रमादित्य की पदवी धारण की जिसका अर्थ है "बाहादुरी में सूर्य"। हिन्दू ग्रन्थों में यह इस नाम का सब से प्रसिद्ध राजा पाया जाता है। यह बड़ी भारी सेना लेकर उत्तर पश्चिम की दिशा में सिंधु नदी की घाटी, पञ्जाब, सिन्ध और गुजरात और मालवे में जहां सैकड़ों बरस से शकों की अमल्दारी चली आती थी पहुंचा और उनका देश जीत के अपने राज्य में मिला लिया।

लोगों का बिचार है कि यह वही विक्रमादित्य है जो हिन्दू

धर्म का बड़ा पक्षपाती और विद्या का प्रचारक प्रसिद्ध है— इसको विक्रम भी कहते हैं। यह हिन्दू राजाओं में सब से प्रसिद्ध है; जैसा वीर था वैसाही विद्वान भी था। इसकी सभा में नौ विद्वान ऐसे थे जो उस समय के नौ रत्न कहलाते थे। इनमें सब से बड़ा विद्वान कालिदास था जिसके रचे बड़े प्रसिद्ध ग्रन्थ यह हैं, शकुन्तला, रघुवंश, मेघदूत, कुमारसम्भव; अमरसिंह जिसका बनाया हुआ अमरकोश भारतवर्ष की प्रत्येक पाठशाला में पढ़ाया जाता है; धन्वन्तरि वैद्य थे। एक रत्न वररुचि ने उस समय की प्रचलित प्राकृत भाषा का व्याकरण रचा है। पांचवें रत्न प्रसिद्ध ज्योतिषी बराहमिहिर थे। पञ्चतन्त्र की कहानियां विक्रमादित्य ही के समय में लिखी गई थीं पीछे उसका अनुवाद फ़ारसी अरबी और अनेक यूरोपी भाषा में हुआ। विक्रमादित्य के समय की बहुत सी कहानियां आज तक भारत के गांव गांव में कही जाती हैं।

४—विक्रमादित्य के समय में बुद्ध धर्म धीरे धीरे भारतवर्ष में मिट रहा था—कालिदास के ग्रन्थों से जाना जाता है कि शिवालय और ठाकुर द्वारे बहुत थे और उनमें हिन्दुओं के देवताओं की पूजा होती थी। राजा शिवजी की आराधना करता था पर बौद्धों के साथ भी दयालुता का बर्ताव करता था। इसकी सभा के नौ रत्नों में से एक बौद्ध भी था।

(४) हूण।

(४५० ई० से ५२८ ई० तक)

गुप्त वंश का पराजय उन मङ्गोल जातियों के हाथ से हुआ जो हूण कहलाती थीं और ४५० ई० के लगभग पञ्जाब में आकर बस

गईं थीं। यहां से चलकर यह लोग यमुना जी की तरैटी में पहुंचे और उस समय के गुप्त राजा को परास्त किया। इनके सर्दार का नाम तूरमान था। उसने ५०० ई० के लगभग अपने को मालवे का राजा बनाया और महाराजा की पदवी धारण की—उसके पीछे उसका पुत्र मिहिरिकुल गद्दी पर बैठा। यह बड़ा क्रूर था। इसने इतने मनुष्यों का बध किया कि अन्त में मगध के राजा बालादित्य ने मध्य भारत के एक राजा यशोधर्मन की सहायता से एक बड़ी सेना लेकर उसका सामना किया और ५२८ ई० में मुलतान के पास कोदरौर के स्थान पर उसे परास्त किया और उसको और उसकी सेना को भारत से निकाल दिया। हूण भारत में २०० बरस के लगभग रहे। बहुत से हूण तो कहीं कहीं बस गये। गुप्त वंश के राजा उनके निकाले जाने के कोई २०० बरस पीछे तक थानेश्वर में राज करते रहे।

(५) हर्ष या शीलादित्य।

बौद्ध समय के अन्तिम काल का बड़ा राजा हर्ष हुआ है। यह ६०६ ई० से ६४८ ई० तक सतलज और यमुना के बीच के देश पर राज करता था। इसकी राजधानी थानेश्वर थी जिसका पुराना नाम कुरुक्षेत्र है। इसने शीलादित्य की पदवी धारण की और यह उत्तरीय भारत का राजाधिराज कहा जाता था। इसके पीछे हिन्दू राजाओं में कोई ऐसा बलवान नहीं हुआ जो इस देश का महाराजाधिराज कहलाया हो। पञ्जाब से लेकर आसाम तक गङ्गा और सिंधु की तरैटियों की कुल रियासतों को जीतने में इसे ३० बरस लगे थे। इसने दक्खिन को जीतने का भी उद्योग किया पर इसका मनोरथ पूरा न हुआ।

२—इसके राज्य का पूरा वृतान्त मिलता है। पहिले तो एक चीनी यात्री होनचांग के लेख से जो कुछ काल तक उसके दर्बार में रहा था, दूसरे कवि बाण की लिखी हुई पुस्तक हर्ष चरित में। हर्ष बौद्ध मत का था पर ब्राह्मणों और हिन्दू धर्म का ऐसा आदर करता था जैसे निज धर्म का। कन्नौज में बौद्ध मत के सौ बिहार थे तो हिन्दुओं के मन्दिर दो सौ थे। ६३४ ई० में शीलादित्य ने एक बड़ी सभा की। इस में २१० राजा आये थे जिन्हों ने उसको अपना महाराजाधिराज होना स्वीकृत किया। इस समाज में राजा के सामने ब्राह्मण पण्डितों और बौद्ध भिक्षुओं में कई शास्त्रार्थ हुए। पहिले दिन सभा में बुद्ध जी की मूर्त्ति स्थापित की गई दूसरे दिन सूर्य की तीसरे दिन शिवजी की। ७७ दिन तक शीलादित्य ने सब को भोज दिया फिर अपना सारा धन, आभूषण और महल का सराजाम बौद्ध और हिन्दू धर्म के बिचार के बिना सब को बांट दिया। इसके पीछे राजसी बस्त्र भी उतार दिये और सन्यासियों का बाना पहिन लिया जैसे कि बुद्ध जी ने बाप के महल से बिदा होने के समय धारण किया था।

हर पांच बरस पीछे शीलादित्य ऐसाही करता था—गया जी से थोड़ी दूर नालिन्द में एक बहुत बड़ा बिहार था जहां १०,००० भिक्षुक धार्मिक पुस्तकों, शास्त्रों और आयुर्वेद के ग्रन्थों के पढ़ने में अपना समय व्यतीत करते थे।

१५—बौद्ध समय में भारतवर्ष की अवस्था।

(ईसा से २०० बरस पहिले से ६०० ई० तक।)

१—हम पहिले लिख चुके हैं कि बौद्ध मत बुद्ध जी का चलाया हुआ था जिनका जन्म मगध देश में हुआ था और वहीं उनकी मृत्यु भी हुई थी। इस कारण मगध को बौद्ध मत की जन्म-भूमि कह सकते हैं। सारे संसार के बौद्ध इस स्थान को अपना तीर्थ मानते हैं और कपिलवस्तु का जहां उनके मोक्ष की राह बतानेवाले पैदा हुए और बुद्ध-गया का जहां उनको मोक्ष प्राप्त हुआ और उस बड़ के वृक्ष का जिसके नीचे उन्हों ने अपने धर्म के उपदेश दिये बड़ा आदर और सम्मान करते हैं। बहुत से देशों में बुद्ध मत ही का डंका बज रहा था। सैकड़ों बरस तक इन देशों के धर्मात्मा वैद्य, बुद्ध जी की जन्म-भूमि उनकी तपस्या और मृत्यु के स्थान की यात्रा और दर्शनों के निमित्त आया करते थे। बहुत से यात्री चीन से आये। इनमें से दो ऐसे थे जिन्हों ने भारत की अवस्था जो अपनी आंखों देखी या कानों सुनी थी लिखी है। पहिला फ़ाह्यान जो लगभग ४०० ई० के और दूसरा ह्वीनचांग जो ६३० ई० में आया था। हिन्दू प्राय: अपने देश का वृत्तान्त नहीं लिखा करते थे इस कारण चीनी यात्रियों के वृत्तान्त को बड़े आदर से देखना चाहिये।

२—समुद्रगुप्त की मृत्यु के पीछे जब गुप्त वंश के राजा भारत में राज कर रहे थे फ़ाह्यान भारत में उपस्थित था। यह काबुल होकर आया था और पश्चिम से पूर्व की दिशा में सारे भारतवर्ष में होता हुआ गङ्गा जी के मुहाने से जल-यान के द्वारा लङ्का पहुंचा। राह में पंजाब और भारत के जो जो प्रसिद्ध नगर आये

उसने सब को सैर की। वह कहता है कि उत्तरीय भारत के लोग जीव-हिंसा नहीं करते थे मदिरा नहीं पीते थे, और चाण्डालों अथवा नीच जातियों के अतिरिक्त कोई लस्सुन या प्याज़ नहीं खाता था। जो लोग शिकार करते थे अथवा मांस बेचते और खाते थे वह चाण्डाल थे। इनके अतिरिक्त कोई ऐसा काम नहीं करता था। राजा बड़ी नरमी के साथ शासन करता था। जहां जिसका जी चाहे जाय आये, कोई रोक टोक न थी। न किसी भांति की कठिनाई थी। जो मनुष्य शास्त्र के विरुद्ध चलते थे राजा उन्हें दंड देता था। बाग़ियों को भी प्राणदंड नहीं दिया जाता था; केवल उनका दाहिना हाथ कटवा दिया जाता था। सौदा सुलुफ़ के लेने देने में कौड़ियां चलती थीं। जगह जगह पर बिहार बने हुए थे। इनमें हज़ारों भिक्षु रहते थे। बिहारों में भिक्षुओं के लिये राजा बिछौना, चटाई, खाने पीने की सामग्री कपड़ा लत्ता देता था। मनुष्यों और पशुओं के लिये बहुत से चिकित्सालय थे जहां बड़े बड़े विद्वान वैद्य चिकित्सा करते थे। रोगियों को औषध के साथ खाना भी चिकित्सालय से ही बिना मूल्य मिलता था। इससे प्रगट है कि फ़ाह्यान के समय में अथवा ४०० ई० के लगभग उत्तरीय भारत में बौद्ध धर्म ही का प्रचार था।

२—हौनच्वांग फ़ाह्यान से २२० बरस पीछे आया और भारतवर्ष में बहुत दिनों तक रहा। उसने भी भारत की दशा ब्योरे समेत वर्णन की है। इसने भी काबुल की दिशा से भारत में प्रवेश किया और काश्मीर, पंजाब और भारतवर्ष के बड़े बड़े नगर देखता भालता उड़ीसा, कलिङ्ग और दक्षिण भारत से होता हुआ पश्चिमीय समुद्रतट पर जा पहुंचा और वहां से महाराष्ट्र राजपूताना, गुजरात और सिन्ध में गया अर्थात उसने सारे भारत में चक्कर लगा डाला। इस चक्कर में उसको पन्द्रह बरस लगे थे।

४—ह्वीनच्वांग जहां गया वहीं उसने हिन्दू और बौद्ध धर्म को साथ साथ चलता और बढ़ता हुआ पाया। किसी किसी प्रान्त में जैसे उड़ैसा, काश्मीर और दखिन में बुद्धमत बढ़ा हुआ था और किसी में हिन्दू धर्म का अधिक प्रचार था। ह्वीनच्वांग का कथन है कि बहुतेरे देशों में ज़हां मैं गया राज-कार्य बड़ी सुगमता से होता था और प्रजा सुखी और निश्चिन्त थी। सब लोग चाहे वह बौद्ध हों चाहे हिन्दू जो जी में आता था सो करते थे और जिसको चाहते थे उसकी आराधना करते थे और एक धर्म के लोग दूसरे धर्मावलम्बियों से बैरभाव नहीं रखते थे। विद्वानों की प्रतिष्ठा होती थी।

५—यद्यपि बौद्ध समय में ऐसे बड़े कवि नहीं हुए जैसे इससे पहिले के समय में हुए थे या उसके पीछे, फिर भी विद्या और कला के सीखने सिखाने में बड़ा परिश्रम किया जाता था और उस समय के हिन्दुओं ने बहुत सी नई बातें निकालीं थीं। जब यूनानियों ने भारत में प्रवेश किया तो उन्हों ने भारतवर्ष के विद्वानों से बहुत सी बातें सीखीं और हिन्दुओं को भी यूनानियों से बहुत कुछ लाभ हुआ।

६—बौद्धमतवाले जीव रक्षा को अपना बड़ा कर्तव्य मानते थे। आप हिंसा करना तो दूर रहा दूसरों को भी इससे रोकते थे। हम ऊपर लिख चुके हैं कि उन्हों ने मनुष्यों और पशुओं के निमित्त अलग अलग चिकित्सालय स्थापन किये थे। आयुर्वेद की उन्नति में बड़ा परिश्रम किया जाता था। इस विद्या में सब से निपुण चरक था। इसने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ चरकसंहिता में बड़े ब्यौरे के साथ जड़ी बूटियों से हजारों औषधियों के बनाने की रीतियां लिखी हैं। यूनानियों और अरबवालों ने इस विद्या की बहुत सी बातें चरक से सीखी थीं। आयुर्वेद के अतिरिक्त हिन्दू जर्राही में

भी बड़े निपुण थे। इस विद्या के बिषय में सुश्रुत की पुस्तक बड़ी प्रसिद्ध है। उसने १०० से अधिक जर्राही औज़ारों के नाम और उनको सेवन विधि दी है। जहां इन यन्त्रों का ब्यौरा है वहां यह भी लिखा है कि इनमें से कोई कोई ऐसे तीक्ष्ण थे कि बाल को चीर कर दो कर देते थे।

७—इस समय के हिन्दू अपने सकालीन यूनानियों से अङ्कगणित और बीजगणित में अधिक ज्ञान रखते थे। हिन्दुओं की प्राचीन ज्यौतिषशास्त्र की पुस्तकें जो कि अब तक प्रचलित हैं इसी समय में बनाई गई थीं। इनको सिद्धान्त कहते हैं। कहते हैं कि यह सिद्धान्त गिन्ती में अठारह थे। सब से प्राचीन सिद्धान्त सिकन्दर के आक्रमण से कुछ ही पीछे लिखा गया था। इसमें यूनानियों का भी नाम आया है। हो सकता है कि इस ग्रन्थ के रचयिता ने यूनानियों से भी कुछ सीखा हो। एक दूसरे सिद्धान्त में बाख़र के यूनानियों और शकों का भी बर्णन है। और सिद्धान्त उस समय रचे गये थे जब बौद्ध समय की आयु पूरी होने को थी। इस समय का बड़ा ज्योतिषी आर्यभट्ट है जो ६०० ई० के लगभग पाटलीपुत्र में रहता था। उसका कथन है कि पृथ्वी अपने चारों ओर लट्टू की भांति घूमती है। वह चन्द्र ग्रहण और सूर्य ग्रहण का कारण भी ठीक ठीक जानता था।

८—व्याकरण भी बड़े परिश्रम के साथ पढ़ा जाता था और बहुत सी पुस्तकें इस बिषय पर लिखी गई थीं। मनु जी का धर्मशास्त्र जो अब मनुसंहिता के नाम से प्रसिद्ध है ईसा के जन्म के समय में सङ्कलित किया हुआ जान पड़ता है।

१६—पुराण।

१—५२८ ई० में जब मगध के राजा बालादित्य और यशोधर्मन ने हूणों को हरा कर हिमालय के उत्तर भगा दिया था, तब से १००० ई० तक कोई बड़ा बिजयी राजा उत्तर के देशों से हिमालय के दर्रों में होकर नहीं आया। इसका एक कारण जैसा कि हम आगे लिखेंगे यह था कि तुर्किस्तान, ईरान और मध्य एशिया में एक नये धर्म का प्रचार हो रहा था। यह धर्म इसलाम था। अरब के रहनेवाले पहिले इन देशों के जीतने में लगे थे। जब अपनी ही जान के लाले पड़ रहे थे तो उन देशों के रहनेवाले भारत पर कैसे चढ़ाई कर सकते थे ?

२—इस समय हिन्दू बाहर की चढ़ाइयों और उपद्रवों से बचे हुए थे; चारों ओर राजपूत राजा राज करते थे। उन्हों ने बड़े बड़े राज अपने अधिकार में कर लिये; शिवालय और ठाकुर-द्वारे बनवाये। देश धन सम्पत्ति से भरा पुरा था। बुद्धमत घट रहा था, हिन्दूधर्म की उन्नति हो रही थी। इससे यह न समझना चाहिये कि बुद्धमत नष्ट हो गया था और हिन्दूधर्म उसकी जगह स्थापित हो गया था। सच तो यह है कि सैकड़ों बरस से बुद्धमत घट रहा था और हिन्दू धर्म उभरता जाता था। एकही कुल में कुछ लोग हिन्दू और कुछ बौद्ध होते थे। बहुतेरे राजा दोनों धर्मों को बराबर मानते और दोनों की सहायता करते थे, फिर भी हम यह कहना उचित समझते हैं कि विक्रम के समय से अर्थात् ४०० ई० साल के लगभग बुद्धमत की घटती और हिन्दूधर्म की बढ़ती होने लगी, और होते होते १००० ई० तक बुद्धमत भारतवर्ष से निकल गया और उसके स्थान पर हिन्दू धर्म जम कर बैठ गया। इसके दो कारण हैं, पहिला यह कि इस समय

हिन्दुओं में बड़े बड़े विद्वान और उपदेशक हुए जिनकी शिक्षा का देश पर बड़ा प्रभाव पड़ा। दूसरा कारण यह है कि राजपूत राजा आप बड़े वीर थे। वह बुद्ध के उस सिखावन को कब मान सकते थे जिस में लड़ाई दंगा मार काट निषिद्ध है।

३—पुराण का अर्थ पुराना है और पुराण उन ग्रन्थों का नाम है जो पुराने समझे जाते हैं। इसमें सन्देह नहीं कि हिन्दुओं की बहुतेरी पुस्तकें पुरानी हैं क्योंकि इनमें बहुतसी कम से कम १२०० बरस पहिले की बनी हुई हैं। फिर भी यह ग्रन्थ वेद, रामायण और महाभारत से पुराने नहीं हैं। यह पुराण इनसे बहुत पीछे बने। इन पुराणों में हिन्दू धर्म का वह नया रूप देख पड़ता है जो बुद्ध धर्म के निकल जाने पर देश में प्रगट हुआ। अब वेद के पुराने देवताओं की पूजा की धूम नहीं थी। अग्निदेव की पूजा में जो यज्ञ और हवन हुआ करते थे वह भी बन्द हो गये थे। मनुजी के समय में मन्दिर बनवाकर कुछ लोग इनमें देवपूजन करने लगे थे। इसको मनुजी बुरा मानते थे। उनकी इच्छा थी कि लोग फिर पुराने वैदिक देवताओं की सरन लें। पर अब समय बहुत बदल गया था और वैदिक धर्म लुप्त हो गया था। वेद में सूर्यदेव का एक नाम विष्णु भी है क्योंकि वह सारे संसार को गरमी पहुंचाता और सब का प्रतिपालन करता है। रुद्र गरजनेवाले काले बादल को कहते हैं जिसमें बिजली कौंधती है और जो उसके आगे पड़ता है उसे खण्ड खण्ड कर डालती है। आजकल के हिन्दू धर्म में विष्णु परमेश्वर के उस रूप को कहते हैं जो संसार का आधार है; रुद्र या शिव परमेश्वर का वह रूप है जो संसार का संहार करता है। नये धर्म के हिन्दुओं ने दोनों को भिन्न माना है और दोनों की बड़ी मानता और पूजा होती है। ब्रह्मा भी एक देवता हैं। ब्रह्मा का नाम वेद में आया है। नये धर्म ने इनको ईश्वर की

त्रिमूर्ति का एक रूप माना और यह परमेश्वर का वह रूप है जो सृष्टि रचता है। पुराण के दोही प्रधान देवता विष्णु और शिव हैं। कालिदास के समय में सर्वत्र यही धर्म फैला था और यही देवता पूजे जाते थे।

४—पुराण बहुत से हैं। इनमें बहुतेरे स्थान, पहाड़ और नदियों के अधिष्ठाता देवताओं की पुरानी कथायें लिखी हैं। बड़े प्रामाणिक पुराण १८ हैं। यह विक्रम के समय से तीन सौ बरस पीछे तक अर्थात् सन् ७०० ई० तक बने थे। १८ पुराणों में से ६ में विष्णु की ६ में शिव की और ६ में ब्रह्मा की महिमा का वर्णन हैं और सब के सब एक न एक देवता के नाम से प्रसिद्ध हैं।

५—जैसे पुराणों में देवताओं की कथायें हैं वैसे ही उस समय के बने हुए उन ग्रन्थों में जिनको धर्मशास्त्र कहते हैं मनुष्यों के धर्म कर्म आचार व्यवहार लिखे हैं।

६—इस समय को पौराणिक काल कह सकते हैं क्योंकि इन्हीं दिनों पुराण रचे गये थे। अब भी वही काल चला आता है क्योंकि हिन्दू धर्म अब भी उसी ढङ्ग पर चल रहा है जैसा पुराणों में दिखाया गया है।

१७—पौराणिक समय के हिन्दू महात्मा।

१—पौराणिक समय में कई हिन्दू महात्मा हुये जिन्हों ने विष्णु और शिव की पूजा के प्रचार में बड़ा परिश्रम किया। इन लोगों के उद्योग का यह परिणाम हुआ कि बुद्धमत हिन्दुस्थान से नष्ट हो गया और उसकी जगह हिन्दू धर्म स्थापित हो गया।

२—इन महात्माओं में सब से पहले शङ्कराचार्य्य हुए। इनका जन्म दक्षिण में समुद्र के तीर मलयवार देश में हुआ था।

कुमारिलभट्ट, जो बड़े पण्डित थे और बिहार से दखिन में बौद्ध धर्म को हटाने और अपना धर्म फैलाने आये थे, इनके गुरु थे; इन्हीं ने सारे भारतवर्ष में अपने धर्म की घोषणा की और केवल ३२ वर्ष की अवस्था में केदारनाथ तीर्थ पर जो हिमालय पहाड़ पर है परलोक सिधारे। यह शिवजी के उपासक थे और शिव और पार्वती की पूजा करते थे। पार्वती को हिन्दू लोग दुर्गा भी कहते हैं और तूरानी वंश के हिन्दू जो आर्य वंश से नहीं हैं इनको काली के नाम से पूजते हैं। दक्षिण में शङ्कराचार्यमतवाले स्मार्त के नाम से प्रसिद्ध हैं।

शङ्कराचार्य ने श्रीगिरि पर एक मठ बनाया था। यह पहाड़ी पश्चिमीय घाट का एक भाग है जो मैसूर राज्य में पड़ती है। यहां से तुंगा नदी निकलती है। स्मार्त सम्प्रदाय का गुरु अब भी इस मठ में रहता है और लाखों शैवों का आचार्य है। शङ्कराचार्य ने तीन मठ और बनाये थे,—एक हिमालय में बद्रीनाथ पर दूसरा काठियावाड़ के द्वारका तीर्थ में और तीसरा उड़ीसा की जगन्नाथ पुरी में।


रामानुज स्वामी।

३—स्वामी रामानुज का जन्म ११५० ई० के लगभग एक गांव में हुआ था। वह गांव अब नहीं है और उसकी जगह अब मद्रास नगर बसा है। लड़कपन ही में इनके पिता ने इनको कांची भेज दिया जिसको आज कल कांजीवरम् (काञ्चीपुरम) कहते हैं। कांची उस समय चोल वंश की राजधानी थी। यहां के प्रसिद्ध पण्डित और विद्वानों से शास्त्र पढ़कर त्रिचनापली के पास श्रीरंगपत्तन में आ पहुंचे

जहां उन्हों ने वैष्णव धर्म का प्रचार किया और इस धर्म की उन्नति करने के लिये संस्कृत भाषा में कुछ ग्रन्थ भी रच डाले।

४—कुछ दिन पीछे स्वामी रामानुज दक्षिण से चले और सारे भारतवर्ष में फिरे। जहां जाते शैवमत के विरुद्ध वैष्णव धर्म सिखाते। चोलाका राजा शैव था उसने इनको मरवाना चाहा। स्वामीजी इस पर मैसूर चले गये। यहां एक जैनी राजा थे। वह इनके उपदेश से श्रीवैष्णव हो गये। रामानुज ब्राह्मणों और ऊंची जाति के हिन्दुओं को उपदेश देते थे। इनके सम्प्रदायवाले श्रीवैष्णव कहलाते हैं और इनका गुरु कांची (कांजीवरम्) में रहता है।

रामानुज के १०० बरस पीछे इनके सम्प्रदाय में एक बड़े प्रसिद्ध महात्मा रामानन्द हुए जिन्हों ने उत्तर भारतवर्ष में विष्णु को परमेश्वर मानकर अपना धर्म चलाया। यह बनारस के रहनेवाले थे पर आस पास के देशों में बहुत घूमते थे और बहुधा नीच जातियों को उपदेश देते थे। इस सम्प्रदाय के ग्रन्थ हिन्दी भाषा में हैं। स्वामी रामानन्द के बारह चेले थे; सब के सब नीच जाति के थे।

कबीर साहिब का जन्म १३८० में हुआ और १४२० में इनका देहान्त हो गया। स्वामी रामानन्द के १२ चेलों में से एक यह भी थे। इन्हों ने भी अपने गुरु के मत के अनुसार विष्णु भगवान् को परमेश्वर माना और उन्हीं के भजन का उपदेश दिया। इनके समय में मुसल्मान उत्तर हिन्द में फैल गये थे। कबीर साहिब ने हिन्दू मुसल्मानों के धर्म को एक करने का बड़ा उद्योग किया।

५—कबीर साहिब जातिपांत के भेद और मूर्तिपूजा के विरोधी थे और मूर्तिपूजा को पातक मानते थे। दोनों विषयों पर

आप उपदेश देते फिरते थे। वह कहते थे कि ईश्वर एक है, हिन्दू मुसल्मान दोनों को उसकी बन्दगी करनी चाहिये ; ईश्वर घटघटव्यापी है, मन्दिरों और मसजिदों में नहीं रहता। कबीर



कबीर।

जी संसार के धंधों को मायाजाल कहते थे। उनका मत यह था कि जीवात्मा जब तक ईश्वर को पहिचान कर उसके प्रेम में मग्न न हो जाय उसको शान्ति नहीं मिल सकती। प्रसिद्ध है कि जब कबीर साहेब मरे तो हिन्दुओं ने कहा कि यह हिन्दू थे इनकी दाहक्रिया होनी चाहिये और मुसल्मानों ने कहा कि यह मुसल्मान थे इनको हम गाड़ेंगे ; जब कफ़न हटाकर देखा तो थोड़े से फूलों को छोड़ कुछ न था। आधे फूल हिन्दुओं ने लिये और अपने तीर्थ काशी में उन पर एक छतरी बनवा दी। आधे मुसल्मान ले गये और उन्हें धूम धाम से गाड़ दिया।

चैतन्य महाप्रभु १४०६ ई० में जन्मे और १५२७ में मर गये। यह विष्णु के उपासक और जगन्नाथजी के भक्त थे, और इन्हीं की भक्ति का उपदेश बङ्गाले और उड़ीसा में करते रहे। यह बङ्गाली ब्राह्मण थे पर इनके मरने पर इनके सम्प्रदायवाले इनको परमेश्वर का अवतार बताने लगे। बुद्धजी की नाईं इनका भी यह मत था कि परमेश्वर की भक्ति से ऊंची और नीची सब जाति के लोग पवित्र हो जाते हैं और परमेश्वर के छोटे से छोटे जीव को मारना महापाप है।

वल्लभ स्वामी १५२० ई० के लगभग उत्तर हिन्दुस्थान में प्रगट हुए। चैतन्य के पीछे इन्हीं ने भी विष्णु की उपासना का उपदेश किया। यह श्रीकृष्ण को विष्णु का अवतार बताते थे और कहते थे कि विष्णु उन लोगों से प्रसन्न नहीं होते जो तपस्या करते, व्रत रखते या घरबार छोड़ कर जङ्गलों और पहाड़ों में रहते हैं। भगवान उन्हीं से प्रसन्न रहते हैं जो संसार के विषयों को भोगते और सुख से अपने दिन बिताते हैं। इनके चेले बहुधा धनी साहूकार होते हैं जिनके पास भोग बिलास की सामग्री भी है और जो उसे भोगने की इच्छा भी रखते हैं।



वल्लभ स्वामी।

१८—राजपूत।

(६०० ई० से १२०० ई० तक)

१—आर्य और प्राचीन हिन्दुओं के समय में राजा सरदार और सिपाही क्षत्रियजाति के होते थे। बुद्धमत के समय में भी जैसे बुद्ध जी आप थे वैसे ही बहुधा राजा और सरदार क्षत्रिय थे। कोई कोई शूद्र भी थे जैसे चन्द्रगुप्त मौर्य और अशोक मौर्य। बुद्ध मत के समय के मध्य से ईसा से ५०० बरस तक पश्चिम और उत्तर भारत में सिथिया या शक जाति के राजाओं का राज रहा।

२—विक्रमादित्य के समय में सिथियावालों और क्षत्रिय राजाओं और राज्यों का नाम सुनने में नहीं आता। उनकी जगह ६०० ई०

से १२०० ई० तक जिधर देखो राजपूत राजाओं के राज्य दिखाई देते हैं। अब यह प्रश्न उठता है कि राजपूत कौन हैं ?

३—राजपूत कहते हैं कि हम क्षत्रिय हैं और श्रीरामचन्द्र जी से और प्राचीन काल के और क्षत्रियकुलों से हमारी वंशावली मिलती है। बहुतेरे विद्वानों का यह मत है कि यह दावा उनका ठीक है। राजपूत शब्दका अर्थ राजाओं का बेटा है। प्राचीनकाल के क्षत्रिय सचमुच राजाओं के बेटे पोते थे। यह समझ में नहीं आता कि एकाएकी क्षत्रियों की बली जात समूल नष्ट हो गई हो। किसी किसी विद्वान का यह बिचार है कि राजपूत सिथियन था शकजाति के लोग हैं जो ईस्वी सन् की पांचवीं शताब्दी में झुण्ड के झुण्ड हिन्दुस्थान के पश्चिमोत्तर भाग में आकर बस गये, या यूनान देश के रहनेवाले हैं जो शकों के पहिले हिन्दुस्थान में आकर रह गये थे। हमको यह ठीक जान पड़ता है कि राजपूतों की विशेष जातियां जो दिल्ली क़न्नौज और मध्यदेश में राज करती थीं निःसन्देह क्षत्रिय हैं। और जातियां जिनका नाम पहिले ही पहिल राजपूताना मालवा और गुजरात में सुनने में आता था जहां शक भीड़ के भीड़ धावा मारकर बस गये सिथियन वंशके हैं। राजपूतों की जाति बहुत ऊंची है; यह लोग बड़े बीर होते हैं और लड़ने मरने में बड़े मर्द हैं। वह बुद्ध के दयाधर्म को कब मानने लगे। बुद्ध का बचन है कि किसी जीव को न मारो न सताओ। राजपूतों ने भरसक ब्राह्मणों की सहायता की, बुद्ध मत को दबाया और पुराने हिन्दूमत को नये सिरे से फैलाया। जिस समय का हम हाल लिख रहे हैं उस समय में बहुत से राजपूत राजा हुए थे। इसी से हम ६०० ई० से १२०० ई० तक राजपूतों के राज्य का समय कह सकते हैं।

४—आर्यों के समय में गुजरात को श्रीकृष्ण की द्वारका कहते

थे। पीछे इसका नाम सोरठ या सौराष्ट्र हुआ। यहां ४१६ ई० से अनुमान ३०० बरस तक वल्लभी कुल के राजा राज करते थे। जब चीनी यात्री ह्वीनच्वांग सौराष्ट्र में आया तो उसने सौराष्ट्र को बड़ा शक्तिमान राज पाया और उस समय में यहां वल्लभी कुल के राजा राज करते थे। देश भरा पुरा था और प्रजा प्रसन्न थी और दूर दूर देशों से व्यापार होता था। ७४६ ई० से मुसलमानों की बादशाही तक सौराष्ट्र पर राजपूतों का अधिकार रहा। यह लोग चालुक्य कहलाते थे और अन्हलवारा या अन्हलपत्तन जिसको अब केवल पत्तन कहते हैं इनकी राजधानी थी।

५—मालवे में विक्रमादित्य की सन्तान का राज्य रहा। इस वंश में विक्रमादित्य के पीछे सब से बड़ा राजा शीलादित्य दूसरा हुआ जिसका हाल ह्वीनच्वांग के लेखों से जाना जाता है। इनके पीछे राजपूत आये। और तब से मालवा की गिनती राजपूतों के बड़े बली राज्यों में होने लगी।

६—प्राचीन समय में उड़ेसा अंध्र राज्य के नाम से प्रसिद्ध था। ४७४ ई० तक यहां केशरीवंश के राजपूत राज करते थे। इनकी राजधानी भरोनेश्वर में थीं जहां उन्हों ने बड़े बड़े सुन्दर मन्दिर बनवाये। इस वंश के पहिले राजा का नाम व्यातकेशरी था। प्राचीन काल में उड़ेसे में बुद्ध धर्म प्रबल था। पर केशरियों की राजधानी के नाम से सिद्ध होता है कि उनके समय में सारे देश में हिन्दू धर्म का प्रचार था और शिवजी की पूजा होती थी। केशरी राजाओं के पीछे गंगापुत्र वंश का अधिकार हुआ। यह भी राजपूत थे। ११३२ ई० से १५३४ ई० तक उड़ेसा में इनका राज रहा। गंगापुत्र विष्णु के उपासक थे। पुरी में जगन्नाथ जी का प्रसिद्ध मन्दिर इसी कुल के एक राजा का बनवाया हुआ है।

७—नर्मदा नदी से कृष्णा नदी तक दक्खिन देश में ५०० ई०

से १२०० ई० तक चालुक्य राजपूत शासन करते थे। इस वंश की दो शाखाएं थीं; पूर्वीयशाखा की राजधानी गोदावरी नदी के तीर पर राजमहेन्द्री और पश्चिमीय की महाराष्ट्र देश में कल्याण नगरी थी। अब इन राजाओं के नामही नाम रह गये हैं।

८—मैसूर देश ९०० ई० से १३१० ई० तक बल्लालवंश राजपूतों के हाथ में रहा। द्वारसमुद्र इनकी राजधानी थी। यहां उन्होंने हलीबेद का प्रसिद्ध मन्दिर बनवाया। मुसल्मानों ने इनको जीत कर देश अपने अधिकारों में कर लिया।

९—तिलङ्गाने में ११०० ई० से १३२३ ई० तक ककाती वंश के राजपूत राज करते थे। उनकी राजधानी वारङ्गल थी। १३२३ ई० में मुसल्मानों ने वारङ्गल ले लिया और उसको अपनी राजधानी बनाकर गोलकुंडे का राज स्थापित किया।

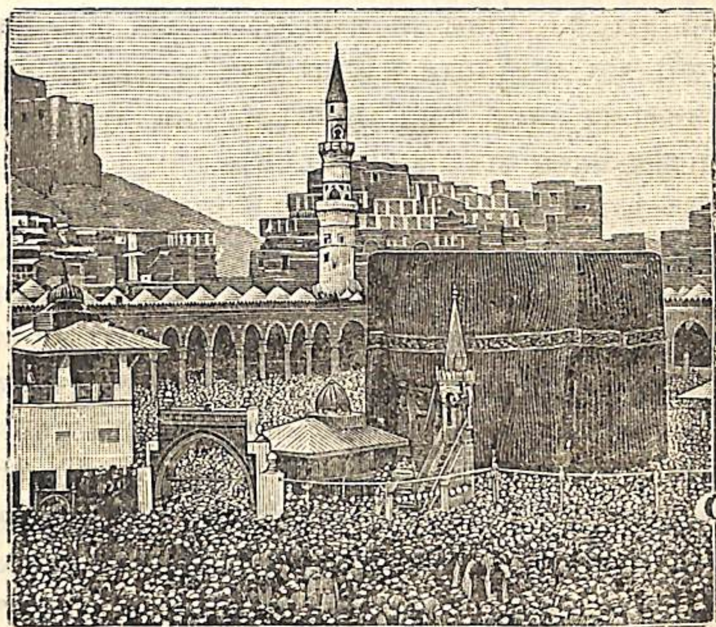
१०—बंगाले में ५०० बरस तक पाल और सेन वंश के राजा राज करते थे। ८०० ई० से लेकर १०५० ई० तक पाल राजाओं ने राज किया और १०५० ई० से १३०० ई० तक सेनवंश का अधिकार रहा। इसके पीछे यह देश मुसल्मानों ने जीत लिया।

११—देवगिरि जो महाराष्ट्र में है वहां ११०० ई० से १३०० ई० तक यादव वंशी राजपूत राज करते थे और यह कहते थे कि हम श्रीकृष्ण की संतान हैं। १३०० ई० के लगभग मुसल्मानों ने देवगिरि को जीतकर उसका नाम दौलताबाद रख दिया।

१२—राठौर चौहान और तोमर राजपूतों के प्रसिद्ध वंश हैं। ११९० ई० के लगभग कन्नौज अजमेर और देहली में इनका शासन था। ११९० ई० में ग़ोर मुसल्मान भारतवर्ष में आ गये।

१६—मुसलमान ।

१—अरब देश का बहुत बड़ा भाग ऊसर और बंजर है। यहां न नदी है न झील। सारा देश रेत से ढका है। कहीं कहीं हरा भरा टुकड़ा भी मिल जाता है जहां घास उगती है और कुंए या सोतों से पानी मिल जाता है। अगले समय में इस देश में



काबा-मक्का।

अगली जातियां बसी थीं और वह अपने रेवड़ां और गल्लों के लिये घास चारे की खोज में घर बार साथ लिये एक जगह से दूसरी जगह और दूसरी जगह से तीसरी जगह फिरा करती थीं।

लोग सब जंगली थे। एक दूसरे से लड़ा करते थे। इनके आचार व्यवहार भी बुरे और पशुओं के से थे।

२—ईसा से अनुमान ६०० बरस पीछे अरब में एक नबी (ईश्वर के दूत) प्रगट हुए। इनका नाम महम्मद था। अरब देशवालों के बुरे आचार देख कर इनका जी बहुत कुढ़ा और उनके सुधारने के लिये उनसे जो कुछ हो सका इन्होंने किया। इनका उपदेश यह था कि ईश्वर एक है, मूर्तिपूजा पाप है, आपस में लड़ना बुरा है। पहिले तो अरबवालों ने इनकी बात ध्यान से न सुनी और उनको मारने के बिचार में रहे पर कुछ दिन बीतने पर उनका द्वेष कम हो गया। बहुतेरों ने अपनी मूर्त्तियां तोड़ डालीं और पैग़म्बर साहब के साथ हो गये।

३—अरब के जो कुल अपने पुराने आचार छोड़ना न चाहते थे उन्हों ने महम्मद साहब और उनके अनुगामियों को बहुत सताया पर अन्त को वह भी परास्त हो गये और ६३२ ई० तक जिस साल महम्मद साहब का अन्तकाल हुआ सारा देश उनके बस में हो गया। जिस धर्म का प्रचार महम्मद साहब ने किया उसको इसलाम कहते हैं और इस धर्म पर चलनेवाले मुसलमान या मुसलिम कहलाते हैं। मुसलमान अपने क़ुरान को परम पवित्र आकाश से उतरी किताब मानते हैं और कहते हैं कि इसलाम धर्म का प्रचार ६२२ ई० से हुआ जब महम्मद साहब मक्के से मदीने चले गये थे। इस प्रवास को हिजरा या हिजरत कहते हैं और हिजरी सन तभी से शुरू होता है। मुसलमानों का विश्वास है कि ईश्वर एक है महम्मद साहब उसके दूत हैं। ईश्वर के सामने सब मुसलमान बराबर हैं और भाई भाई हैं। इसलाम में हिन्दुओं की सी जातिपांत नहीं है।

४—जब अरब के सब रहनेवाले मुसलमान हो गये और एक

हाकिम के आधीन हो गये तो उनकी एक बड़ी प्रबल जाति बन गई। आपस में लड़ना कटना बन्द हो गया था तौभी बड़े बीर लड़ाके थे। इसलाम दीन से उनके मन में बड़ा उत्साह हो गया और यह समाया कि और देशों में अपने धर्म का प्रचार करें। जो लोग खुशी से मुसलमान हो जायं उनको भाई समझें और उनके साथ अच्छा बरताव करें। ईश्वर धर्म की लड़ाई (जिहाद) से खुश होता है और जो मुसलमान जिहाद में मारे जाते हैं वह सीधे बिहिश्त (वैकुंठ) जाते हैं। और जो लोग आधीन होने पर अपना धर्म न बदलें उन्हें एक महसूल देना पड़ता है जिसका नाम जिज़िया है।

५—अरबवाले पहिले उन देशों की ओर चले जो उनके उत्तर थे और उन्हें सहज ही जीत लिये। लट खसोट का बहुत सा धन उनके हाथ लगा तो उनको यह चाह हुई कि और देश जीतें। परिणाम यह हुआ कि देश पर देश जीत लिये गये और सौ बरस के भीतर फ़ारस, तुर्किस्तान, अफ़ग़ानिस्तान और आस पास के सारे देश जो दारा और अफ़रासियाब के आधीन थे उनके बस में आ गये और उनके रहनेवाले मुसलमान हो गये।

६—फ़ारस में कुछ लोग ऐसे भी थे जो अरबवालों के आधीन न हुए और न जिन्हों ने इसलाम धर्म अङ्गीकार किया और फ़ारस से निकल कर भारतवर्ष में चले आये। यह लोग १२०० बरस से यहीं बसे हैं और पारसी कहलाते हैं और पुराने आर्यों की तरह आग को परमेश्वर की ज्योति समझते हैं। पारसी बम्बई हाते में समुद्र के तीर नगरों में रहते हैं; बड़े नेक शांति चाहनेवाले और चतुर व्यापारी हैं और धर्म और देशहित में बहुत सा धन खर्च करते हैं।

७ - जो देश हिन्दुस्थान के उत्तर थे उनमें भी अरबवालों ने

लूट पाट शुरू की और फ़ारस और तातारवालों को इतना अवकाश न दिया कि हिन्दुस्थान पर धावा मारें। इस कारण कई सौ बरस तक हिन्दुस्थान इनकी चढ़ाइयों से बचा रहा।

२०—महमूद ग़ज़नवी।

(९९७ ई० से १०३२ ई० तक)

१—अब से ९०० ई० पहिले अफ़ग़ानी और तुर्किस्तानी जातियां भारत में उसी तरह आ रही थीं जैसे पहिले कभी आर्य यूनानी या सिथियन आये थे। इस समय अरबवालों को पूर्व और उत्तर देशों के जीतने के लिये घर से निकले ३५० बरस बीत चुके थे। तुर्किस्तान, फ़ारस और अफ़ग़ानिस्तान के रहनेवाले सब मुसलमान हो गये थे। अरबवालों के बहुत कुल उनमें बस गये थे। इन लोगों के मन में भी वही उत्साह था जो अरबवालों में था।

२—इस समय अफ़ग़ानिस्तान का बड़ा शहर ग़ज़नी था और एक तुर्क जिस का नाम महमूद था यहां का बादशाह था। इसका बाप पंजाब के राजा जयपाल से कई बार लड़ा और उसको जीत कर ग़ज़नी और सिन्ध के बीच का राज्य अपने आधीन कर लिया। भारत की गिनती उस समय संसार में धनी और भरे पूरे देशों में होती थी। इस के व्यापार की श्रेणी अपने पड़ोस के देशों से मिलती हुई यूरोप तक पहुंचती थी। बड़ा बड़ा महंगा सामान यहां से ऊंटों पर लदकर अफ़ग़ानिस्तान के दर्रों की राह दूर दूर देशों में जाता था। महमूद ने अपने लड़कपन ही से ऐसे व्यापारी अपने बाप के राज्य से होकर जाते देखे थे। व्यापारियों से बातें किया करता था, और वह इस से कहा करते थे कि हिन्दुस्थान में बड़े बड़े शहर हैं, और बड़े बड़े

मन्दिर हैं जिनके धन सम्पत्ति का वारापार नहीं। महमूद यह कहता था कि जब मैं बड़ा होकर बादशाह हो जाऊंगा तो हिन्दू राजाओं से लड़ूंगा।

३—तीस बरस की उमर में महमूद सिंहासन पर बैठा। और जो कुछ यह पहिले कहा करता था वह सब इसने करके दिखा दिया। जब तक बरसात रही और दर्रे बरफ़ से भरे ढके थे यह चुप चाप बैठा रहा। इस के पीछे दल बादल से भारत पर चढ़ आया और लूट का माल लाद कर ले जाने को बहुत से ऊंट और घोड़े अपने साथ लाया। भारत में आते ही उसने देखा कि जयपाल जो उसके बाप से लड़ चुका था उसका सामना करने को तैयार है। पर महमूद और उसके पठान साथियों ने जयपाल को भगा दिया और बहुत सा धन लूटकर गज़नी ले गया। जयपाल ग्लानि के मारे अपना राज अपने बेटे अनङ्गपाल को सौंप कर आप जीते जी चिता पर बैठ गया और जलकर मर गया।

४—अनङ्गपाल ने देखा कि हिन्दुस्थान को हर घड़ी बाहरी दुष्टों का डर है। उसने उज्जैन, गवालियर, कन्नोज, दिल्ली और अजमेर के राजाओं के पास यह सन्देश भेजा कि महमूद अगले बरस फिर भारत पर धावा मारेगा; सब लोग मिलकर उसका सामना करें। राजाओं ने मान लिया और राजपूत दलबादल समेत पंजाब में पहुंच गये। पर ठंडे देश के पठान गरम देश के रहनेवाले राजपूतों से अधिक बली थे। लड़ाई में राजपूतों के पैर उखड़ गये। महमूद ने आगे बढ़कर नगरकोट का मन्दिर लूटा; चांदी सोना हीरा मोती के ढेर जो बरसों से धार्मिक हिन्दुओं के चढ़ाये थे सब लूट खसोट कर ग़ज़नी ले गया।

५—ग़ज़नी पहुंच कर महमूद ने बड़े भारी भोज का सामान

किया। सारे अफ़गानों को बुलाया; तीन दिन तक सब की दावत की और हिन्दुस्थान से जो हीरा मोती रेशम, कमख़ाब, सोना, चांदी लूट कर ले गया था चौकियों पर सजाकर सब को दिखाया। सरदारों और अमीरों का तो कहना ही क्या है उन को बड़े दाम की चीजें भेंट दी गईं पर ग़रीब अफ़गान भी कोई ऐसा न था जो उस दावत से खाली हाथ गया हो और जिसने अच्छी भेंट न पाई हो।

६—महमूद ऐसी ही रीति से लालच दिखा कर फुसलाकर पठानों को हिन्दुस्थान पर चढ़ा कर लाया था। परिणाम यह हुआ कि उसके उत्साह का समुद्र उमड़ा पड़ता था। जब जब आता उसके पांव आगे ही पड़ते थे। जहां कहीं किसी धनी, शहर या मन्दिर का पता पाता अपनी पल्टन लेकर चढ़ दौड़ता; मन्दिर ढहवा दिये, मूर्तियां तोड़ीं; पुजारियों का सैकड़ों बरस का जोड़ा बटोरा धन लूट लिया। राजपूत राजा आपस में लड़ते थे पर मन्दिरों के माल पर हाथ न डालते थे। इस कारण हज़ारों बरस से मन्दिरों में ढेर का ढेर धन इकट्ठा हो गया था। ईरानी और अफ़ग़ान इस धन को लूटने के लिये उधार खाये बैठे थे। जहां महमूद ने हिन्दुस्थान पर धावा मारने के लिये पल्टन इकट्ठी करने का हुकुम दिया यह लोग आंधी की तरह उठे और चले आये। फिर महमूद की चढ़ाइयों में पल्टन न बढ़ती तो क्या होता।

७—महमूद सब से पिछली बार १०२४ ई० में हिन्दुस्थान पर चढ़ आया और सोमनाथ के मन्दिर पर पहुंचा। यह गुजरात देश में बहुत पुराना और बड़ा मन्दिर था; और अपने असंख्य धन के लिये हिन्दुस्थान में प्रसिद्ध था। सिन्ध के रेतीले देश में साढ़े तीन सौ मील की यात्रा करके महमूद इस मन्दिर पर चढ़

दौड़ा और हिन्दुओं की एक बड़ी सेना को जो इस मन्दिर के बचाने के लिये उसके सामने आई थी मार कर भगा दिया। जब वह मन्दिर में घुसा तो पुजारियों ने डरते कांपते यह बिनती की कि आप हमारे देवता की मूर्ति को छोड़ दें तो हम आप को बहुतसा धन दें। महमूद ने न माना और बोला कि मैं मूर्ति तोड़ने आया हूं मूर्ति बेचने नहीं और इतना कहकर उसने अपनी लोहे की गदा इतने ज़ोर से मारी कि मूर्ति के टुकड़े टुकड़े हो गये।

८—यहां से अफ़ग़ानिस्तान लौट जाने के पीछे महमूद मर गया। यह आप भारत में न ठहरा पर एक सेनापति को पंजाब का हाकिम बना कर लाहौर में छोड़ गया। हिन्दू लोगों ने डेढ़ सौ बरस तक इस देश से मुसलमानों के निकालने का उपाय किया। पर महमूद के स्थानापन्न पठान लाहौर में जमे बैठे रहे और पंजाब से बढ़ते बढ़ते गङ्गा के मैदान में पहुंचे और वहां के बड़े बड़े नगर उन्होंने लूट लिये। इन बादशाहों की दो राजधानियां थीं। एक ग़ज़नी दूसरा लाहौर।

९—महमूद बड़ा वीर था और अपने समकालीन पठानों की तरह निर्दयी और दुष्ट न था, लड़ाई के बन्दियों को मारता न था। अफ़गानिस्तान के राज्य का प्रबन्ध उसने बहुत अच्छा किया। हिन्दुस्थान के धन से उसने ग़ज़नी नगर में बड़ बड़े महल और मकान बनवाये और उसकी शोभा बढ़ाई। बहुत से कवि और गुणी लोग दूर देशों से ग़ज़नी में आकर बसे। पर वह लोभी और कंजूस था। फ़िर्दौसी कवि के साथ जो उसने चाल चली वह बड़ी ही अनुचित थी। महमूद ने फ़िर्दौसी से शाहनामा रचने को कहा और एक शेर पीछे एक अशर्फी देने की प्रतिज्ञा की। तीस बरस कड़ा परिश्रम कर फ़िर्दौसी साठ हज़ार शेर लिख लाया

महमूद एक पुस्तक के लिये साठ हज़ार अशर्फ़ियां देने में आगा पीछा करने लगा और अशर्फ़ियों के बदले साठ हज़ार चांदी के दीनार देने लगा। फ़िर्दौसी ने दीनार लेना स्वीकार न किया और निराश होकर अपने देश को चला गया। कुछ दिन पीछे महमूद अपनी चाल पर पछताया और साठ हज़ार अशर्फियां देकर एक दूत को फ़िर्दौसी के घर भेजा। कहते हैं कि जिस घड़ी महमूद का दूत अशर्फियां लेकर शहर में पहुंचा उसी घड़ी फ़िर्दौसी का अन्तकाल हो गया।

२१—महम्मद ग़ोरी।

(११८६ ई० से १२०६ ई० तक)



महम्मद ग़ोरी।

१—ग़जनी में तुरकी वंश के बादशाहों को राज करते १५० बरस भी न बीते थे कि ग़ोर के अफ़गानों ने उनको जीत लिया। ग़ोर अफ़गानिस्तानके उत्तर-पश्चिम में एक छोटा सा देश था। इस समय यहां का बादशाह महम्मद शहाबुद्दीन था जो इतिहास में महम्मद ग़ोरी के नाम से प्रसिद्ध है। महमूद गज़नवी की तरह यह भी बड़ा बीर और लड़ाका था। यह भी जब तक जिया उत्तर हिन्दुस्थान पर धावा मारता रहा पर इसका मतलब यह न था कि नगरों मन्दिरों को लूटें। यह देश जीतकर राज करना चाहता था।

२—इस समय उत्तर हिन्दुस्थान में राजपूतों के चार बड़े बड़े

राज थे। तोमरों की राजधानी दिल्ली, चौहानों की अजमेर, राठौरों की कन्नौज और बघेलों की गुजरात। दिल्ली के तोमर राजा के कोई बेटा न था। उसने अपने नाती पृथ्वीराज को जो रूपवान, बीर और चौहानों का सिरताज था गोद ले लिया। जब दिल्ली का राजा मरा तो पृथ्वीराज दिल्ली और अजमेर का स्वामी हो गया। राजा जयचन्द भी दिल्ली के तोमर राजा का नाती था। पृथ्वीराज के गोद लिये जाने से उसने अपनी बड़ी हानि समझी और पृथ्वीराज से जलने लगा।


पृथ्वीराज।

३—शहाबुद्दीन ने ११९१ ई० में भारत पर पहिले पहिल चढ़ाई की और सीधा दिल्ली की ओर चला। पृथ्वीराज बहुतसे राजपूत राजाओं के साथ एक बड़ी राजपूत सेना लेकर दिल्ली से अस्सी मील उत्तर थानेश्वर के स्थान पर शहाबुद्दीन से मिला। राजपूतों ने बड़ी बीरता दिखाई और अफ़गान हार गये। शहाबुद्दीन बड़ी कठिनाई से अपने प्राण लेकर भागा राजपूतों ने ४० मील तक अफ़गानों का पीछा किया। जो अफ़गान जीते बचे सिन्धु के पार भाग गये।

४—शहाबुद्दीन के जाने के पीछे कन्नौज के राजा जयचन्द ने अपनी बेटी संयोगिता का स्वयंवर रचा। बड़े बड़े राजा और सरदार इकट्ठा हुए और संयोगिता को आज्ञा दी गई कि जिसे चाहे अपना बर चुने। इसी अवसर पर जयचन्द ने राजाधिराज होने का दावा किया और सारे राजपूत राजाओं को अपना आधीन मानकर सब के नाम न्योता भेजा। इस उत्सव में पृथ्वीराज

द्वारपाल बनाया गया। पृथ्वीराज जयचन्द की बेटी को चाहता था। पाहुने की तरह बुलाया जाता तो उसके आने में संदेह ही क्या था। पर यह बड़ा अभिमानी था। द्वारपाल बनकर जाना स्वीकार न किया। उत्सव के दिन जब पृथ्वीराज न आया तो जयचन्द ने उसकी मूर्ति बनवाकर महल के फाटक पर खड़ी कर दी। स्वयंवर होने लगा। जो राजा दूर देश से इस आसरे में आये थे कि संयोगिता हमको बरेगी एक पांति में खड़ हो गये और संयोगिता को आज्ञा दी गई कि उनके बीच से चले और जिसे चाहे वर ले। संयोगिता के हाथ में फूलों की माला थी। वह बर देखती भालती पांति के एक सिरे से दूसरे सिरे तक चली गई और फाटक पर जाकर पृथ्वीराज की मूर्ति के गले में उसने माला डाल दी। पृथ्वीराज भेस बदले अपने कुछ सिपाही साथ में लिये वहीं उपस्थित था। तुरन्त मण्डप में घुस गया और संयोगिता को अपने घोड़े पर बैठाकर दिल्ली की ओर ले उड़ा।

५—जयचन्द पृथ्वीराज से लड़ा पर उसे जीत न सका। तब उसने क्रोध में आकर नीचपने से शहाबुद्दीन के पास सन्देसा भेजा कि आप एक बार दिल्ली पर फिर चढ़ाई करें और मैं आपकी मदद करूंगा। शहाबुद्दीन पहलेही से बड़ी पलटन जमा किये बैठा था; और उसने ग़ोरी सरदारों और सेनापतियों को बहुत ही झिड़का था जो थानेश्वर के मैदान से भाग निकले थे; तोबड़ों में जौ का दाना भरवा कर उनके मुंह बन्धवाया और गदहों की तरह उनको शहर से निकलवा दिया था। जयचन्द का सन्देसा पाकर ११९३ ई० में फिर दिल्ली की तरफ़ चला। डेढ़ लाख सिपाही अच्छे अफ़गानी घोड़े पर सवार इसके साथ थे। अबकी बार जयचन्द और राठौर राजा पृथ्वीराज की सहायता को न आये। पृथ्वीराज अपने चौहानों को लेकर थानेश्वर के मदान में फिर

शहाबुद्दीन से भिड़ा। चौहान अपने राजा और देश के नाम पर जी तोड़ कर लड़े पर महाबीर और जानपर खेलनेवाले अफ़गानों ने उन्हें जीत लिया। राजपूत तितिर बितिर होकर भागे और पृथ्वीराज मारा गया। पृथ्वीराज की रानी जयचन्द की बेटी अपने पति के साथ चिता पर जलकर सती हो गई। महम्मद ग़ोरी ने पहिले दिल्ली पर दखल किया पीछे अजमेर पहुंचा और बहुत सा लूट का माल लेकर ग़ज़नी चला गया। कुतुबुद्दीन उसका नायब भारत के उन प्रान्तों पर राज करने के लिये जो महम्मद ग़ोरी ने जीते थे यहीं रह गया।

६—शहाबुद्दीन ११९४ ई० में फिर भारत में आया और अबकी बार कनौज के राजा जयचन्द पर चढ़ दौड़ा। जयचन्द बड़ी बीरता से लड़ा पर बिना चौहानों की सहायता के वह पठानों को न हरा सका और पृथ्वीराज की तरह वह भी मारा गया। ग़ोरियों ने कन्नौज और बनारस ले लिया। और नगरों की कौन गिनती है अकेले बनारस में मुसलमानों ने एक हज़ार मन्दिर नष्ट कर दिये और चार हज़ार ऊंटों पर लूट का माल लाद ले गये।

७—राठौर और उत्तरीय भारत की अनेक राजपूत जातियां गंगा यमुना के आस पास के देशों से जहां इनके पुरुषा डेढ़ सौ बरस से बसते थे इस समय अपना परिवार और माल असबाब लेकर दक्षिण और पश्चिम मारवाड़ और अरवली पहाड़ के पास के देश में जा बसीं। उन्हीं के कारण अब यह देश राजपूताना कहलाता है।

८—महम्मद ग़ोरी और उसके सेनापतियों ने लग भग सारा उत्तरीय हिन्दुस्थान जीत लिया। उन में से एक ने जिसका नाम बख़्तियार खिलजी था ११९९ ई० में अवध और बिहार को और १२०३ ई० में बङ्गाले को जीता। इस समय बङ्गाले को

राजधानी एक नगर लखनौती था। अफ़गानोंने बदल कर अपने देश के नाम पर इसको ग़ोर की पदवी दी और वह बिगड़ कर गौड़ बङ्गाला हो गया। बूढ़ा बङ्गाली राजा लछमणसेन बड़ी कठिनाई से ग़ोरियोंके हाथ से बचा। वह खाना खा रहा था जब अफ़गान महलों में घुस आये और उसे पकड़ ही लेते कि वह एक चोर दरवाज़े से निकल भागा और उड़ैसा पहुंचा। वहां उसने अपना जन्म जगन्नाथ की सेवा में बिता दिया। इसके पीछे ग़ोरियों ने पहिले गुजरात के बघेले राजपूतों को परास्त किया फिर गवालियर ले लिया; पर मालवा न जीत सके।

९—भारत की अन्तिम लड़ाई के पीछे महम्मद ग़ोरी पञ्जाब की राह अपने देश को लौटा जा रहा था कि एक पहाड़ी जाति के लोग जिन्हें घखर कहते हैं रातको इसके डेरे पर टूट पड़े और इसको मार डाला। ग़ोरी के साथी इसकी लाश को ग़जनी ले गये और वहीं उसे गाड़ दी। उसके पीछे उसका नायब कुतुबुद्दीन भारत के जीते हुए प्रान्तों का स्वतंत्र अधिकारी होकर दिल्ली का सुलतान बन गया। महम्मद ग़ोरी भारत का पहिला जीतनेवाला था। महमूद ग़जनवी की नाईं इसका अभिप्राय यह न था कि लूट खसोट कर ग़ज़नी में जा बैठे। यह भारत पर शासन करने आया था और इसकी मनोकामना पूरी हुई।

२२—पठान बादशाह।

(१२०६ ई० से १५२६ ई० तक)

१—१२०६ से १५२६ ई० तक ३२० बरस अफ़ग़ान बादशाहों ने दिल्ली में राज किया। इन में बहुतेरे पठान वंश के थे इस से हिन्दू सब को पठान कहते हैं। यह लोग अफ़गानिस्तान

से आये थे। यह सब एक ही क़बीले (कुल) के न थे। इन के पांच वंशों ने बादशाही की; (१) गुलाम (दास) (२) ख़िलजी (३) तुग़लक (४) सैयद (५) लोधी।

२—मुसलमानों ने एक एक करके हिन्दुओं के सब राज छीन लिये। पठानों के समय में सदा कहीं न कहीं लड़ाई होती रही। हिन्दू भी कट कट कर लड़ते थे और मुसलमानों को सहज में राज न देते। इन में कई राज ऐसे भी हैं जो कभी जीते न गये। तुर्कों तातारियों अफ़गानियों के झुंड के झुंड चले आते थे और देश दबाते जाते थे। यह नये आये विलायती कहीं हिन्दुओं से भिड़ जाते और कहीं उन भाइयों से लड़ते थे जो पहिले आकर हिन्दुस्थान में बसे थे।

३—जिस के पास रुपया पैसा गहना होता था वह उसे गड़हा खोद कर गाड़ देता था। यह डर लगा रहता था कि कदाचित् कोई बैरी आये और छीन कर ले जाय। हम लोग जो आज कल सुख चैन से दिन व्यतीत कर रहे हैं अनुमान भी नहीं कर सकते कि पठानों के समय में भारत पर कैसी कैसी आपत्तियां आई थीं। हिन्दुओं के पुराने पुराने मन्दिर बहुधा तोड़ दिये गये थे। बहुतसी उपजाऊ भूमि बे खेती बारी के पड़ी थी। इसका कारण यह था कि बेचारे निर्धनी किसान अपने प्राणों के भय से बनों में भाग गये थे। बहुत से हिन्दू मुसलमान हो गये। इनमें से कुछ तो इस आशा पर मुसलमान हुए थे कि बिजयी जाति की सेना और उनके दफ़तरों में उच्च पद को प्राप्त हों और बहुतेरे प्राणों के भय से। इसी कारण पठानों के समय में बहुत से सुप्रसिद्ध सरदार ऐसे थे जो वास्तव में हिन्दू थे पीछे मुसलमान हो गये थे।

४—जिस भांति प्राचीन काल में आर्य लोग पंजाब से यमुना

और गंगा के उत्तर में बढ़ते बढ़ते पूर्व की ओर गये थे उसी भांति तुर्कों अफ़ग़ानों और ईरानियों ने इस समय सिंधु नदी से चलकर पूर्व की ओर जाकर दिल्ली अवध बिहार और बंगाले के सूबों को आधीन किया। १२०६ ई० में कुतुबुद्दीन दिल्ली की राजगद्दी पर बैठा और उसी दिन से धीरे धीरे सारा भारत मुसलमानों के राज में आ गया। बहुत से मनचले ईरानी और तुर्किस्तानी यह सुनकर कि उनके मित्र, देशबन्धु जो भारत गये थे धन सम्पत्ति प्राप्त करके वहीं बस गये हैं अपने देशों को छोड़ भारत में चले आये और अपने भाग्य को परखने लगे। मुसलमान सम्राटों और प्रान्ताधिकारियों ने उनको भूमि आदि देकर बसा लिया। आजकल उत्तरीय भारत में जो बहुत से प्रसिद्ध मुसलमानी वंश हैं इसी प्रकार इस देश में आकर बसे थे। छोटे छोटे मुसलमान सरदार अपने अपने साथियों को लेकर भारत में चारों ओर से निकल पड़े और इसी प्रकार रियासतें बना बैठे। जब तक दिल्ली का सम्राट बीर और बलवान रहा यह लोग उसे कर देते और उसकी सेवकाई का दम भरते रहे। परन्तु जब वह दुर्बल हो गया तो जितने रईस थे सब स्वाधीन बन गये और कोई किसी का आधीन न रहा।

२३—गुलामों का वंश।

(१२०६ ई० से १२९० ई० तक)

१—इस वंश में ९ बादशाह और एक मलका हुई है। इन सबों ने ८४ वर्ष राज किया। इन में से बहुतों ने बहुत थोड़े दिन राज किया। इन में से पांच अधिक प्रसिद्ध हैं।

२—इस वंश का पहिला बादशाह कुतुबुद्दीन था। यह

वास्तव में तुर्क था और बाल्यावस्था से ही दास बना दिया गया था। उस समय मुसलमानी देशों की यह रीति थी कि जो लोग युद्ध क्षेत्र में बंदी किये जाते थे वह दास बना लिये जाते थे और दूर देशों में जाकर बिकते थे; और मुसलमान कर लिये जाते थे। वह अपने देश और साथियों से दूर होने के कारण अपने स्वामी के वंश को अपना ही समझते थे और उनकी भलाई मानते अपना जन्म काटते थे। दास कम उमर होता और स्वामी के कोई सन्तान न होती तो वह कभी कभी गोद भी ले लिया जाता था। कुतुबुद्दीन इसी नाते से अपने स्वामी के कुटुम्ब में आया था और होते होते पहिले सेनापति हुआ फिर बादशाह बना। यह गुलामवंश का पहिला बादशाह था। इस वंश का यह नाम होने का मुख्य कारण यह है कि इस में से बहुधा कुतुबुद्दीन की भांति पहिले दास ही थे।


कुतुबुद्दीन।

३—कुतुबुद्दीन एक बीर योद्धा और योग्य सेनापति था; अपने आधीन अफसरों के साथ भलाई करने और उन को धन और सम्पत्ति देने पर ऐसा तत्पर रहता था कि लोग उसको चश्मये फ़ैज़ (अर्थात दान का सोता) कहते थे। दिल्ली के निकट उसने वह देखने योग्य मीनार बनाना आरम्भ कर दिया जो अब तक कुतुब मीनार के नाम से प्रसिद्ध है।

४—इस वंश का तीसरा बादशाह अलतमश था जो अपने

वंश के सब बादशाहों से विशेष प्रसिद्ध हुआ है। इस ने १५ बरस राज किया। कुतुबुद्दीन की तरह यह बाल्यावस्था ही से गुलाम बना परन्तु इसने अपनी भलमंसी और बुद्धिमानी से अपने स्वामी को इतना प्रसन्न कर लिया कि इसने उसको अपनी बेटी ब्याह दी। कुतुबुद्दीन की मृत्यु के पीछे इसने उसके बेटे आरामशाह को मारडाला और राज का स्वामी बन बैठा। कुतुबुद्दीन का नायब बख़्तियार ख़िलजी कुतुबुद्दीन की ओर से बिहार और बंगाले का स्वामी था। कुतुबुद्दीन की एक बेटी उस से भी ब्याही थी। कुतुबुद्दीन के मरने पर उसने सोचा कि मैं क्यों अलतमश के आधीन रहूं और बंगाले का स्वाधीन स्वामी क्यों न बन जाऊं। अलतमश और बख़्तियार ख़िलजी में लड़ाई हुई। अलतमश जीत गया और बख़्तियार को मार कर उसने अपने बेटे को बंगाले का स्वामी बनाया।

५—सिंध के स्वामी ने भी अलतमश की आधीनता से मुख मोड़ा। इसी ने सिंध जीता था और मुहम्मद ग़ोरी के समय से वहां का स्वामी चला आता था अब इसने भी सिंध देश का स्वाधीन बादशाह होना चाहा पर अलतमश से लड़ाई में हार गया। सिंधु नदी पार भागना चाहता था कि वह और उसका कुटुम्ब नदी में डूब गया।

६—इस के पीछे अलतमश ने मालवा और गुजरात के राजपूतों पर चढ़ाई की; ६ बरस तक उनके साथ लड़ा। अंत को उनको भी आधीन कर लिया और फिर दिल्ली को लौट आया और यहीं १२३२ ई० में मर गया। वह सुन्दर मीनार जिसे कुतुब साहेब की लाट कहते हैं कुतुबद्दीन के समय में बनने लगा परन्तु अलतमश के समय में पूरा हुआ।

७—जिस समय में अलतमश दिल्ली का स्वामी था, तातार

का प्रसिद्ध सरदार चंगेज़ ख़ां जो बौद्ध था अपने भयानक और कुरूप सिपाहियों को लेकर मंगोलिया से आंधी की भांति उठा और बहुतसे मुसलमानी राज्यों को उसने परास्त कर लिया। यह सिंधु नद तक आ गया था और हिन्दुस्थान में भी उतर आता परन्तु अलतमश बुद्धिमान था और चंगेज़ ख़ां ऐसे बलवान बैरी को कब लड़ाई का अवसर देता। उसने एक तुरकिस्तानी सरदार को जो चंगेज़ ख़ां से हार कर उसके पास सहायता को खोज में आया था सहायता देने से इनकार किया, और आई हुई बला भारत से टल गई; यानी चंगेज़ और तुर्क इसपार न आये।


रज़िया बेगम।

८—रज़िया बेगम अलतमश की बेटी थी। जब इसका बड़ा भाई रुकनुद्दीन सात महीने राज करने पर राज के योग्य न समझा गया तो रज़िया दिल्ली की मलका हुई। दिल्ली के सिंहासन पर रज़िया के सिवा और कोई रानी नहीं बैठी। अलतमश जब कहीं दूर किसी शत्रु से लड़ने जाता तो दिल्ली का प्रबन्ध रज़िया को सौंप जाता था। वह कहा करता था कि रज़िया का स्वभाव पुरुषों का सा है; यह बीस लड़कों से बढ़कर सुयोग्य है। रज़िया सुल्ताना ने साढ़े तीन वर्ष बड़ी सावधानी और प्रतिष्ठा से राज किया। मुसलमान बीबियों के भांति यह बुरक़ा या नक़ाब कुछ न लगाती थी; मर्दाने वस्त्र पहिन कर नित्य राज-सिंहासन पर विराजती थी; और जो कोई उसके

पास नालिश करने आता था, उससे बोलती और उसकी बात पूंछती थी।

९—लोग अनुमान करते हैं कि यह अपने एक सभासद को बहुत मानती थी; और उसे अपने सेना का सेनापति बना दिया था। यह हबशी था इस कारण रज़िया के अफ़गानी सभासद और सर्दार बहुत बुरा मानने लगे और बाग़ी होकर दंगा करने पर उतारू हुए। रज़िया ने अपने प्राणों के डर से एक सर्दार से ब्याह कर लिया। वह रज़िया की ओर से बहुत लड़ा। परन्तु उसकी हार हो गई। वह और रज़िया दोनों मारे गये।

१०—रज़िया के मरने पर अलतमश का एक और बेटा उसकी जगह राज-गद्दी पर बैठा। इसने कोई दो बरस राज किया होगा कि दर्बार के अफ़गानी अमीरों ने उसे क़ैद कर लिया और अलतमश के पोते को सिंहासन पर बैठाया। पांच बरस राज करने पर यह भी क़ैद किया गया। इसके पीछे नासिरुद्दीन जो अलतमश का सब से छोटा बेटा था राज का अधिकारी हुआ। यह बड़ा बुद्धिमान था। इसने ग़यासुद्दीन को जो उसका बहनोई और एक बड़ा रईस था अपना वज़ीर बनाया और उसकी सहायता से बीस बरस राज किया। रज़िया के उन दोनों शक्तिहीन उत्तराधिकारियों के समय में कई राजपूत राजा लोग जो कुतुबुद्दीन और अलतमश से हार मान चुके थे अपना अपना देश फिर दबा बैठे और स्वतन्त्र हो गये। ग़यासुद्दीन ने इन देशों को जीत कर फिर दिल्ली के राज में मिला लिया। मोग़लों ने भी कई बार भारत पर चढ़ाई की पर इसने उनको भी भगा दिया।

११—नासिरुद्दीन बादशाह था, फिर भी वह सूफ़ी फ़क़ीरों की तरह रहता था। उसकी एकही स्त्री थी, घर में न तो कोई दासी थी और न खाना पकानेवाली थी। बिचारी शुद्ध आचरणवाली

मलकाही अपने हाथ से खाना बनाती और खिलाती थी। बादशाह अपने हाथ से किताबें लिखता और उनके बेचने से जो धन पाता उससे अपनी जीविकानिर्बाह करता था। एक बार एक दर्बारी बादशाह के पास गया। बादशाह के पास उन्हीं की लिखी किताब रक्खी थी। दर्बारी किताब उठाकर उसकी अशुद्धियां दिखाने लगा। आप भी लेखनी उठाकर जिस तरह वह कहता गया बनाते गये। परन्तु जब वह चला गया तब उसकी काटी हुई अशुद्धियां फिर ज्यों की त्यों कर दीं। किसी ने पूछा जहांपनाह यह क्या बात है। आपने कहा कि वास्तव में अशुद्धियां


नासिरुद्दीन।

नहीं थीं। परन्तु जो मनुष्य मुझपर इतनी कृपा करे कि मेरी अशुद्धियां मुझे चेता दे, उसका मान रखना उचित है। मैंने इसी बिचार से उसके कहने पर किताब काट दी थी। और जब वह चला गया तो फिर ठीक कर दी।

१२—नासिरुद्दीन के मरने के पीछे उसका मन्त्री ग़यासुद्दीन बलबन राज का मालिक हुआ। लड़कपन में यह दास था। परन्तु उच्च कुल का था। अलतमश ने इसे मोल ले लिया था। अपनी बुद्धिमानी से इसकी प्रतिष्ठा बढ़ती रही और इसको ऊंचे पद मिलते गये और अन्त को एक सूबे का हाकिम हो गया और अलतमश ने अपनी बेटी उसे ब्याह दी। इन पदवियों के पाने से पहिले यह उन चालीस दासों में से था जिन्हों ने आपुस में यह प्रतिज्ञा कर ली थी कि जन्मभर एक दूसरे के मित्र और सहायक

बने रहेंगे। इस प्रतिज्ञा पर वह लोग ऐसे स्थिर रहे कि चालीस के चालीसों बड़े बड़े ओहदों पर पहुंच गये। पर जब बलबन राज्याधिकारी हुआ तो उसे डर लगा कि ऐसा न हो कि कहीं मेरे मरने पर इन लोगों में से कोई राज का दावा करे और मेरे बेटों को राज न करने दे। इस डर से उसने सब को मरवा डाला।



ग़यासुद्दीन।

१३—बलबन के राज में एशिया के कई प्रान्तों के रईस और सर्दारों ने मुग़लों के अत्याचार से व्याकुल होकर अपने अपने देश छोड़ दिये और भारत में शरण ली और यहीं रहने सहने लगे। एक बार ऐसा हुआ कि बलबन की सभा में इस प्रकार के पन्द्रह रईस इकट्ठा हो गये। बलबन ने दिल्ली के बाज़ारों और गलियों के नाम बदल दिये। किसी का नाम ग़ोर की गली, किसी का नाम बग़दाद का कूचा, और किसी का खेवा का कूचा आदि नाम रख दिया। मुग़लों के दल के दल पंजाब पर चढ़ आये पर बलबन और उसके बेटों ने सब को मार पीट कर भगा दिया। अन्त में मुग़लों और बलबन के बेटे महम्मद में घोर संग्राम हुआ और महम्मद मारा गया। बलबन की आयु इस समय अस्सी बरस की थी; सिंहासन पर बैठे हुए भी उसे बाईस बरस हो चुके थे। बेटे के मरने का समाचार सुनकर उसे इतना दुःख हुआ कि वह मरही गया।

१४—बङ्गाले का हाकिम तोग़रल खां बाग़ी हो गया था।

बलबन ने उसे पराजित करके मार डाला और अपने बेटे बुग़रा खां को उसकी जगह बङ्गाले का हाकिम बनाया। बुग़रा खां सुख से बङ्गाले में राज करता था और इसी पर सन्तुष्ट था। बाप के मरने के पीछे भी कभी उसने ऐसा विचार न किया कि मैं बलबन के सिंहासन का अधिकारी बनूं। फल यह हुआ कि उसका बेटा कैक़बाद दिल्ली का बादशाह हुआ। कैक़बाद के समय में बड़ी अनीति रही। बुग़रा खां भी एक बार आया और बेटे को समझाया पर कैक़बाद ने एक न सुनी। बुग़रा खां की पीठ फिरते ही पहिले से भी अधिक उत्पात होने लगा। कैक़बाद को राज मिले अभी तीन बरस भी न हुए थे कि उसके वज़ीर ने जो ख़िलजी जाति का था उसे मार डाला और आप बादशाह बन बैठा। बुग़रा खां बङ्गाले ही में पड़ा रहा और ४४ बरस उस देश में राज करके इस संसार से सिधार गया। कैक़बाद के पीछे बुग़रा खां की मृत्यु तक दिल्ली के तख़्त पर छः बादशाह बैठे।

२४—ख़िलजी वंश।

(१२९० ई० से १३२० ई० तक)

१—तीस बरस में ख़िलजीवंश के चार बादशाह हुए। यह वास्तव में अफ़ग़ानी थे पर तुर्किस्तान से आये थे और भाषा भी तुर्की ही बोलते थे। इनके समय में मुसलमान दखिन में भी पहुंच गये।

२—इस वंश का पहिला बादशाह जलालुद्दीन ख़िलजी था। सिंहासन पर बैठने के समय इसकी आयु अस्सी बरस की थी। यह मित्र और शत्रु सब से सरल सुभाव से मिलता था। जलालुद्दीन अपने भतीजे अलाउद्दीन पर बड़ा भरोसा रखता था और उसे अपने

बेटों की भांति मानता था। अलाउद्दीन सेना लेकर दखिन पहुंचा जहां अभी तक कोई अफ़ग़ान नहीं गया था। यह विन्ध्याचल पर्वत में आठ सौ मील चल कर आठ हज़ार सेना के साथ देवगिरि में पहुंचा जिसे अब दौलताबाद कहते हैं और जो मरहठा देश के राजा रामदेव की राजधानी थी। अलाउद्दीन सब से कहता था कि मेरा चचा मुझे मारनेवाला है; मैं उससे भाग कर आया हूं। इस कारण किसी राजपूत राजा ने उससे छेड़ छाड़ न की और अचानक उसने देवगिरि को आ दबाया। राजा ने उसको बहुतसा धन दिया और कुछ भाग अपने देश का भी उसको भेंट किया। अलाउद्दीन दिल्ली लौट गया। बूढ़े चचा ने जब यह सुना तो बहुत प्रसन्न हुआ और अकेला आप ही उसकी अगवानी को आया। चचा अलाउद्दीन को छाती से लगाता था कि भतीजे ने उसकी छाती में तलवार भोंक दी फिर उसका सिर काट डाला और भाले में लगाकर सारी सेना में फिराया, जिसमें सब जान जायं कि जलालुद्दीन मर गया। इस करतूत के पीछे अलाउद्दीन दिल्ली आया; यहां जलालुद्दीन के दो बेटों को मारा और आप राज का अधिकारी बना। जिस समय जलालुद्दीन अलाउद्दीन के हाथ से मारा गया, उस समय उसे राज करते हुए, सात बरस हुए थे।

३—अलाउद्दीन ने १२९५ ई० से १३१५ ई० तक राज किया। यह बड़ा निर्दयी और कठोर था और जो मन में ठान लेता था उसपर दृढ़ रहता था। खिलजी बादशाहों में सब से शक्तिमान यही था। इसने बीस बरस राज किया; जितना धन दखिन से लाया था वह सब औरों को बांट दिया जिसमें वह लोग जलालुद्दीन के मरने की बात भूल जायं और यह अपना राज दृढ़ करे। गुजरात के लोगों ने जिनको कि ग़ोरी बादशाहों ने आधीन कर लिया था अलाउद्दीन के समय से बहुत पहिले पठान हाकिमों को निकाल

बाहर किया और एक राजपूत को अपना राजा बना लिया। अलाउद्दीन ने अपने भाई अलफखां को बहुत सी सेना देकर गुजरात भेजा। अलफखां ने फिर से इस देश को मुसलमानी राज में मिला लिया। राजाकी रानी कमलादेवी बड़ी रूपवती थी। उसे क़ैद करके अलफ़खां ने दिल्ली को भेज दिया। यहां अलाउद्दीन ने उससे निकाह करके अपने हरममें रखा। इसके पीछे अलाउद्दीन को मुग़लों का सामना करना पड़ा। पांच बार मुग़ल पञ्जाब में आये और एक बार दिल्ली तक भी जा पहुंचे पर अन्त में मुग़लों की हार हुई और बहुत से मारे गये। इनमें से जो बच रहे वह मुसलमान हो गये और यहीं बस गये।



अलाउद्दीन खिलजी।

४—इसके पीछे अलाउद्दीन ने उत्तरीय राजपूत राजाओं के जीतने का बीड़ा उठाया और उनके बहुत से गढ़ और क़िले ले लिये। इस समय भीमसिंह चित्तौड़ में राज करता था। उसकी रानी सुन्दरता में अद्वितीय थी। अलाउद्दीन ने जो उसकी सुन्दरता की बड़ाई चारों ओर सुनी तो तत्काल ही उससे निकाह करने को जी में ठान लिया। उसने बड़ी भारी सेना लेकर चित्तौड़ पर चढ़ाई की। कई महीने अलाउद्दीन क़िले के सामने पड़ा रहा किन्तु उसे न ले सका। तब उसने भीमसिंह से कहा कि मैं पद्मिनी को देखना चाहता हूं। यदि एक बार तुम उसका मुंह मुझे दिखा दो तो मैं सेना सहित लौट जाऊंगा। पहिले तो भीमसिंह ने यह बात स्वीकार न की पर अन्त में

यह ठहरी कि रानी अपने राजभवन में पर्दे के पीछे बैठ जाय और उसके सम्मुख एक दर्पण रख दिया जाय और बादशाह उसमें उसकी परछाईं देख ले। निदान अलाउद्दीन चित्तौड़ गढ़ गया और दर्पण में रानी का प्रतिबिम्ब देख लिया। लौटती समय भीमसिंह उसे उसके डेरे तक पहुंचाने गया। उस समय अलाउद्दीन ने भीमसिंह को कैद कर लिया और कहा कि जब तक पद्मिनी मुझसे ब्याह न करेगी तब तक तुम न छोड़े जाओगे। रानी ने देखा कि राजा के छुटकारे का सिवाय इसके और कोई उपाय नहीं है कि कुछ चालाकी से काम ले। इस कारण बादशाह से कहला भेजा कि मुझे स्वीकार है, मैं आती हूं। एक डोले में आप सवार हुई और सात सौ डोले और साथ लिये और सब के सब मुसलमानी डेरों की ओर चले। कहा तो यह गया कि उन सात सौ डोलों में रानी की सात सौ सहेलियां हैं परन्तु हर डोले में एक एक राज़पूत सूरमा हथियार बांधे बैठा था। केवल इतना ही नहीं बरन जो लोग कहारों की भांति डोलों को उठाये थे वह भी लड़ंतिये सिपाही थे। जब डोले मुसलमानी डेरों में पहुंचे तो अलाउद्दीन ने चाहा कि भीमसिंह और पद्मिनी को न जाने दे। इतने में राजपूत सूरमा तलवारें सूत कर डोलों से कूद पड़े और भीमसिंह और पद्मिनी को घोड़ों पर सवार करा कर लड़ते भिड़ते तलवारों की छाया में चित्तौड़गढ़ में पहुंचा दिया। अलाउद्दीन देखता ही रह गया। इसबार तो उसे हार मान कर भागना पड़ा किन्तु दो बरस पीछे पहिले से भी भारी सेना लेकर उसने चित्तौड़ पर चढ़ाई की। इस बार राजपूत इसके सामने ठहर न सके। जब बहुत से राजपूत कट कर मर गये और गढ़ के बचाव की कोई आशा न रही तो पद्मिनी तेरह हज़ार राजपूतनियों के साथ

अग्नि में प्रवेश करके भस्म हो गई। मर्द जो बचे सो तलवारें लेकर गढ़ के बाहर निकले और वीरता से लड़ते हुए शत्रु के हाथों संग्राम में कट मरे। यह घटना १३०३ ई० की है। इसके पीछे अलाउद्दीन जैसलमेर पहुंचा और आठ महीने घेरने के पीछे जैसलमेर का क़िला भी आधीन कर लिया। यहां भी वही हाल हुआ जो पहले चित्तौड़ में हो चुका था अर्थात् चार हज़ार राजपूतनियां अच्छे कपड़े और गहने पहिन कर आग में कूद पड़ीं और जलकर स्वाहा हो गईं और राजपूत लोग घोर संग्राम करते हुए एक एक करके कट मरे। इस भांति प्राण देने को राजपूत लोग अपनी बोली में जौहर कहते हैं। जब अलाउद्दीन ने राजपूतों को जीत लिया और गुजरात और राजपूताने के बड़े बड़े गढ़ छीन चुका तो दखिन के विजय को चला।

५—अलाउद्दीन का सब से बड़ा सर्दार मलिक काफ़ूर था। यह असल में हिन्दू था पर पीछे मुसलमान हो गया था। अलाउद्दीन नहीं चाहता था कि आप उत्तरीय भारत छोड़ कर दखिन के विजय को जाय क्योंकि उसे डर था कि ऐसा न हो मुग़ल फिर चढ़ आयें अथवा कोई सर्दार बिगड़ बैठे और उसका राज छीन ले। इस कारण उसने एक बड़ी भारी सेना के साथ मलिक काफ़ूर को दखिन की ओर भेजा। मलिक काफ़ूर ने हर एक चढ़ाई में एक नया देश छीना और बहुत सा माल लूट कर दिल्ली को लौट आया।

६—१३०९ ई० में काफ़ूर गोदावरी नदी के दक्षिण वारङ्गल जो तिलङ्गाना राज्य की राजधानी थी पहुंचा; फिर देवगिरि की ओर चला। देवगिरि का राज्य जलालुद्दीन के समय में अलाउद्दीन ने जीत लिया था परन्तु थोड़े दिनों से अलाउद्दीन को कर नहीं मिला था। अलाउद्दीन की हिन्दू रानी कमलादेवी ने मलिक काफ़ूर से कह रक्खा था कि मेरी छोटी लड़की देवल

देवी को जो गुजरात के जीते जाने के समय मेरे पहिले पति अर्थात् गुजरात के राजा के साथ दखिन चली गई थी ला दो। मलिक काफ़ूर ने उसके खोज में एक सेना भेजी। शङ्करदेव के साथ, जो देवगिरि के राजा रामदेव का पुत्र था, उस कन्या का विवाह होने ही वाला था कि इतने में मलिक काफूर की सेना ने उनको जा घेरा। मलिक काफ़ूर उस लड़की को दिल्ली लाया और यहां बादशाह के पुत्र खिज्रखां के साथ उसका निकाह हो गया। मलिक काफ़ूर रामदेव से लड़ा और उसको क़ैद करके दिल्ली ले आया। यहां अलाउद्दीन ने उसके साथ ऐसा अच्छा बर्ताव किया कि वह जन्म भर बादशाह का शुभचिन्तक बना रहा।

७—रामदेव का पुत्र शङ्करदेव अलाउद्दीन से जलता था। कारण यह था कि उसने उसकी स्त्री छीन ली थी। बाप की मृत्यु के पीछे शङ्करदेव बाग़ी हो गया और मलिक काफ़ूर सेना लेकर उसको दण्ड देने के लिये भेजा गया। शङ्करदेव लड़ाई में मारा गया और काफ़ूर ने सारा मरहठा देश उजाड़ दिया। १३१० ई० में काफ़ूर करनाटक देश के मैसूर के इलाके में होता हुआ धुर द्वारसमुद्र में जा पहुंचा जहां बल्लाल राजा की राजधानी थी। उसको पराजित करके काफ़ूर और भी दक्षिण की ओर बढ़ा और रासकुमारी तक पहुंच गया। यहां से बहुत सा धन लेकर दिल्ली लौट आया। इसकी ग़ैर हाज़िरी में पन्द्रह हज़ार मुग़ल जो अलाउद्दीन के दर्बार में नौकर थे बाग़ी हो गये थे। वह सब मार डाले गये और उनकी स्त्रियां और बच्चे दास बनाकर बेंच दिये गये।

८—अलाउद्दीन के राज में अफ़गान अमीरों को यह अधिकार न था कि जो कुछ जिसके जी में आयें करे। बादशाह की आज्ञा के बिना न वह किसी को भोज दे सकते थे न

ब्याह कर सकते थे। उसने कभी किसी बड़े अमीर को किसी दूसरे शक्तिमान अमीर की बेटी से ब्याह करने की आज्ञा नहीं दी। कारण यह कि वह डरता था कि दोनों मिलकर बहुत शक्तिमान न हो जायं। इन बातों का बादशाह स्वयं फैसला करता था कि किसान कितने खेत जोते, कितने नौकर चाकर रक्खे, और कितनी भेड़ बकरियां और गाय बैल पाले। कोई मनुष्य जो बहुत सा धन बटोरता तो बादशाह उसका धन छीन लेता था क्योंकि उसको यह खटका था कि लोग धनी और शक्तिमान हो जायंगे तो कदाचित बिद्रोही भी हो जायं। हर वस्तु का मोल भाव बादशाह ठीक करता था। दूकानों के खुलने और बन्द होने के समय भी वह ही नियत करता था। अन्तिम अवस्था में उसके राज का प्रबंध बिलकुल ही बिगड़ गया था। वह शराब पीने लगा था और राजकार्य और सारे अधिकार मलिक काफ़ूर के हाथ दे बैठा था।

९—मलिक काफ़ूर चाहता था कि आप बादशाह बन जायं। इस कारण दिल्ली से हिलता न था। बादशाह बूढ़ा था उसकी बुद्धि भी ठिकाने न थी। मलिक काफ़ूर ने उसी के हाथों से उसके बेटों को क़ैद करा दिया। जब चित्तौड़ और गवालियर के राजपूतों और दखिन के मरहठों ने देखा कि अलाउद्दीन के ज़बर्दस्त हाथों से राज निकल गया तो खुल्लम खुल्ला बिद्रोही होकर स्वतंत्र हो गये। अन्त में यह हाल हुआ कि काफ़ूर ने बादशाह को विष दे दिया और उसके दोनों बेटों की आंखें निकलवा डालीं और सिंहासन पर भी हाथ मारा। परन्तु बादशाह के निज सिपाहियों ने, जो अफ़ग़ान थे, काफ़ूर को मार डाला और अलाउद्दीन के तीसरे पुत्र मुबारक को गद्दी पर बिठा दिया।

१०—मुबारक का नाम तो मुबारक था किन्तु कर्मों के विचार से वह ख़िलजी वंश के सब से मनहूस बादशाहों में हुआ है। उसने अपने छोटे भाई की जो एक नन्हा सा बच्चा था आंखें निकलवा डालीं। जिन लोगों की सहायता से उसे राज मिला था उनको भी मरवा दिया और एक नीच जाति के हिन्दू दास को जो मुसलमान हो गया था खुसरो खां की पदवी देकर अपना मन्त्री बनाया। मुबारक दो बरस राज करने के पीछे उसी मंत्री के हाथ से मारा गया। खुसरो खां बादशाह बना और अपना नाम नासिरुद्दीन रक्खा। उसने ख़िलजियों के वंश के बच्चे बच्चे तक को मरवा डाला परन्तु आप भी बहुत दिनों राज न कर सका। ग़यासुद्दीन तुग़लक जो एक शक्तिमान सर्दार और पञ्जाब का हाकिम था दिल्ली पर चढ़ आया; नासिरुद्दीन को मार डाला और इस कारण से कि ख़िलजी वंश का कोई नाम लेवा न बचा था आप बादशाह बनकर दिल्ली के सिंहासन पर बैठ गया।

२५—तुग़लक वंश।

(१३२० ई० से १४१४ ई० तक।)

१—इस वंश से आठ बादशाह हुए। इन में से दोही प्रसिद्ध हैं; एक अपने दुष्टपने के कारण और दूसरा अपनी भलाई और सुप्रबंध के निमित्त। बदनामी का टीका महम्मद तुग़लक के माथे पर है जो इस वंश का दूसरा बादशाह था; और नेकनामी का छत्र फीरोज़ तुगलक के सिर पर है जो इसके पीछे तीसरा बादशाह हुआ।

२—इस वंश का पहिला बादशाह ग़यासुद्दीन था। यह बलबन के तुर्की गुलाम का एक बेटा था, जिसने एक हिन्दू स्त्री के साथ विवाह कर लिया था। उसने पांच बरस राज किया। इसके

पीछे उसका पुत्र जूनाखां गद्दी पर बैठा जो महम्मद तुग़लक के नाम से प्रसिद्ध है। इस ने २७ बरस राज किया। इसका समय देश के लिये राजरोग था। प्रजा उसको हत्यारा सुलतान कहा करती थी। इसने ऐसी ऐसी बिचित्र बातें और दुराचार किये कि बहुत से हिन्दू इसे पागल कहा करते थे। इसके समय में जब मुग़लोंने बड़ी सेना लेकर चढ़ाई की तो यह उन से लड़ा तो नहीं पर अपने ख़ज़ाने का सारा धन देकर उनको लौटा दिया।

३—ख़ज़ाना ख़ाली हो गया; तो इसने तांबे का सिक्का चलाया और प्रजा को आज्ञा दी कि चांदी के रुपये की जगह तांबे का सिक्का ले। प्रजा ने यह न माना। इसने कर बढ़ाना आरम्भ किया; और बढ़ाते बढ़ाते पहिले से दूना कर दिया। प्रजा से जब कर न दिया गया तो खेती बारी से मुंह मोड़ कर खेतों को बे बोये जोते छोड़ कर भाग गई। अब बादशाह ने प्रजा के मारने के लिये सेना भेजी। सैनिकों ने जंगलों में जाकर प्रजा को घेर लिया और इस तरह मारडाला जैसे शिकारी शिकार में जंगली जन्तुओं को मारते हैं।

४—महम्मद तुगलक ने दो बार दिल्ली के रहने वालों को आज्ञा दी कि देवगिरि चले जाओ जो दखिन में दिल्ली से ८०० मील है। इस ने देवगिरि का नाम बदलकर दौलताबाद रक्खा मानो यह नाम रखते ही वह दौलत का घर हो जायगा। देवगिरि से दिल्ली तक कोई सड़क न थी। विन्ध्याचल पर्वत और बनों के बीच में होकर जाना पड़ता था। रास्ते में कोई खाने पीने का सुभीता भी न था। बहुत से लोग राह में मर गये और जो बचे खुचे देवगिरि पहुंचे उनके लिये रहने को वहां घर न थे। निदान बादशाह ने आज्ञा दी कि तुम लोग फिर दिल्ली लौट जाओ।

५—महम्मद तुग़लक हिन्दुओं से बहुत जलता था; जंगी और मुल्की ओहदे अफगानों को देता था, जो न हिन्दुओं को

बोली जानते थे न उन पर दया करते थे। अपने देश के बाग़ियों को वह दबा नहीं सकता था; फिर भी एक लाख सिपाही उसने चीन को भेज दिये कि जाओ चीन को जीत लो। यह सेना योंही नष्ट हुई। बहुत सी तो हिमालय पर्वत में ठिठुर कर मर गई, और रही सही जो लौट कर आई उसे बादशाह ने मरवाडाला।

६—सूबेदारों और ऊंचे पद के लोगों ने जब यह कुप्रबंध देखा तो विद्रोही होकर स्वाधीन बन बैठे। बंगाले और गुजरात में पठानों ने अपना राज स्वतंत्र बना लिया। तिलंगाने और करनाटक के हिन्दूराजा जो अलाउद्दीन खिलजी के समय में आधीन किये गये थे अब फिर स्वाधीन बन गये। सन १३३६ ई० में एक हिन्दू राजा हरिहर ने तुंग नदी पर बिजयनगर में अपना राज्य स्थापित किया। सन् १३४७ ई० में एक अफ़ग़ान सरदार ने जिसका नाम हसन था दखिन में बादशाही की नोव डाली।

७—महम्मद तुग़लक के पीछे उसका भतीजा फ़ीरोज़ तुगलक गद्दी पर बैठा। यह पठान बादशाहों में सब से अच्छा था। इस ने ४० बरस तक राज किया, और देश की भलाई और प्रजा के सुख के लिये बहुत से उपाय किये; सड़कें बनवाईं, नहरें निकालीं, यात्रियों के लिये सरायें बनवाईं और फ़ारसी अरबी के मदरसे खुलवाये। इसने और पठान बादशाहों की अपेक्षा प्रजा के साथ बहुत अच्छा बर्ताव किया। परन्तु धर्म के बिषय में यह भी बड़ा कट्टर था; जो हिन्दू अपना धर्म नहीं छोड़ते थे उन पर बहुधा बड़ी निठुराई करता था; हिन्दुओं के मंदिर गिराकर उनके ईंट मसाले से मसजिदें बनाना अपना मुख्यधर्म समझता था। इसने अपने जीवनचरित में जो उसने अपने हाथों लिखा था आपही इन सब बातों को स्वीकार किया है।

८—फ़ीरोज़ तुग़लक के पीछे चार बादशाह हुए जिन्हों ने कुछ

थोड़े दिनों तक राज किया। इनके समय में सूबे पर सूबा बिद्रोही होता गया कुछ सूबे तो राजपूत दबा बैठे, और कुछ पठानों ने ले लिये। तुग़लक़ कुटुम्ब के अन्तिम दिल्ली के बादशाह का नाम महमूद था। दिल्ली और उसके आस पास सूबों ही पर यह बादशाहत करता था। इसके समय में तातारी मुग़लों ने अमीर तैमूर की सरदारी में हिन्दुस्थान पर फिर चढ़ाई की।

२६—तैमूर लंग।

१—जिस समय में तुग़लक वंश के अन्तिम बादशाह का दिल्ली में राज था, तुर्किस्तान में एक बड़ा शक्तिमान सर्दार जिसका नाम तिमर या तैमूर था राज करता था। तैमूर का शरीर लम्बा और रंग गोरा, ऊंचा माथा चमकीले नेत्र और कड़ी बोली थी। इसकी टांगें लम्बी और उंगलियां मोटी मोटी थीं। यह लंगड़ा था इसी कारण इसे तैमूर लंग कहते हैं। यह बास्तव में तुर्क था और शहर का रहनेवाला था। परन्तु इसकी सेना तातारियों से भरी थी। इस कारण इसको भी तैमूर तातारी कहते हैं।



तैमूर लंग।

२—सन् १३९८ ई० में तैमूर ने तुर्कों तातारियों और इरानियों की एक बड़ी भारी सेना के साथ उत्तर-पश्चिम की राह से आकर हिन्दुस्थान पर धावा मारा और मार

काट मचा दी। अब इसको पांच सौ बरस से अधिक हो चुके हैं परन्तु न इससे पहिले कभी ऐसी मार धाड़ हुई और न इससे पीछे। दिल्ली का पठान बादशाह आप मुसलमान था; इस कारण यह भी नहीं कहा जा सकता कि उसने इतनी मार काट मुसलमान दीन के बढ़ाने के लिये की थी। इसकी तो अभिलाषा यह थी कि हिन्दुस्थान को धड़ाधड़ लूटे मारे और यही इसने कर दिखाया।

३—तैमूर अपने तातारी टीड़ीदल को साथ लेकर अफ़ग़ानिस्तान से होता हुआ पंजाब में आया और कूच पर कूच करता हुआ धीरे धीरे दिल्ली पहुंचा; राह में जो स्थान पड़े सब को सफ़ाचट करके छोड़ गया। जहां जहां आबादी थी वहां लाशों के और आग की प्रचण्ड ज्वाला के सिवा और कुछ नहीं दिखाई पड़ता था। जब दिल्ली के पास पहुंचा तब उसके साथ एक लाख क़ैदियों की भीड़भाड़ थी। उसने देखा कि कौन इनका बोझ सम्हाले और देख भाल करे, इस कारण १५ बरस से अधिक आयु-वाले क़ैदियों को मरवा डाला।

४—यह समाचार दिल्ली में जसे पहुंचा कि सब के उसी समय भय के मारे मुंह पीले हो गये। बादशाह छिपकर शहर की चार दिवारी के अन्दर जा बैठा; पर थोड़े दिनों के पीछे जब मन में तरङ्ग उठी तो सेना लेकर नगर के बाहर निकल आया।

५—तैमूर अवसर पाकर तुरन्त बादशाह पर चढ़ आया। महमूद तुग़लक़ की हार हुई। पांच दिन बराबर तातारी शहर में घूमे; कहीं आदमियों को मारते थे; कहीं आग लगाते थे। निदान जब थक गये और लूट खसोट भी चुके तो बहुत से क़ैदी और लूट का धन लेकर हिमालय के नीचे पंजाब में पहुंचे और वहां से काबुल होते हुए तुर्किस्तान को लौट गये।

६—दिल्ली चौपट हो गई। तैमूर पांचही महीने हिन्दुस्थान में रहा था। पर जो जो अत्याचार और उपद्रव उसने और उसके नीचकर्मी तातारी सिपाहियों ने किये, आज तक हिन्दुस्थान के वासियों को नहीं भूले।

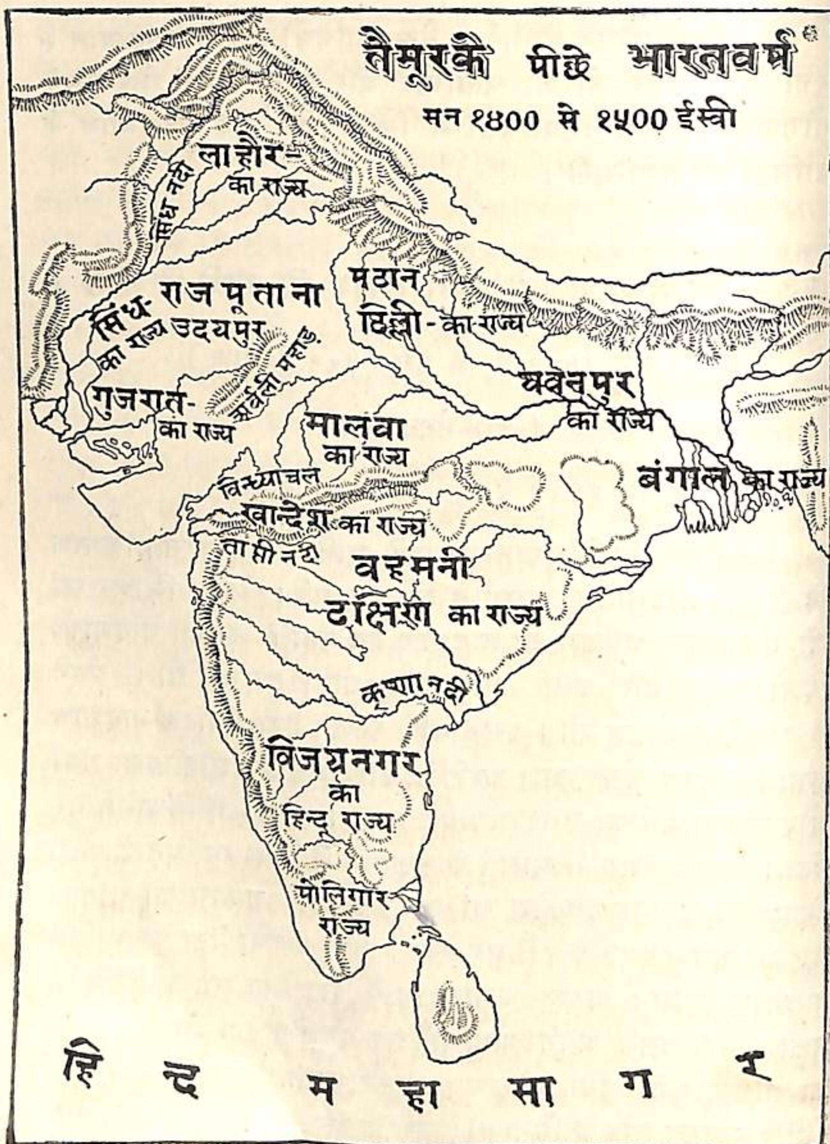
२७—हिन्दुस्थान की दशा तैमूर के जाने के पीछे।

(सन् १४०० ई० से सन् १५०० ई० तक)

(१) सैयद वंश।

(सन् १४१४ ई० से सन् १४५० ई० तक)

१—तैमूर के हिन्दुस्थान से चले जाने के ३६ बरस पीछे तक दिल्ली की बादशाहत नाममात्र को रह गई। सयद खि़जिर खां जो पंजाब का हाकिम था बादशाह बन बैठा। इसकी बादशाही दिल्ली शहर और उसके आस पास थोड़ी दूर तक थी। इसने ७ बरस बादशाहत की। इसके पीछे इसका बेटा मुबारक बादशाह हुआ। बारह बरस राज करने के पीछे यह भी मार डाला गया और उसका भतीजा सयद महम्मद सन् १४३३ ई० में सिंहासन पर बैठा। इसके समय में मालवे के सुलतान ने दिल्ली पर चढ़ाई की। पंजाब का सूबेदार बहलोल खां लोधी इसकी सहायता को आया। यह भी सन् १४४३ ई० में मर गया। और इसका बेटा अलाउद्दीन बादशाह हुआ। परन्तु अलाउद्दीन से राज का प्रबन्ध संभल न सका और उसने अपने आप सूबेदार बहलोल खां को बादशाही का अधिकार दे दिया और अपनी ज़मीन्दारी पर चला गया और वहां २८ बरस सुख से बिताकर परलोक सिधारा।



तैमूरके पीछे भारतवर्ष
सन १४०० से १५०० ईस्वी
लाहौर-
का राज्य
सिंध नदी
सिंध-
का राज्य
राजपूताना
उदयपुर
अर्वली पहाड़
गुजरात-
का राज्य
पठान
दिल्ली-का राज्य
जवनपुर
का राज्य
मालवा
का राज्य
विन्ध्याचल
खान्देश का राज्य
ताप्ती नदी
बहमनी
दक्षिण का राज्य
बंगाल का राज्य
कृष्णा नदी
विजयनगर
का
हिन्दू राज्य
पोलिगार
राज्य
हिन्द महासागर

(२) लोधी वंश ।

(सन् १४५० ई० से सन् १५२६ ई० तक)

१—बहलोल खां लोधी ने दिल्ली के बादशाह होने पर पंजाब के सूबे को भी दिल्ली में मिला लिया। यह सैयदों की अपेक्षा बड़ा शक्तिमान बादशाह था। इसने २६ बरस की लड़ाई के पीछे जौनपुर की बादशाहत को जो पूर्व में अवध और इलाहाबाद के सूबों से घिरी थी अपने अधिकार में कर लिया। इसके शासन में पंजाब से लेकर बिहार तक सारा देश था। मुसलमान ऐतिहासिक लिखते हैं कि इसने बहुत अच्छी बादशाही की। इसको ऊपरी दिखाव की इच्छा न थी। यह कहा करता था कि ऊपरी धूम धाम से कोई लाभ नहीं है। अच्छा और ठीक कर लेना, देश का अच्छा प्रबन्ध करना ही धम धाम और बड़ाई है। इसने सन् १४५० ई० से सन् १४८८ ई० तक अड़तीस बरस राज किया। बहलोल खां के मरने के पीछे उसका बेटा सिकन्दर लोधी बाप की राजगद्दी का स्वामी हुआ।

२—सिकन्दर लोधीने बाप के राज को और भी बढ़ाया और बिहार के प्रान्तों को जो जौनपुर से दूर बसे थे जीत कर अपने राज में मिला लिया। मुसलमान प्रजा के साथ उसका जियादः अच्छा बर्ताव था। उसने दिल्ली को छोड़ कर आगरे को राजधानी बनाया और सन् १४८८ ई० से सन् १५१७ ई० तक २९ बरस राज करके मर गया।

३—इस वंश का तीसरा और अन्तिम बादशाह इब्राहीम लोधी था। उसने कुल नौ बरस राज किया। इसका प्रबन्ध अच्छा न था। उसने अपने एक भाई को जो जौनपुर का सूबेदार था मरवा डाला; और दूसरे को बन्दी कर दिया। पुरखों के जीते हुए

देश भी उसके हाथ से निकल गये। अफ़गानों के बहुत से बड़े बड़े अमीर दिल्ली के शाह को अपना शिरोमणि समझने लगे थे। यह छोटी छोटी रियासतों के अधिकारी थे और सम्राट उनका मान करता था और इन्हीं उमराओं और ऊंचे पदवालों की सहायता पर राज थमा था। इब्राहीम ने यह रीति भी बदल दी। जब यह राजसभा में आते तो उनको नौकरों की तरह हाथ जोड़े खड़ा रखता। उनको अधिकार न था कि बिना बुलाये बादशाह के सामने जीभ तक डुला सकें। अफ़गानी लोग जो अपने मान और रखरखाव पर बड़ा ध्यान रखते थे इस चालसे बहुत बिगड़ गये। बहुतेरे जिनसे अपनी मानहानि न सही गई मरवा डाले गये और बहुत से बिद्रोही हो गये, जैसे चित्तौड़ का राजा संग्राम सिंह और पंजाब का सूबेदार दौलत ख़ां। इन्हीं ने काबुल के मुग़ल बादशाह को सन्देश भेजा कि आप आयं और इब्राहीम से राज छीन लें। उसने प्रसन्नता पूर्वक इस बात को स्वीकार किया। इब्राहीम की हार हुई और हिन्दुस्थान मुग़ल बादशाहों के हाथ आ गया।


इब्राहीम लोधी।

४—इस समय उत्तरीय और मध्य भारत में मुसलमानों की कुछ रियासतें थीं। इन सब के अफ़गान मालिक किसी समय दिल्ली के बादशाह के सूबेदार थे। पञ्जाब, बङ्गाला, जौनपूर, गुजरात, मालवा, मुलतान, सिन्ध सब पठानों की रियासतें थीं। अरवली पर्वत के दक्षिण की ओर राजपूताने में कई राजा राज करते थे। उनमें सब से शक्तिमान उदयपूर या चित्तौड़ का राजा था।

५—दखिन में दो बड़े राज थे, मध्य में पठानों का वह बड़ा राज्य जिसे बहमनी कहते थे और दक्षिण में हिन्दुओं का विजय-नगर का राज्य जिसमें दखिन का सारा भाग मिला हुआ था। अगले अध्याय में यह सब बातें कही जायंगी कि पठान दखिन में कब और किस भांति फैले; बहमनी और बिजयनगर के राज कब और किस भांति बने; और इनके पीछे दक्षिण में मुसलमानों ने कैसे छोटे छोटे राज स्थापन किये।

२८—दखिन में पठानों की चढ़ाइयां।

(सन् १२९४ ई० से सन् १३१२ ई० तक)

१—पहिले पहिल खिलजियों के समय में दखिन पर मुसलमानों के आक्रमण हुए। उस समय पूर्व का तिलगू देश जहां प्राचीन काल में अंध्र का राज था तिलंगाने के नाम से प्रसिद्ध था और वारंगल उसकी राजधानी थी। पश्चिमीय भाग जहां मरहठी भाषा बोली जाती है महाराष्ट्र कहलाता था और देवगिरि उसकी राजधानी थी। दक्षिणीय देश जहां कनाड़ी भाषा बोली जाती है कारनाटक कहलाता था। यहां राजपूतों के प्रसिद्ध वंश बल्लाल ने तीन सौ बरस अर्थात १००० ई० से १३०० ई० तक राज किया और द्वारसमुद्र जो मैसूर में है उसकी राजधानी था। राजपूत का एक और वंश चालुक्य कई सौ बरस पहिले हैदराबाद के दक्षिण पश्चिमीय भाग में जहां कनाड़ी मरहठी दोनों भाषायें बोली जाती हैं राज करता था। उसकी राजधानी कल्याण था जो हैदराबाद से सौ मील पश्चिम की ओर है। उड़ैसे में छः सौ बरस से केसरी वंश के राजपूत राज करते थे; उनकी राजधानी कटक थी। दक्षिण भारत में और भी कई हिन्दू राज्य थे।

२—ऊपर कह चुके हैं कि जलालुद्दीन ख़िलजी के समय में अर्थात् १२९४ ई० में अलाउद्दीन ने कुछ सवार लेकर देवगिरि पर चढ़ाई की थी। देवराजा को बिबस होकर उसको बहुत सा धन भेंट करना पड़ा था, जिसको लेकर अलाउद्दीन दिल्ली लौट आया। जब अलाउद्दीन आप बादशाह हुआ तो उसने दखिन जीतने का



हली बेद का मन्दिर।

बिचार किया और कई बार अपने सेनापति काफ़ूर को इस काम के लिये भेजा। काफ़ूर ने कुल दक्षिणीय भारत को १३२०—२१ ई० में रौंद डाला और वहां के हिन्दू राजा का सर्वनाश किया। कहते हैं कि यह रासकुमारी के पास रामेश्वर के मन्दिर तक पहुंचा था। अब दूसरी बार यह बात सिद्ध हुई कि उत्तर के ठंढे देशों के अफ़गान दक्षिण के गरम देशों के हिन्दुओं से अधिक बली थे।

हिन्दू लड़े परन्तु सब जगह हारे। अफ़गानों ने रत्ती रत्ती मन्दिरों को लूट लिया। उनकी मूर्त्तियां बाहर फेंकदीं और तोड़ डाली। जिन लोगों ने उनको मारने की चेष्टा की उनको मारा। हलीबेद जो मैसूर में है उस में ८० बरस से वल्लाल राजा धीरे धीरे एक अत्यन्त सुन्दर और विशाल मन्दिर बनवा रहे थे जोकि इस देश में अद्वितीय था। मुसलमानों ने उसका बनना बन्द करा दिया। आज तक वह मन्दिर उसी भांति अधबना पड़ा है।

३—ग़ोरी और खिलजी बादशाहों के अफग़ान और पठान सैनिक अनेक जातियों और झुंडो के थे। हर एक का अलग अलग देश अफ़गानिस्तान की पहाड़ी घाटियों में था। इनके सिवा तुर्किस्तान और मध्य एशिया के मुल्कों के लोग लूट खसोट की आशा पर ग़ोरी बादशाहों की सेना के साथ भारत में आये थे। जो आदमी इस भांति कुछ दल इकट्ठा कर लेता या धनी बन बैठता था। जब अलाउद्दीन और काफ़ूर और ख़िलजी और तुगलक वंश के बादशाहों ने दखिन को रौंद डाला तो वह आधीन देश की रक्षा और प्रबंध के लिये ठांव ठांव अफग़ान सरदारों को छोड़ आये जिस में यह हिन्दू राजाओं से सदा कर लेते रहें और उसको बढ़ने न दें। समय के बीत जाने पर जब दिल्ली के अफ़ग़ान बादशाह दुर्बल हो गये और इन अमीरों को अपने बस करने के योग्य न रहे तो यह स्वाधीन बादशाह बन गये।

२८—बहमनी और विजयनगर के राज्य।

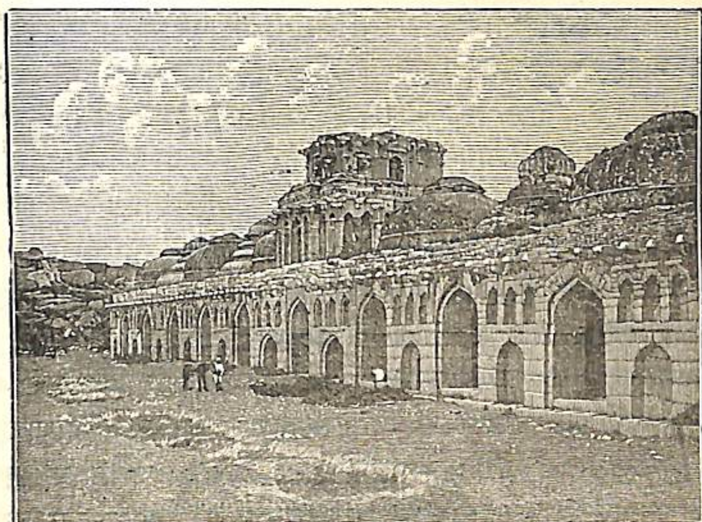
१—मुहम्मद तुग़लक के राज में ऐसा गड़बड़ मचा कि दखिन के सारे मुसलमान बाग़ी हो गये और हसन गंगू जो सब से जबर्दस्त था सन् १३४७ ई० में गुलबर्गे को अपनी राजधानी बनाकर

स्वतन्त्र बादशाह बन गया। हसन गंगू की बादशाही बहमनी बादशाही के नाम प्रसिद्ध है। यह सन् १५२६ ई० तक १६० बरस रही। वह सारा देश जो अब हैदराबाद के नाम से प्रसिद्ध है इसी का भाग था। जिस समय लोधी, तुग़लक, सैयद दिल्ली के बादशाह थे बहमनी कुल के बादशाह गुलबर्गे में राज करते थे।

२—हसन एक दरिद्र अफ़ग़ान था जो तीस बरस तक गंगा नामी एक ब्राह्मण के खेतों में काम करता था। एक दिन हसन को खेतों में कुछ गड़ा हुआ धन मिला। यह उसने अपने मालिक को दे दिया। ब्राह्मण उसकी इमान्दारी से इतना प्रसन्न हुआ कि दिल्ली के बादशाह की सरकार में जहां इसकी बहुत कुछ प्रतिष्ठा थी, उसने कह सुनकर हसन को सौ सवारों का सर्दार बनवा दिया। जिस समय मुहम्मद तुग़लक देवगिरि अर्थात दौलताबाद को अपनी राजधानी बनाने के बिचार में था, हसन अपने सौ तिलङ्गों को संग लिये दखिन पहुंचा और दूसरे अफ़गानी सरदारों की भांति एक छोटे से इलाक़े का हाकिम बनकर वहीं बस गया। जब यह बादशाह हुआ इसने अपने पुराने स्वामी गंगा मिश्र को मन्त्री के पद पर रक्खा और आप सुलतान हसन गंगू बहमनी की पदवी धारण की। बहमन अथवा बहमनी ब्राह्मण शब्द का अपभ्रंश है। उसके उत्तराधिकारियों ने भी ब्राह्मणों को अपना मन्त्री बनाया और अपनी हिन्दू प्रजा के साथ भी अच्छा बर्ताव किया।

३—इसी समय के लगभग जब बहमनी राज का जन्म हुआ तो तुंगभद्रा नदी के तट पर विजयनगर का एक हिन्दू राज स्थापित हुआ। इस राज की नीव डालनेवाले हरिहर और बुक्काराय नामी दो भाई थे जिन्हों ने मलिक काफ़ूर के आक्रमण के समय वारङ्गल से भाग कर यहां शरण ली थी। उस समय विजयनगर का राज्य सब हिन्दू राज्यों से ज़बर्दस्त था। सन् १३३६ ई० में

इसकी नीव पड़ी थी और २३० बरस के लगभग अर्थात् १५८५ ई० तक यह राज्य बना रहा। कृष्णा नदी से लेकर रासकुमारी तक सारा देश इसके आधीन था। बहुत से छोटे छोटे रईस और हाकिम इसके आधीन थे जो नायक कहलाते थे और विजयनगर को कर देते थे। इनमें से मैसूर का नायक सब से बड़ा था।



विजयनगर के राजा का हथसार।

गढ़ों और राजमन्दिरों में के टूटे फूटे खंडहर जो अब तक वर्त्तमान हैं इस राज्य की पूर्व अवस्था को भली भांति प्रगट करते हैं। इस अन्तिम समय में हिन्दुओं की विद्या और कला की जो कुछ बढ़ती हुई विजयनगर ही में हुई। विजयनगर के राजा वैष्णव थे। इनके राज में दखिन में प्रत्येक स्थान पर बुद्ध और जैन मत की जगह हिन्दू धर्म का प्रचार हुआ। विजयनगर के

पहिले दो राजाओं के मन्त्री प्रसिद्ध ब्राह्मण माधवाचार्य्य थे। दखिन में हिन्दू देवताओं की आराधना का फिर से प्रचार होना इन्हीं के परिश्रम का फल समझना चाहिये।

४—पहिले तो बहमनी सुलतान और विजयनगर के राजा एक दूसरे के मित्र और शुभचिन्तक थे। हिन्दू सैनिक विशेष करके मरहठे बहमनी सेना में भरती होकर लड़ते थे। मुसलमान सिपाही विजयनगर की सेना में भरती होते थे पर जब दोनों रियासतें ज़ोर पकड़ गईं और दिल्ली के बादशाह का डर जाता रहा तो आपुस में झगड़े होने लगे और बड़ी बड़ी लड़ाइयां हुईं।

५—विजयनगर में १५० बरस बीतने पर बुक्का वंश का अन्त हुआ और एक दूसरा वंश गद्दी पर बैठा। इस परिवार के पहिले राजा का नाम नृसिंह था और इसीके नाम पर इस वंश का नाम पड़ा। इस वंश के कृष्ण राजा और बहमनी सुलतान में घोर युद्ध हुआ। एक समय सुलतान के यहां नाच रङ्ग का जलसा था, सुलतान शराब के नशे में चूर था। गवैयों के गाने बजाने से बहुत प्रसन्न हुआ और तरङ्ग में आकर कृष्ण राजा के कोषाध्यक्ष को गवैयों को इनाम देने का पत्र दिया। इसका अभिप्राय यह था कि कृष्ण राजा मेरे आधीन है और अवश्य मेरी आज्ञा का पालन करेगा। कृष्ण राजा को यह पत्र पढ़ कर बड़ा क्रोध आया। वह सेना लेकर तुङ्गभद्रा के पार गया और एक बहमनी क़िला जीत कर उसके कुल मनुष्य मार डाले। उधर सुलतान को इसका समाचार मिला। उसने प्रतिज्ञा की कि जबतक एक लाख हिन्दू न मार डालूंगा अपनी तलवार म्यान में न करूंगा। यह भी सेना लेकर नदी के पार गया और मर्द औरत बच्चा जो कोई उसके सामने पड़ा तलवार से साफ करके उसने एक लाख की सौगन्ध पूरी की। अब कृष्ण राजा के ब्राह्मण मन्त्री ने राजा को

समझाया कि देवता आपसे अप्रसन्न हैं और उनके क्रोध से बचने का यही उपाय है कि आप सुलतान की आज्ञानुसार अपने कोष से रुपया दे दें। राजा ने यह सोच समझ कर रुपया दे दिया और लड़ाई समाप्त हुई।

६—बहमनी बादशाहों ने गुलबर्गे में राज किया। इनके पीछे अहमद शाह ने १४३१ ई० में गुलबर्गा छोड़ कर बीदर को अपनी राजधानी बनाया। यह बहमनी वंश का सब से बड़ा बादशाह था। इसने विजयनगर के राजा देव राजा को परास्त किया। राजा ने उसे अपनी बेटी ब्याह दी और बड़ा भारी कर देना स्वीकार किया। तीन दिन तक ब्याह का जलसा रहा इसके पीछे जब सुलतान अपने डेरों को चला तो राजा उसके साथ उसके डेरे तक न गया किन्तु आधी ही दूर से लौट आया। यह बात बादशाह को बुरी लगी। वह इसको न भूला और कुछ बरस बीतने पर फिर राजा से लड़ना निश्चय किया पर इस बार राजा ने उसके ऐसे दांत खट्टे किये और युद्ध में परास्त किया कि वह लज्जा और शोक से मरही गया।

७—सन् १५०० ई० में बहमनी राज्य का ढांचा टूटने लगा। चार अफ़गान रईस जो सुलतान की ओर से भिन्न भिन्न इलाक़ों के हाकिम थे सुलतान की आधीनता से अलग होकर स्वतंत्र हो गये। अन्त में यह हुआ कि बीदर और उसके आस पास का देश तो सुलतान के अधिकार में रहा और सब उसके हाथ से निकल गया। यह भी उसके मंत्री ने दबा लिया और आप बीदर का सुलतान बन बैठा।

३०—दखिन की मुसलमानी रियासतें।

(सन् १५०० ई० से सन् १६५७ ई० तक)

१—बहमनी रियासत के बिगड़ने पर पांच रियासतें स्थापित हुईं। बीच में बीदर, उत्तर में बरार और अहमदनगर, और दक्षिण में बीजापुर और गोलकुण्डा। बीजापुर, अहमदनगर और बरार तीनों मिलकर देवगिरि अथवा महाराष्ट्र की प्राचीन रियासत की स्थानापन्न थीं।

२—सन् १४८९ ई० में यूसुफ़ आदिलशाह ने दखिन के पश्चिमीय भाग महाराष्ट्र देश में बीजापुर की रियासत स्थापित की। यूसुफ़ मुराद सुलतान रूम का बेटा था। बाप की मृत्यु के पीछे यूसुफ के भाई ने उसको मरवा डालना चाहा किन्तु मांने उसके प्राण बचाने के लिये उसे फ़ारस भेज दिया। यूसुफ़ दासों की भांति बिका और बहमनी सुलतान के दर्बार में पहुंचा। यहां पर वह होते होते एक ऊंचे पद से दूसरे ऊंचे पद पर नियुक्त होगया यहां तक कि बीजापुर का हाकिम बना दिया गया। जब उसने देखा कि बीजापुर का बादशाह शक्तिहीन हो चला है तो वह स्वयं बीजापुर का बादशाह बन बैठा। अली आदिल शाह जिसने प्रसिद्ध मलका चांद बीबी से ब्याह किया था इसी वंश का था। चांद बीबी अहमदनगर के बादशाह निज़ाम शाह की बेटी थी। इसने राज काज में अपने पति की बड़ी सहायता की और घोड़े पर सवार होकर उसके साथ लड़ाई के मैदान में जाती थी। यह स्त्री खुले दर्बार में बठ कर राज का काम देखती थी। औरङ्गजेब के राज के शिवाजी महाराष्ट्र देश के राजा हुए और बहुत सा इलाका बीजापुर का उन्होंने अपने राज्य में मिला लिया।

सन् १६८६ ई० में औरङ्गजेब ने आप बीजापुर पर चढ़ाई की और उसे जीत कर आदिलशाही वंश का नाश कर दिया।

२—अहमदनगर की रियासत का आरम्भ भी बीजापुर के साथ ही साथ १४८९ ई० में हुआ। इस रियासत की नीव निज़ाम शाह ने डाली थी। इसका बाप वास्तव में एक ब्राह्मण था और यह बचपन ही में दास होकर मुसलमान हो गया था। इसने अहमद नगर बसाया और सात बरस घेरे रहने के पीछे दौलताबाद को जीत लिया। १५९५ ई० में बादशाह अकबर के बेटे मुराद ने अहमद नगर को घेरा। उस समय अहमदनगर का कोई बादशाह न था। इस कारण अहमदनगर के लोगों ने चांद बीबी से जिसकी आयु अब पचास बरस की थी, प्रार्थना की कि आप इस राज्य का शासन अपने हाथों में लें। चांद बीबी अहमदनगर में आई और बीजापुर के बादशाह को उसने सहायता के लिये लिखा; अहमद नगर के कोट की मरम्मत की और सेना लेकर स्वयं शत्रु से लड़ने को तयार हुई। मुग़लों ने सुरंग लगाकर क़िले की दीवार उड़ा दी और चाहा कि इस राह से अन्दर घुस जायं और क़िला ले लें परन्तु चांद बीबी सिर से पैर तक कवच पहिने, हाथ में तलवार लिये, द्वार पर उपस्थित थी और बैरी के जो सैनिक निकट आते थे उन्हें पीछे हटाती थी। अहमदनगर के लोगों को एक स्त्री का यह साहस और बीरता देखकर ऐसा जोश आया और मुग़लों की सेना पर ऐसे टूटे कि उसे पीछे हटना पड़ा। चांद बीबी ने रातों रात वह सुरङ्ग भरवा दी। सवेरेही समाचार मिला कि बीजापुर का बादशाह सेना लिये उसकी सहायता को आता है। मुराद ने चांद बीबी से सन्धि कर ली और पास का इलाक़ा लेकर अहमद नगर से हाथ खींच लिया! कुछ दिन पीछे एक नीच विद्रोही ने मल्का चांद बीबी को मार डाला। फिर अकबर बादशाह स्वयं

दखिन गया और अहमदनगर का क़िला जीता पर उसकी पीठ फिरते ही मलिक अम्बर ने सारा देश मुग़लों के पंजे से छुड़ा कर अपने आधीन कर लिया। अन्त में शाहजहां के राज्य में मलिक अम्बर के बेटों ने यह देश मुग़लों के हवाले कर दिया।

४—गोलकुंडा रियासत की नीव कुतुबशाह नामी एक ईरानी ने सन् १५१० ई० में डाली थी। इसके उत्तराधिकारी महम्मद ने हैदराबाद नगर बसाया। सन् १६८५ ई० में औरङ्गजेब ने गोलकुंडा को घेर लिया। नगर निवासियों ने बड़ी वीरता के साथ उसका सामना किया पर अन्त में हार गये और यह कुल देश मुग़ल राज में मिल गया।

५—बीदर की रियासत क़ासिम बरीद की स्थापित की हुई थी। यह पहिले एक दास था फिर बढ़ते बढ़ते बहमनी सुलतान महमूद का मन्त्री हो गया था। इसने अपने स्वामी को क़ैद किया और स्वतन्त्र हो गया। इस वंश के सातवें बादशाह के समय में बीजापुर के सुलतान ने इसे जीत लिया। इसके पीछे १६८८ ई० में औरङ्गजेब ने बीदर का क़िला ले लिया।

६—बरार की रियासत सब से छोटी थी। इसकी नीव १४८४ ई० में इमादुल्मुल्क ने डाली थी। यह कनाड़ा का ब्राह्मण था और बहमनी सुलतान और विजयनगर के राजा की लड़ाई में क़ैद हो गया था। यह मुसलमान हो गया और बहुत ऊंचे पदों पर रहकर अन्त में बरार का हाकिम बनाया गया। फिर वहां का बादशाह बन गया। इसकी राजधानी एलिचपुर थी। बरार देश को सन् १५७२ ई० में अहमदनगर के बादशाह ने जीत लिया और फिर बुढ़ापे में बादशाह अकबर ने इसे जीता।

७—सन् १५६५ ई० में दखिन के चार मुसलमान बादशाहों ने विजयनगर के राजा राजाराम पर जो बड़ा अत्याचारी और

अभिमानी था चढ़ाई की। कृष्णा नदी के तट पर तालीकोट स्थान में बड़ा भारी युद्ध हुआ। लाखों मारे गये अन्त में मुसलमानों की जीत हुई। विजयनगर का सत्यनाश हो गया। कृष्णा नदी के दक्षिण जितने हिन्दू नायक और पालेकार विजयनगर की ओर से नियुक्त थे सब अपने अपने इलाक़ों के राजा हो गये।

३१—मुग़ल वंश।

१—मुग़ल और मंगोल एक ही शब्द है। मुग़ल उस देश से आये थे जिसे मंगोलिया कहते हैं और जो मध्य एशिया में चीन और तुर्किस्तान के बीच में है। उस देश को तातार भी कहते हैं। जो लोग उस देश में बसे थे वह समय समय पर अनेक नामों से पुकारे जाते रहे; जैसे सिथियावाले, तूरानी, तातारी। पुराने यूनानी ऐतिहासिक इन को सिथियन लिखते हैं। ईरानी इस देश को तूरान कहते थे। इस कारण यहां के रहनेवालों को तूरानी भी कहते हैं।

२—तुर्किस्तान आर्यों का पुराना निवासस्थान था। समय बीतने पर कुछ मुग़ल या तातारी पहाड़ पार करके तुर्किस्तान में उतर आये और जो आर्य वहां रहते थे उन के साथ रहने सहने लगे। उन्हों ने आर्य स्त्रियों से व्याह कर लिया। इन्हीं की बोली बोलने लगे और इन के सजातीय बन गये। उस समय में यह लोग तुर्क कहलाते थे; बन बन फिरनेवाले असभ्य तातारियों से भिन्न थे और उन को नीच जानते थे। तुर्क लम्बे और सुन्दर होते थे। कोई कोई लम्बी दाढ़ी रखते थे। तातारियों का डील छोटा नाक चिपटी रंग पीला और मुंह फैला होता था; मुंह पर बाल न होते थे। तातारी मैले थे और बनमानुसों से कुछ ही अच्छे हों तो

हों। तुर्कों की भांति यह भी मुसलमान थे पर बहुतेरे तो नाम ही को। भारतवासी तातारी और तुर्क में भेद न जानते थे। मुग़ल वंश के बादशाहों को मुग़ल कहने का कारण यही है। यह लोग मंगोलिया के मुग़ल न थे। यह तुर्किस्तान के तुर्क थे और इन को तुरकी बादशाह कहना चाहिये।

३—भारत के मुसलमान बादशाहों में मुग़ल सब से ज़बरदस्त हुए। इस वंश के १५ बादशाह हुए। इन में आदि के ६ बहुत प्रसिद्ध हैं। पिछले ९ न ऐसे प्रसिद्ध थे और न उनकी ऐसी शक्ति थी। पहिले ६ बादशाहों के नाम यह हैं; बाबर, हुमायूं, अकबर, जहांगीर, शाहजहां, औरंगजेब।

३२—बाबर।

(सन् १५२६ ई० से सन् १५३० ई० तक)

१—तैमूर के मरने पर उसका राज बहुत सी छोटी छोटी रियासतों में बँट गया। एक रियासत क़ोक़न्द की थी जो तुर्किस्तान का एक भाग है। बहुत दिन पीछे यह रियासत बाबर के हाथ लगी। बाबर तैमूर के नाती का बेटा था। बाप के मरने पर बाबर इस रियासत का मालिक हुआ। इस समय वह तेरह बरस का था।

२—राजसिंहासन पर बैठा ही था कि चाचा ने चढ़ाई की और जान के डर से बाबर को उस से लड़ना पड़ा। रियासत उसके हाथ से निकल गई। पर तुर्किस्तान के बहुत से बिना घरबार के सरदार और उनकी प्रजा बाबर को बराबर अपना बादशाह मानती रही और कभी उसका साथ न छोड़ा। बीस बरस तक बाबर इधर उधर फिरता रहा, आज यहां कल वहां।

नित किसी न किसी के साथ झगड़ा बखेड़ा होता रहा। आज जीता तो कल हारा और भाग कर जान छिपाता फिरा। पर इसके तुरक सिपाही सदा इसके साथ रहे। कभी कभी सारे दिन काठी उतार कर बैठना न मिलता और रात को कभी धरती का बिछौना और आकाश का चँदवा छोड़ और कोई सुख से सोने की सामग्री न जुड़ी।

३—अंत को बाबर ने दक्षिण की ओर बढ़ना निश्चय किया। तुर्किस्तान में बाबर ऐसे सरदार बहुत थे; वहां राज्यस्थापन करना सुगम न देख पड़ा। लड़ते भिड़ते कई बरस बीत गये, शहर पर शहर जीते और खो दिये। जब देखो वही जंजाल दिखाई दिया। इसके सजातीय जो इसी की नाईं बेघरबार के थे इसके साथ आगे बढ़ने को राज़ी हो गये और पहाड़ के दर्रों में होकर अफ़ग़ानिस्तान में पैठे।



बाबर।

४—अफ़ग़ान बड़े बीर और लड़ाके थे पर तुर्की सिपाही जो उत्तर से आये इनसे बढ़कर बलवान और बीर थे। बाबर ने काबुल और ग़ज़नी अपने बस में कर लिये। कई बरस यहां राज किया। पठानों का बल देखने चार बार पंजाब पर चढ़ा और जब आया पठानों के राज का कुछ न कुछ भाग छीन कर अपने किसी सरदार को उसका हाकिम बनाकर छोड़ गया। इसके पीछे जब उसे इस बात का भरोसा हो गया तो उसने अपने सरदारों से पूछा, कहो क्या कहते हो। सब ने एक मत होकर कहा कि, उद्योग करना चाहिये आगे भाग्य में जो कुछ हो।

५—बाबर इस समय ४० बरस का हो चुका था। कुल १२००० सिपाही उसके साथ थे पर उन में से एक एक सौ सौ लड़ाइयां लड़ चुका था और अपने स्वामी के लिये लड़ने मरने को तैयार था। बाबर ऐसे बीर और उसके लिये प्राणसमर्पण करने-वाले सिपाहियों को लेकर पंजाब में घुसा और सीधा दिल्ली की ओर चला गया।

६—पठान बादशाह इब्राहीम लोधी एक लाख पल्टन लेकर उसका सामना करने को बढ़ा पर उसके अफ़ग़ान सिपाही भारतवर्ष के गरम देश में रहकर अपने बाप दादों का बल और साहस खो बैठे थे। आर्यों के भारतवर्ष में आने के दिन से जब कभी उत्तरवालों का सामना पड़ा है सदा दक्षिणवालों को पीछे ही हटना पड़ा है। तुर्क ताज़ा विलायत के आये थे और उनका तन तेज बढ़ा चढ़ा था। वह आग बवण्डल की नाईं भारतवर्ष के पठानों पर टूट पड़े। बाबर अपने झिलमटोपवाले सवारों को लेकर पठानों के टिड्डीदल पल्टन में घुस गया और मुड़कर पिछाड़ी से उनका बध करने लगा। इब्राहीम की पांतियां टूट गईं और उसकी पल्टन में भागड़ पड़ गई। इब्राहीम और उसके २०००० सवार खेत रहे। यह पानीपत की पहिली लड़ाई कही जाती है और १५२६ ई० में हुई थी।

७—इस लड़ाई से दिल्ली का सिंहासन बाबर को मिलगया। राजपूताने के राजाओं को छोड़ इस समय हिन्दुस्थान में मुसलमानों की पांच बादशाहतें थीं। पहिले बाबर ने उन देशों के लेने का उद्योग किया जो सय्यद और लोधी वंश के बादशाहों के हाथ से निकल गये थे। आप दिल्ली में रहा और अपने बेटे हुमायूं को एक बड़ी पल्टन देकर पूर्व की ओर भेजा; अपने और विश्वास पात्र सेनापतियों को थोड़ी थोड़ी सेना देकर इधर उधर भेज दिया।

हुमायूं ने थोड़े ही दिनों में जौनपूर का इलाक़ा ले लिया और छः महीने के भीतर ही वह सारा देश दिल्ली राज्य में मिलगया जो कुछ काल तक लोधियों के अधिकार में था। दिल्ली और आगरे में लोधियों का बटोरा धन ढेर का ढेर बाबर के हाथ लगा। इस में से कुछ थोड़ा सा बाबर ने रहने दिया और सब अपने सिपाहियों और साथियों में बांट दिया। सिपाहियों को तो जो मिलना था सो मिलगया पर अफ़गानिस्तान, तुर्किस्तान और ईरान में भी स्त्री पुरुष और बच्चों को घर बैठे बाबर ने भेंट पहुंचाई।

८—अब बाबर को राजपूतों से लड़ना रहगया। राजपूतों में इस समय चित्तौड़ (उदयपुर) का राजा संग्रामसिंह था जो राना सांगा के नाम से प्रसिद्ध है। इस ने मालवे के पठान बादशाह को परास्त किया था और सारे राजपूत राजा इसे अपना सरदार और सिरताज मानते थे। बाबर आप लिखता है कि राना अद्वितीय बीर था। एक लड़ाई में राना की एक आंख जाती रही थी दूसरी में एक हाथ कट गया था उसकी टांग टूटी हुई थी देह में नीचे से ऊपर तक नेज़े और तलवार के ८० घाव थे। सात राजा और दस सामंत लड़ाई के मैदान में उसके साथ आये। एक दिन वह था कि राना सांगा ने बाबर से कहला भेजा था कि आप आयें और दुष्ट पठान के पंजे से भारत को छुड़ायें। पर वह कब जानता था कि इब्राहीम को जीत कर बाबर भारतवर्ष में मुग़लराज्य स्थापित करेगा। वह यही समझा था कि तैमूर की तरह बाबर भी दिल्ली को लूट पाट कर काबुल चला जायगा और पठानों के नष्ट हो जाने पर राजपूत सारे देश में राज करने लगेंगे।

९—राना सांगा के साथ एक तो इब्राहीम का भाई महम्मद लोधी था जो अपने को भाई का उत्तराधिकारी मान कर बादशाही का दावा करता था, दूसरा हसनखां जो अफ़ग़ान सरदारों का

मुखिया था। इनके सिवाय बहुत से सरदार, सेनापति और सामंत थे जो लोधियों या पठानों की बादशाही फिर से स्थापन करना चाहते थे। यह सरदार और सामंत यह समझते थे कि जो बाबर भारत में रहगया तो हमारी रियासतें छिन जायंगी और हमारा कोई पुछन्तर न रहेगा। उन्हों ने हिन्दुओं से भी यही कहा कि तैमूर की तरह बाबर भी तुम्हें बेदरदी से मारेगा और जो कुछ तुम्हारे पास है सब नोच खसोट लेगा। परिणाम यह हुआ कि सब के सब मिल कर एक बड़ी सेना लेकर बाबर का सामना करने आये। आगरे से २० मील पर सीकरी के मैदान में बड़ी भारी लड़ाई हुई। बाबर को मदिरा बहुत प्यारी थी पर इस लड़ाई से पहिले उसने यह मन्नत की कि हे अल्लाह इस अवसर पर मुझे जितादे तो मैं कभी शराब न पिऊंगा। सोने चांदी के जितने बरतन डेरे में थे सब तोड़ कर गरीबों को बांट दिये गये। जितनी मदिरा थी सब लुंढा दी गई। जो ताज़ी शराब ग़ज़नी से बादशाह के पीने के लिये आई थी उसमें नमक पीसकर मिला दिया जिसमें वह पीने के काम की न रहे। बाबर ने जो देखा कि उसके कुछ साथी ढीले देख पड़ते हैं तो उसने सब को इकट्ठा करके यह व्याख्यान दिया, "जो पैदा हुआ है वह एक दिन ज़रूर मरेगा। केवल ईश्वर मौत से बचा है। फिर जब दो दिन आगे या दो दिन पीछे मरना सिद्ध है और हमारे मरने का दिन आगया है तो ऐसे अवसर पर अपने दीन (धर्म) और अपनी जाति के लिये मर्दों की तरह प्राण समर्पण करके क्यों न मरें। नेकनामी से मरना मुंहकाला करके जीने से अच्छा है। तुम मेरे साथ क़ुरान उठाओ और क़सम खाओ कि बैरी को पीठ न दिखायेंगे। जो हम वीरता से लड़ेंगे तो ईश्वर हमारा सहायक होगा और हम ज़रूर जीतेंगे"। बाबर के साथियों ने क़ुरान की क़सम खाई कि बैरी को जीतेंगे या लड़ मरेंगे। परिणाम यह हुआ

कि राना सांगा की हार हुई और वह खेत से भाग खड़ा हुआ और थोड़े ही दिन पीछे मर गया। हसनखां भी मारा गया। बाबर को जीत की यादगारी में सिकरी को फतेहपुर सिकरी का नाम मिलगया। इसके पीछे राजपूतों ने दिल्ली लेने और भारत पर राज करने का उद्योग न किया। अब यह लोग राजपूताने में रहे और इसी को बाबर की चढ़ाइयों से बचाने में लगे रहे।

१०—दूसरे बरस बाबर ने चंदेरी पर चढ़ाई की। यह मालवे की सरहद पर राजपूतों का एक गढ़ था। राजपूत बीरता से लड़े पर गढ़ टूट गया। राजपूतों का यह नियम है कि न खुशी से आधीनता स्वीकार करते हैं न बैरी से दया और क्षमा मांगते हैं। पहिले उन्हों ने अपनी स्त्रियों का बध किया फिर नंगी तलवारें हाथ में लेकर गढ़ से बाहर निकले और मर्दों की तरह लड़ लड़ कर बैरी के हाथों से कट कट कर मर गये।

११—बाबर का असली नाम ज़हीरुद्दीन था। तुर्किस्तान के सर्दारों ने इसकी प्रशंसा में इसको बाबर की पदवी दी थी और अब वह इसी नाम से प्रसिद्ध है। बाबर उस भाषा में सिंह को कहते हैं और यह नाम इस बहादुर बादशाह को फबता है। यह इतना बलवान था कि दोनों कांख में पूरे डील के एक एक जवान को दबा कर कोट पर दौड़ सकता था; तैरने वाला ऐसा था कि जो नदी उसके सामने पड़ती थी उसको तर ही के पार करता था; सवार ऐसा था कि दिन दिन भर में सौ सौ मील के धावे मारता था।

१२—बाबर योद्धा तो था पर निर्दयी नहीं था। उसने कभी किसी ऐसे मनुष्य को नहीं मारा जो लड़ने के योग्य न हो अथवा लड़ाई से भागता हो। भारतवर्ष में आने से उसकी कभी यह इच्छा नहीं थी कि वह हिन्दुओं को मारे या उनके मन्दिर

३०—दखिन की मुसलमानी रियासतें।

(सन् १५०० ई० से सन् १६५७ ई० तक)

१—बहमनी रियासत के बिगड़ने पर पांच रियासतें स्थापित हुईं। बीच में बीदर, उत्तर में बरार और अहमदनगर, और दक्षिण में बीजापुर और गोलकुण्डा। बीजापुर, अहमदनगर और बरार तीनों मिलकर देवगिरि अथवा महाराष्ट्र की प्राचीन रियासत की स्थानापन्न थीं।

२—सन् १४८९ ई० में यूसुफ़ आदिलशाह ने दखिन के पश्चिमीय भाग महाराष्ट्र देश में बीजापुर की रियासत स्थापित की। यूसुफ़ मुराद सुलतान रूम का बेटा था। बाप की मृत्यु के पीछे यूसुफ के भाई ने उसको मरवा डालना चाहा किन्तु मां ने उसके प्राण बचाने के लिये उसे फ़ारस भेज दिया। यूसुफ़ दासों की भांति बिका और बहमनी सुलतान के दर्बार में पहुंचा। यहां पर वह होते होते एक ऊंचे पद से दूसरे ऊंचे पद पर नियुक्त होगया यहां तक कि बीजापुर का हाकिम बना दिया गया। जब उसने देखा कि बीजापुर का बादशाह शक्तिहीन हो चला है तो वह स्वयं बीजापुर का बादशाह बन बैठा। अली आदिल शाह जिसने प्रसिद्ध मलका चांद बीबी से ब्याह किया था इसी वंश का था। चांद बीबी अहमदनगर के बादशाह निज़ाम शाह की बेटी थी। इसने राज काज में अपने पति की बड़ी सहायता की और घोड़े पर सवार होकर उसके साथ लड़ाई के मैदान में जाती थी। यह स्त्री खुले दर्बार में बैठ कर राज का काम देखती थी। औरङ्गजेब के राज में शिवाजी महाराष्ट्र देश के राजा हुए और बहुत सा इलाका बीजापुर का उन्होंने अपने राज्य में मिला लिया।

सन् १६८६ ई० में औरङ्गजेब ने आप बीजापुर पर चढ़ाई की और उसे जीत कर आदिलशाही वंश का नाश कर दिया।

२—अहमदनगर की रियासत का आरम्भ भी बीजापुर के साथ ही साथ १४८८ ई० में हुआ। इस रियासत की नीव निज़ाम शाह ने डाली थी। इसका बाप वास्तव में एक ब्राह्मण था और यह बचपन ही में दास होकर मुसलमान हो गया था। इसने अहमद नगर बसाया और सात बरस घेरे रहने के पीछे दौलताबाद को जीत लिया। १५९५ ई० में बादशाह अकबर के बेटे मुराद ने अहमद नगर को घेरा। उस समय अहमदनगर का कोई बादशाह न था। इस कारण अहमदनगर के लोगों ने चांद बीबी से जिसकी आयु अब पचास बरस की थी, प्रार्थना की कि आप इस राज्य का शासन अपने हाथों में लें। चांद बीबी अहमदनगर में आई और बीजापुर के बादशाह को उसने सहायता के लिये लिखा; अहमद नगर के कोट की मरम्मत की और सेना लेकर स्वयं शत्रु से लड़ने को तयार हुई। मुग़लों ने सुरंग लगाकर क़िले की दीवार उड़ा दी और चाहा कि इस राह से अन्दर घुस जायं और क़िला ले लें परन्तु चांद बीबी सिर से पैर तक कवच पहिने, हाथ में तलवार लिये, द्वार पर उपस्थित थी और बैरी के जो सैनिक निकट आते थे उन्हें पीछे हटाती थी। अहमदनगर के लोगों को एक स्त्री का यह साहस और बीरता देखकर ऐसा जोश आया और मुग़लों की सेना पर ऐसे टूटे कि उसे पीछे हटना पड़ा। चांद बीबी ने रातों रात वह सुरङ्ग भरवा दी। सवेरेही समाचार मिला कि बीजापुर का बादशाह सेना लिये उसकी सहायता को आता है। मुराद ने चांद बीबी से सन्धि कर ली और पास का इलाक़ा लेकर अहमद नगर से हाथ खींच लिया। कुछ दिन पीछे एक नीच विद्रोही ने मल्का चांद बीबी को मार डाला। फिर अकबर बादशाह स्वयं

दखिन गया और अहमदनगर का क़िला जीता पर उसकी पीठ फिरते ही मलिक अम्बर ने सारा देश मुग़लों के पंजे से छुड़ा कर अपने आधीन कर लिया। अन्त में शाहजहां के राज्य में मलिक अम्बर के बेटों ने यह देश मुग़लों के हवाले कर दिया।

४—गोलकुंडा रियासत की नीव कुतुबशाह नामी एक ईरानी ने सन् १५१० ई० में डाली थी। इसके उत्तराधिकारी महम्मद ने हैदराबाद नगर बसाया। सन् १६८५ ई० में औरङ्गजेब ने गोलकुंडा को घेर लिया। नगर निवासियों ने बड़ी बीरता के साथ उसका सामना किया पर अन्त में हार गये और यह कुल देश मुग़ल राज में मिल गया।

५—बीदर की रियासत क़ासिम बरीद की स्थापित की हुई थी। यह पहिले एक दास था फिर बढ़ते बढ़ते बहमनी सुलतान महमूद का मन्त्री हो गया था। इसने अपने स्वामी को क़ैद किया और स्वतन्त्र हो गया। इस वंश के सातवें बादशाह के समय में बीजापुर के सुलतान ने इसे जीत लिया। इसके पीछे १६८८ ई० में औरङ्गजेब ने बीदर का क़िला ले लिया।

६—बरार की रियासत सब से छोटी थी। इसकी नीव १४८४ ई० में इमादुल्मुल्क ने डाली थी। यह कनाड़ा का ब्राह्मण था और बहमनी सुलतान और विजयनगर के राजा की लड़ाई में क़ैद हो गया था। यह मुसलमान हो गया और बहुत ऊंचे पदों पर रहकर अन्त में बरार का हाकिम बनाया गया। फिर वहां का बादशाह बन गया। इसकी राजधानी एलिचपुर थी। बरार देश को सन् १५७२ ई० में अहमदनगर के बादशाह ने जीत लिया और फिर बुढ़ापे में बादशाह अकबर ने इसे जीता।

७—सन् १५६५ ई० में दखिन के चार मुसलमान बादशाहों ने बिजयनगर के राजा राजाराम पर जो बड़ा अत्याचारी और

अभिमानी था चढ़ाई की। कृष्णा नदी के तट पर तालीकोट स्थान में बड़ा भारी युद्ध हुआ। लाखों मारे गये अन्त में मुसलमानों की जीत हुई। विजयनगर का सत्यनाश हो गया। कृष्णा नदी के दक्षिण जितने हिन्दू नायक और पालेकार विजयनगर की ओर से नियुक्त थे सब अपने अपने इलाकों के राजा हो गये।

३१—मुग़ल वंश।

१—मुग़ल और मंगोल एक ही शब्द है। मुग़ल उस देश से आये थे जिसे मंगोलिया कहते हैं और जो मध्य एशिया में चीन और तुर्किस्तान के बीच में है। उस देश को तातार भी कहते हैं। जो लोग उस देश में बसे थे वह समय समय पर अनेक नामों से पुकारे जाते रहे; जैसे सिथियावाले, तूरानी, तातारी। पुराने यूनानी ऐतिहासिक इन को सिथियन लिखते हैं। ईरानी इस देश को तूरान कहते थे। इस कारण यहां के रहनेवालों को तूरानी भी कहते हैं।

२—तुर्किस्तान आर्यों का पुराना निवासस्थान था। समय बीतने पर कुछ मुग़ल या तातारी पहाड़ पार करके तुर्किस्तान में उतर आये और जो आर्य वहां रहते थे उन के साथ रहने सहने लगे। उन्हों ने आर्य स्त्रियों से व्याह कर लिया। इन्हीं की बोली बोलने लगे और इन के सजातीय बन गये। उस समय में यह लोग तुर्क कहलाते थे; बन बन फिरनेवाले असभ्य तातारियों से भिन्न थे और उन को नीच जानते थे। तुर्क लम्बे और सुन्दर होते थे। कोई कोई लम्बी दाढ़ी रखते थे। तातारियों का डील छोटा नाक चिपटी रंग पीला और मुंह फैला होता था; मुंह पर बाल न होते थे। तातारी मैले थे और बनमानुसों से कुछ ही अच्छे हों तो

हों। तुर्कों की भांति यह भी मुसलमान थे पर बहुतेरे तो नाम ही को। भारतवासी तातारी और तुर्क में भेद न जानते थे। मुग़ल वंश के बादशाहों को मुग़ल कहने का कारण यही है। यह लोग मंगोलिया के मुग़ल न थे। यह तुर्किस्तान के तुर्क थे और इन को तुरकी बादशाह कहना चाहिये।

३—भारत के मुसलमान बादशाहों में मुग़ल सब से ज़बरदस्त हुए। इस वंश के १५ बादशाह हुए। इन में आदि के ६ बहुत प्रसिद्ध हैं। पिछले ८ न ऐसे प्रसिद्ध थे और न उनके ऐसी शक्ति थी। पहिले ६ बादशाहों के नाम यह हैं; बाबर, हुमायूं, अकबर, जहांगीर, शाहजहां, औरंगजेब।

३२—बाबर।

(सन् १५२६ ई० से सन् १५३० ई० तक)

१—तैमूर के मरने पर उसका राज बहुत सी छोटी छोटी रियासतों में बँट गया। एक रियासत क़ोक़न्द की थी जो तुर्किस्तान का एक भाग है। बहुत दिन पीछे यह रियासत बाबर के हाथ लगी। बाबर तैमूर के नाती का बेटा था। बाप के मरने पर बाबर इस रियासत का मालिक हुआ। इस समय वह तेरह बरस का था।

२—राजसिंहासन पर बैठा ही था कि चाचा ने चढ़ाई की और जान के डर से बाबर को उस से लड़ना पड़ा। रियासत उसके हाथ से निकल गई। पर तुर्किस्तान के बहुत से बिना घरबार के सरदार और उनकी प्रजा बाबर को बराबर अपना बादशाह मानती रही और कभी उसका साथ न छोड़ा। बीस बरस तक बाबर इधर उधर फिरता रहा, आज यहां कल वहां।

नित किसी न किसी के साथ झगड़ा बखेड़ा होता रहा। आज जीता तो कल हारा और भाग कर जान छिपाता फिरा। पर इसके तुरक सिपाही सदा इसके साथ रहे। कभी कभी सारे दिन काठी उतार कर बैठना न मिलता और रात को कभी धरती का बिछौना और आकाश का चँदवा छोड़ और कोई सुख से सोने की सामग्री न जुड़ी।



बाबर।

३—अंत को बाबर ने दक्षिण की ओर बढ़ना निश्चय किया। तुर्किस्तान में बाबर ऐसे सरदार बहुत थे; वहां राज्यस्थापन करना सुगम न देख पड़ा। लड़ते भिड़ते कई बरस बीत गये, शहर पर शहर जीते और खो दिये। जब देखो वही जंजाल दिखाई दिया। इसके सजातीय जो इसी की नाईं बेघरबार के थे इसके साथ आगे बढ़ने को राज़ी हो गये और पहाड़ के दर्रों में होकर अफ़ग़ानिस्तान में पैठे।

४—अफ़ग़ान बड़े वीर और लड़ाके थे पर तुर्की सिपाही जो उत्तर से आये इनसे बढ़कर बलवान और वीर थे। बाबर ने काबुल और ग़ज़नी अपने बस में कर लिये। कई बरस यहां राज किया। पठानों का बल देखने चार बार पंजाब पर चढ़ा और जब आया पठानों के राज का कुछ न कुछ भाग छीन कर अपने किसी सरदार को उसका हाकिम बनाकर छोड़ गया। इसके पीछे जब उसे इस बात का भरोसा हो गया तो उसने अपने सरदारों से पूछा, कहो क्या कहते हो। सब ने एक मत होकर कहा कि, उद्योग करना चाहिये आगे भाग्य में जो कुछ हो।

५—बाबर इस समय ४० बरस का हो चुका था। कुल १२००० सिपाही उसके साथ थे पर उन में से एक एक सौ सौ लड़ाइयां लड़ चुका था और अपने स्वामी के लिये लड़ने मरने को तैयार था। बाबर ऐसे वीर और उसके लिये प्राणसमर्पण करने-वाले सिपाहियों को लेकर पंजाब में घुसा और सीधा दिल्ली की ओर चला गया।

६—पठान बादशाह इब्राहीम लोधी एक लाख पल्टन लेकर उसका सामना करने को बढ़ा पर उसके अफ़ग़ान सिपाही भारतवर्ष के गरम देश में रहकर अपने बाप दादों का बल और साहस खो बैठे थे। आर्यों के भारतवर्ष में आने के दिन से जब कभी उत्तरवालों का सामना पड़ा है सदा दक्षिणवालों को पीछे ही हटना पड़ा है। तुर्क ताज़ा विलायत के आये थे और उनका तन तेज बढ़ा चढ़ा था। वह आग बवण्डल की नाईं भारतवर्ष के पठानों पर टूट पड़े। बाबर अपने झिलमटोपवाले सवारों को लेकर पठानों के टिड्डीदल पल्टन में घुस गया और मुड़कर पिछाड़ी से उनका वध करने लगा। इब्राहीम की पांतियां टूट गईं और उसकी पल्टन में भागड़ पड़ गई। इब्राहीम और उसके २०००० सवार खेत रहे। यह पानीपत की पहिली लड़ाई कही जाती है और १५२६ ई० में हुई थी।

७—इस लड़ाई से दिल्ली का सिंहासन बाबर को मिलगया। राजपूताने के राजाओं को छोड़ इस समय हिन्दुस्थान में मुसलमानों की पांच बादशाहतें थीं। पहिले बाबर ने उन देशों के लेने का उद्योग किया जो सय्यद और लोधी वंश के बादशाहों के हाथ से निकल गये थे। आप दिल्ली में रहा और अपने बेटे हुमायूं को एक बड़ी पल्टन देकर पूर्व की ओर भेजा; अपने और विश्वास पात्र सेनापतियों को थोड़ी थोड़ी सेना देकर इधर उधर भेज दिया।

हुमायूं ने थोड़े ही दिनों में जौनपूर का इलाक़ा ले लिया और छः महीने के भीतर ही वह सारा देश दिल्ली राज्य में मिलगया जो कुछ काल तक लोधियों के अधिकार में था। दिल्ली और आगरे में लोधियों का बटोरा धन ढेर का ढेर बाबर के हाथ लगा। इस में से कुछ थोड़ा सा बाबर ने रहने दिया और सब अपने सिपाहियों और साथियों में बांट दिया। सिपाहियों को तो जो मिलना था सो मिलगया पर अफ़गानिस्तान, तुर्किस्तान और ईरान में भी स्त्री पुरुष और बच्चों को घर बैठे बाबर ने भेंट पहुंचाई।

८—अब बाबर को राजपूतों से लड़ना रहगया। राजपूतों में इस समय चित्तौड़ (उदयपुर) का राजा संग्रामसिंह था जो राना सांगा के नाम से प्रसिद्ध है। इस ने मालवे के पठान बादशाह को परास्त किया था और सारे राजपूत राजा इसे अपना सरदार और सिरताज मानते थे। बाबर आप लिखता है कि राना अद्वितीय वीर था। एक लड़ाई में राना की एक आंख जाती रही थी दूसरी में एक हाथ कट गया था उसकी टांग टूटी हुई थी देह में नीचे से ऊपर तक नेज़े और तलवार के ८० घाव थे। सात राजा और दस सामंत लड़ाई के मैदान में उसके साथ आये। एक दिन वह था कि राना सांगा ने बाबर से कहला भेजा था कि आप आयें और दुष्ट पठान के पंजे से भारत को छुड़ायें। पर वह कब जानता था कि इब्राहीम को जीत कर बाबर भारतवर्ष में मुग़लराज्य स्थापित करेगा। वह यही समझा था कि तैमूर की तरह बाबर भी दिल्ली को लूट पाट कर काबुल चला जायगा और पठानों के नष्ट हो जाने पर राजपूत सारे देश में राज करने लगेंगे।

९—राना सांगा के साथ एक तो इब्राहीम का भाई महम्मद लोधी था जो अपने को भाई का उत्तराधिकारी मान कर बादशाही का दावा करता था, दूसरा हसनखां जो अफ़ग़ान सरदारों का

मुखिया था। इनके सिवाय बहुत से सरदार, सेनापति और सामंत थे जो लोधियों या पठानों की बादशाही फिर से स्थापन करना चाहते थे। यह सरदार और सामंत यह समझते थे कि जो बाबर भारत में रहगया तो हमारी रियासतें छिन जायंगी और हमारा कोई पुछन्तर न रहेगा। उन्हों ने हिन्दुओं से भी यही कहा कि तैमूर की तरह बाबर भी तुम्हें बेदरदी से मारेगा और जो कुछ तुम्हारे पास है सब नोच खसोट लेगा। परिणाम यह हुआ कि सब के सब मिल कर एक बड़ी सेना लेकर बाबर का सामना करने आये। आगरे से २० मील पर सीकरी के मैदान में बड़ी भारी लड़ाई हुई। बाबर को मदिरा बहुत प्यारी थी पर इस लड़ाई से पहिले उसने यह मन्नत की कि हे अल्लाह इस अवसर पर मुझे जितादे तो मैं कभी शराब न पिऊंगा। सोने चांदी के जितने बरतन डेरे में थे सब तोड़ कर गरीबों को बांट दिये गये। जितनी मदिरा थी सब लुंढा दी गई। जो ताज़ी शराब ग़जनी से बादशाह के पीने के लिये आई थी उसमें नमक पीसकर मिला दिया जिसमें वह पीने के काम की न रहे। बाबर ने जो देखा कि उसके कुछ साथी ढीले देख पड़ते हैं तो उसने सब को इकट्ठा करके यह व्याख्यान दिया, "जो पैदा हुआ है वह एक दिन ज़रूर मरेगा। केवल ईश्वर मौत से बचा है। फिर जब दो दिन आगे या दो दिन पीछे मरना सिद्ध है और हमारे मरने का दिन आगया है तो ऐसे अवसर पर अपने दीन (धर्म) और अपनी जाति के लिये मर्दों की तरह प्राण समर्पण करके क्यों न मर। नेकनामी से मरना मुंहकाला करके जीने से अच्छा है। तुम मेरे साथ कुरान उठाओ और क़सम खाओ कि बैरी को पीठ न दिखायेंगे। जो हम बीरता से लड़ेंगे तो ईश्वर हमारा सहायक होगा और हम ज़रूर जीतेंगे"। बाबर के साथियों ने कुरान की क़सम खाई कि बैरी को जीतेंगे या लड़ मरंगे। परिणाम यह हुआ

कि राना सांगा की हार हुई और वह खेत से भाग खड़ा हुआ और थोड़े ही दिन पीछे मर गया। हसनखां भी मारा गया। बाबर की जीत की यादगारी में सिकरी को फतेहपुर सिकरी का नाम मिलगया। इसके पीछे राजपूतों ने दिल्ली लेने और भारत पर राज करने का उद्योग न किया। अब यह लोग राजपूताने में रहे और इसी को बाबर की चढ़ाइयों से बचाने में लगे रहे।

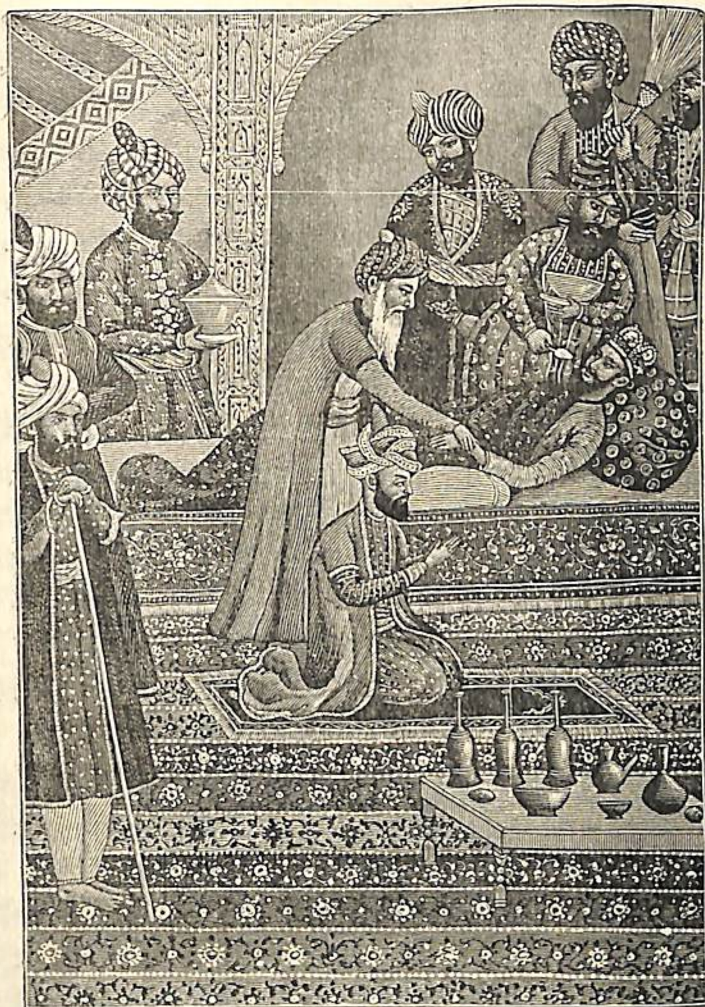
१०—दूसरे बरस बाबर ने चंदेरी पर चढ़ाई की। यह मालवे की सरहद पर राजपूतों का एक गढ़ था। राजपूत बीरता से लड़े पर गढ़ टूट गया। राजपूतों का यह नियम है कि न खुशी से आधीनता स्वीकार करते हैं न बरी से दया और क्षमा मांगते हैं। पहिले उन्हों ने अपनी स्त्रियों का बध किया फिर नंगी तलवारें हाथ में लेकर गढ़ से बाहर निकले और मर्दों की तरह लड़ लड़ कर बैरी के हाथों से कट कट कर मर गये।

११—बाबर का असली नाम ज़हीरुद्दीन था। तुर्किस्तान के सर्दारों ने इसकी प्रशंसा में इसको बाबर की पदवी दी थी और अब वह इसी नाम से प्रसिद्ध है। बाबर उस भाषा में सिंह को कहते हैं और यह नाम इस बहादुर बादशाह को फबता है। यह इतना बलवान था कि दोनों कांख में पूरे डील के एक एक जवान को दबा कर कोट पर दौड़ सकता था; तैरने वाला ऐसा था कि जो नदी उसके सामने पड़ती थी उसको तर ही के पार करता था; सवार ऐसा था कि दिन दिन भर में सौ सौ मील के धावे मारता था।

१२—बाबर योद्धा तो था पर निर्दयी नहीं था। उसने कभी किसी ऐसे मनुष्य को नहीं मारा जो लड़ने के योग्य न हो अथवा लड़ाई से भागता हो। भारतवर्ष में आने से उसकी कभी यह इच्छा नहीं थी कि वह हिन्दुओं को मारे या उनके मन्दिर

तोड़े और देश को लूटे। वह यह चाहता था कि भले बादशाहों की तरह देश का शासन करे। बाबर अपने वचन पर दृढ़ रहता था। नीच कर्मों से उसको घृणा थी ; वह सदा प्रसन्न वदन और हँसमुख रहा करता। अपने जीवन-चरित में जो उसने अपने हाथ से लिखा है वह कहता है कि जब कभी मैं लड़ाई से हार गया या मुझे किसी कार्य्य में सफलता न हुई तब भी मैं निराश न हुआ और न हाथ पर हाथ धरके बैठा ही रहा। एक और जगह लिखता है कि मनुष्य कैसे वह कर्म कर सकता है जिसमें मरने के पीछे उसके नाम पर धब्बा लगे।

१२—हिन्दुस्थान में आने पर बाबर बहुत काल तक न जिया। वह दिल्ली के सिंहासन पर चार ही बरस बैठा था कि निर्बल हो गया और बीमारी उसे सताने लगी। उसका प्यारा बेटा हुमायुं भी ऐसा बीमार पड़ गया कि बिस्तर से उठने के योग्य न रहा और ऐसा जान पड़ने लगा कि अब यह न बचेगा। बाबर के सामने एक धार्मिक सर्दार के मुंह से निकला कि, बादशाह सलामत आप के पास जो सब से महँगे दाम की चीज़ हो वह आप ईश्वर को भेंट करें और उसे प्रार्थना करें तो क्या आश्चर्य है जो आप के पुत्र को जिला दे। आगरे में जो सब से बड़ा हीरा हुज़ूर को मिला था वह दे डालिये। बाबर ने कहा कि उस बड़े हीरे से तो मुझे अपनी जान ही बहुत प्यारी है, मैं अपनी जानही क्यों न दे दूं ? यह कह कर उसने अपने बेटे के पलङ्ग की तीन परिक्रमा की और बोला, हे ईश्वर मेरी जान ले और मेरे बेटे को जिला दे और यह कह कर चिल्ला उठा, बस अब रोग मेरे ऊपर आगया। यह जान पड़ता था कि मानों ईश्वरने उसकी बात सुन ली, क्योंकि उसी समय से हुमायुं अच्छा होने लगा और बाबर गिरता चला गया और उसी रोग में मर गया।



हुमायूं की बीमारी।

१४—इस समय बाबर की उमर अड़तालीस बरस की थी। इसने पैंतीस बरस राज किया। चार बरस अपने देश में।

छब्बीस बरस काबुल में और पांच बरस हिन्दुस्थान में। इसकी लाश काबुल पहुंचाई गई और एक सुन्दर बाग़ में एक टीले के कोने पर, जिसे बहुत दिन पहिले बाबरने इस काम के लिये आपही चुना था, गाड़ी गई। काबुल के लोग अब तक उसकी क़ब्र पर दर्शन को जाते हैं। इसने अपना जीवनचरित्र आप लिखा था जो अब तक मिलता है। तुर्की और फ़ारसी में कविता करता था। गानेका इसको बड़ा शौक़ था। अक्षर बड़े सुन्दर लिखता था। हुमायूं को पत्र लिखते हुए देख कर कहने लगा कि तुम्हारा लिखना अच्छा नहीं है और अच्छी तरह पढ़ा नहीं जाता। बाबर को फल फूल बहुत भाते थे। इसी कारण उसने दिल्ली और आगरे में कई सुन्दर बाग़ लगाये। अपने देशके बाग़ इसे कुछ ऐसे सुहावने लगते थे कि सोते में भी उनका सपना देखा करता था।

३३—हुमायूं।

(१५३० ई० से १५५६ ई० तक)

१—मरने से कुछ दिन पहिले बाबर ने अपने सब से बड़े बेटे हुमायूं को बुलाया और कहा कि बेटा, जो परमेश्वर तुम्हें मेरा सिंहासन दे तो अपने भाइयों पर दयालु रहना। हुमायूं ने भी अन्तिम काल तक अपने बाप की आज्ञा का पालन किया और क्योंकर न करता, जब यह स्वयं भी अपने भाइयों को प्यार करता था और उनको किसी तरह का दुःख देना नहीं चाहता था। बाप भी उसपर भरोसा करता और जान देता था। बाबर कहा करता था कि संसार में हुमायूं ऐसा सच्चा और विश्वासपात्र दूसरा न होगा।

२—सिंहासन पर बैठने के समय हुमायूं को आयु तेईस बरस की थी। इसके तीन भाई थे, कामरां, हन्दाल और अस्करी। राज के आरम्भ ही में इसने अपने राज्य का एक एक भाग उनको दे दिया। अफ़गानिस्तान और पञ्जाब, कामरां के हिस्से में आया; हुमायूं ने तो इसके साथ बड़ी दयालुता की पर अपने लिये कांटे बो दिये क्योंकि यह वह बीर देश थे जहां से बाबर अपनी सेना के सिपाही और अफ़सर भरती किया करता था। भाई हुमायूं की सहायता तो क्या करते उलटे उसके साथ लड़ाई भिड़ाई करने लगे। कारण यह कि हर एक बादशाह बनना चाहता था। उन्हों ने हुमायूं को जीते जो कभी चैन नहीं लेने दिया।



हुमायूं।

३—बाबर को इतना अवकाश न मिला था कि अपने राज को दृढ़ करे। जब अफ़गान सर्दारों ने सुना कि बाबर मरगया तो उन्हों ने हुमायूं से लड़ाई करने के सामान कर दिये। हुमायूं को पहिले गुजरात के सुलतान बहादुर शाह से लड़ना पड़ा; उसने बहादुर शाह को हरा कर खम्भात के निकट समुद्रतट तक पीछा किया; जहां से वह एक नाव में सवार होकर दच्छिण को दिशा में बन्दरदेव को चला। यहां उस समय पुर्तगी लोग बसे हुए थे। बहादुर शाह ने उनके यहां शरण ली परन्तु थोड़े ही दिनों पीछे पुर्तगियों ने उसे मारडाला।

४—इसके पीछे हुमायूं ने गुजरात में चम्पानेर के पहाड़ी कोट

पर धावा मारा। चार महीने तक उसे घेरे पड़ा रहा। एक रात को पहाड़ में जो दीवार की भांति सीधा खड़ा था खूंटियां गाड़ीं और तीन सौ बहादुरों के साथ आप उस खूटियों के जीने पर चढ़ कर कोट के भीतर घुसा। सुना जाता था कि उस गढ़ में किसी स्थान पर बहुत सा धन गड़ा हुआ है। क़िलेदार से बहुतेरा पूछा पर उसने कुछ पता न दिया। हुमायूं के कुछ सर्दार बोले कि इसको कष्ट दिया जाय तो कदाचित बता दे। हुमायूं को यह बात अच्छी न लगी। उसने क़िलेदार को अपने यहां बुलाया और उसकी बड़ी आव भगत की और शराब पिला दी। शराब के नशे में क़िलेदार ने बतला दिया कि अमुक तालाब के नीचे एक बड़ा तहख़ाना है और उस तहख़ाने में ख़ज़ाना है। निदान तालाब का पानी खींच कर निकाल दिया गया और खोदा तो जो धन गुजरात के बादशाहों ने जोड़ा था सब ज्यों का त्यों मिल गया। हुमायूं ने आज्ञा दी कि प्रत्येक सर्दार अपनी ढाल ले आये और जितना सोना चांदी अपनी ढाल पर उठा सके ले जाय। इस अवसर पर हुमायूं से यह नादानी हुई कि उसने इस असंख्य धन के उठाने और लुटाने और खान पान में बहुत सा समय खो दिया और उन अफ़गान सर्दारों से लड़ने का ध्यान उसको न रहा जो बाग़ी हो रहे थे।

५—गुजरात में अपने भाई अस्करी को छोड़ कर हुमायूं मालवे में पहुंचा और वहां के अफ़गान हाकिम को भगाकर फिर सुख चैन में पड़ गया। इस बीच में दिल्ली से समाचार मिला कि पूर्व का सब देश बाग़ी हो गया और अफ़गान अमीर बङ्गाले, जौनपूर और बिहार के बादशाह बन गये और आगरे के आस पास के छोटे छोटे पठान रईस लड़ने पर उतारू हैं।

६—सब से शक्तिमान बाग़ी पूर्व का एक अफ़गान सूबेदार शेरखां था। बाबर के मरने के दिन से हुमायूं तो दक्षिण दिशा में

गुजरात और मालवे में लड़ता था और शेरखां पूर्व में ज़ोर पकड़ता जाता था। उसने एक एक करके बिहार के सब क़िले ले लिये थे और पांच बरस के लगातार परिश्रम के पीछे अपने आप को बिहार और बङ्गाले का मालिक बना लिया था।

७—अब तक हुमायूं उसकी ओर से निश्चिन्त था। गुजरात से आगरे जाने के एक बरस तक वह आराम और चैन में पड़ा रहा और उसके हराने का कोई उपाय न किया। गुजरात का हाल यह हुआ कि हुमायूं के हटते ही वहां के अफ़गानों ने फिर सिर उठाया और अस्करी को जो उनका सामना न कर सकता था देश से निकाल दिया। मालवा भी इसी भांति शीघ्रही हाथ से निकल गया। अब हुमायूं को यह चिन्ता हुई कि जो कुछ देश हाथ से निकले जा रहे हैं उनको फिर ले लेना चाहिए। बाबर के समय के बहादुर सिपाही कुछ तो लड़ाई भिड़ाई में मर खप चुके थे और कुछ अपनी आयु पूरी करके इस संसार से चल बसे थे। हुमायूं ने अपने भाई कामरां को जो काबुल और पंजाब का हाकिम था लिखा कि कुछ सेना भेजो किन्तु कामरां ने उत्तर में लिख दिया कि मैं कुछ नहीं कर सकता। इस कारण हुमायूं की सेना में बड़ी गड़बड़ी थी और उसमें बहुत से अनाड़ी जवान भरे थे।

८—अब हिन्दाल और अस्करी को संग लेकर हुमायूं पूर्व की ओर चला; पहिले बनारस के निकट चुनार गढ़ पर धावा मारा परन्तु उस गढ़ के विजय करने में छः महीने लग गये। शेरखां उस समय बङ्गाले में था। इतना अवकाश मिलने पर वह अपनी सेना और धन लेकर बङ्गाले के रोहतासगढ़ के मज़बूत पहाड़ी क़िले में जा बैठा जहां उसे किसी प्रकार का भय न था। शेरखां चाहता था कि किसी भांति हुमायूं मेरे पीछे पीछे दूर तक बङ्गाले में चला आये और फिर मैं उसके पीछे एक सेना डालदूं कि उसे लौट जाने

का अवकाश न मिले। इस कारण बङ्गाले की राह खुली छोड़ दी। हुमायं का सामना करनेवाला तो कोई था ही नहीं वह बङ्गाले के मैदानों को पार करता हुआ सीधा गौड़ तक चला गया जो उस समय बङ्गाले की राजधानी था और वहां ठहर कर अपने भाई हन्दाल को लौटा दिया कि आगरे से कुछ और सेना ले आये।

९—अपने स्वभाव के अनुसार हुमायूं ने यहां भी एक बरस जलसे तमाशे में बिताया। मालिक की देखा देखी सर्दार और सेनापति भी सुख चैन में पड़ गए और इस बात को सब भूल गए कि हमारे पीछे शेरखां अपनी सेना लिये बैठा है। शेरखां नित्य चौकन्ना और तैयार बैठा रहता था। ज्यों ही जासूसों से समाचार मिला कि हुमायूं और उसके साथी सुस्ती में अपने दिन काट रहे हैं वह रोहतास गढ़ से निकला और बङ्गाल और बिहार के नाके बन्द कर दिये। उधर हन्दाल ने विश्वासघात किया। भाई की सहायता करनी तो दूर रही स्वयम् दिल्ली के सिंहासन पर बैठ कर राज का मालिक बन गया।

१०—अन्त में हुमायं अपनी सेना के साथ बङ्गाले से चला। वर्षा ऋतु आरम्भ हो गई थी। जिधर देखो पानी ही पानी दिखाई देता था। सड़कें कीचड़ के मारे दल दल हो रही थीं और उनपर चलना असम्भव था। हुमायूं के बहुत से साथियों को ज्वर आने लगा, बहुत से घोड़े मर गये। बहुत सा खाने पीने का सामान ख़राब हो गया। हुमायूं लौट कर धीरे धीरे उस तंग दर्रे पर पहुंचा जहां बङ्गाले से बिहार का रास्ता है। यह वह दर्रा है जो राजमहल की पहाड़ियों और गङ्गाजी के बीच में पड़ता है। शेरख़ां पहिले ही से यहां उपस्थित था। उसने दर्रे के सम्मुख गहरी गहरी खाइयां खोद रक्खी थीं, ऊंची ऊंची दीवारें खड़ी कर रक्खी थीं और अफ़ग़ान सिपाहियों की एक अच्छी भीड़ साथ



दिल्ली की तख्त पर हन्दाल।

लिये दर्रे को बंद किये बैठा था। शेरखां जानता था कि दिल्ली से हुमायूं की सहायता को कोई सेना नहीं आ सकती और उसकी निज की सेना दिन दिन निर्बल होती जाती है। वह मैदान में

आकर हुमायूं से लड़ना नहीं चाहता था। हुमायूं अपने भाई कामरां और हन्दाल को चिट्ठी पर चिट्ठी भेजता था कि सेना भेजो। दो महीने हुमायूं और उसकी थकी थकाई सेना इसी आसरे में बैठी रही पर कोई सहायता को न आया। उसके कपटी भाइयों ने अपना एक आदमी भी बङ्गाले को न आने दिया और वह चाल चले जिस से हुमायूं हारे और नष्ट हो जाय।

११—हुमायूं ने देखा कि आगे जाना असम्भव है और यहीं पड़े रहे तो एक आदमी भी जीता न बचेगा। यह बिचार कर उसने शेरखां के पास संधि का सन्देश भेजा। शेरखां ने उत्तर दिया कि मुझे बङ्गाले और बिहार के देश देदिये जायं और मुझको वहां का बादशाह बना दिया जाय तो मैं शाह दिल्ली को अपना स्वामी मानूंगा और उसे कर देता रहूंगा। हुमायूं ने यह बात मान ली और संधि कर ली। इसके सिपाहियों ने अपने कवच उतारे और चलने की तय्यारियां करने लगे। गङ्गा जी पर पुल बांधना आरम्भ किया कि उसपर से उतर कर दूसरे दिन घर की ओर चलेंगे।

१२—शेरखां ने जो देखा कि अब हुमायूं के सिपाही निश्चिन्त हो कर बैठे हैं तो यह सोच कर प्रसन्न होगया कि अब वह अवसर आगया है जिसको कि वह बहुत दिनों से ढूंढ़ता था। हुमायूं के थके मांदे सिपाही इस ध्यान में थे कि कल घर को ओर कूच करेंगे और रात होते ही लम्बी तान कर सो गये पर आधीरात को दो बजे अफ़गान इन पर टूट पड़े और बेचारों को काट डाला। हुमायूं घबरा कर नींद से उठा और घोड़े पर सवार होकर भागा और लड़ता भिड़ता नदी के किनारे जा पहुंचा। यह बहुत घायल हो रहा था और निर्बलता के कारण गिर पड़ता डूब जाता पर उस समय एक भिश्ती अपनी मशक फुलाकर नदी के पार जाना चाहता

था उसने मशक बादशाह को दे दी कि उसकी सहायता से नदी के पार पहुंच जाय। हुमायूं ने इसके बदले में उस भिश्ती को जिसका नाम निज़ाम मुहम्मद था यह आज्ञा दी कि तुम तीन घण्टे शाही सिंहासन पर बैठ कर हुकूमत करो और अपने नाम से आज्ञापत्र जारी करो। भिश्ती ने इस अवसर पर अपने हित मित्रों को बहुत कुछ सम्पत्ति भेंट की और अपनी मशक के छोटे छोटे टुकड़े काट कर और उनपर अपनी शाही मुहर लगा कर चमड़े का सिक्का जारी किया।

१३—हुमायूं कुछ विश्वासी साथियों को संग लेकर आगरे की ओर भागा। शेरखां ने बङ्गाले और बिहार को अपने आधीन किया; मुग़ल सेना को जो बङ्गाले में नियत थी निकाल बाहर किया और जब देखा कि यहां शान्ति हो गई तो हुमायूं का पीछा करता हुआ आगरे पहुंचा।

१४—इधर हन्दाल बादशाह बनकर दिल्ली में शासन कर रहा था। वह समझा कि मेरी करतूत ने हुमायूं और मुझे दोनों को नष्ट कर दिया पर अब क्या हो सकता था? हन्दाल थोड़ी सी सेना लेकर हुमायूं के निकट क्षमा मांगने गया। कामरां भी पञ्जाब से आ गया और उसने भी दया की प्रार्थना की। हुमायूं ने सच्चे जी से दोनों को क्षमा कर दिया और कहा कि जो कुछ होना था हो चुका अब हमको चाहिये कि बहादुरों की तरह एक दूसरे की सहायता करें और शत्रु को देश से निकाल दें। कामरां दो महीने आगरे में रहा फिर लाहौर लौट गया; जो सेना हुमायूं की सहायता को लाया था उसको भी संग लेता गया और हुमायूं के भी कुछ सर्दारों और सेनापतियों को यह जताकर कि यहां ठहरना जान जोखिम है और पञ्जाब में अच्छे अच्छे पद देने का लालच देकर साथ ले गया।

१५—इस बीच में शेरखां सेना सहित आ पहुंचा और एक और लड़ाई हुई पर पहिले ही धावे में हुमायूं की सेना तितर बितर हो गई। दस ही बरस राज करने पर हुमायूं लाहौर की ओर भागा। यह आशा करता था कि कामरां कुछ मेरी सहायता करेगा पर वह आप इतना बोदा निकला कि पञ्जाब को शेरखां के हवाले करके आप काबुल जा बैठा और वहां की बादशाहत पर सन्तुष्ट हो के बैठ रहा। हन्दाल भी हुमायूं को छोड़ कर चलता बना। यह बेचारा बड़ी बड़ी कठिनाइयां झेलता सिन्ध के रेतीले मैदानों में मारा मारा फिरा किया और अन्त में फारस पहुंचा।


हमीदा बेगम।

१६—हुमायूं जब सिन्ध में भटकता फिरता था तो उसने एक ईरानी महिला हमीदा बेगम से निकाह किया। अमर कोट के उजाड़ किले में १५४२ ई० में इसके बेटे अकबर का जन्म हुआ तुर्कों का दस्तूर था कि जब किसी राजकुमार का जन्म होता था तो बादशाह इसकी खुशी में अपने अमीरों और सर्दारों को बहुत कुछ धन दौलत देता था। ग़रीब हुमायूं के पास अमर-कोट में धन दौलत कहां थी, खाने तक को भी भली भांति न मिलता था। उसकी जेब में एक कस्तूरी का नाफ़ा पड़ा था। उसको निकालकर चीरा और थोड़ी थोड़ी सी कस्तूरी अपने साथियों को दी। मुश्क की गंध से हवा महक उठी। हुमायं ने सगुन अच्छा समझा और कहा कि जैसे यह कस्तूरी हवा को सुगन्धित कर रही है उसी तरह मेरा बेटा बादशाह

होकर संसार में अपना यश फैलायेगा ! मैं इसका नाम अकबर रखता हूं क्योंकि मुझे आशा है कि यह बड़ा ही ज़बर्दस्त बादशाह होगा।

१७—सिन्ध से ईरान जाते हुए हुमायूं को क़न्दहार होकर जाना पड़ा। यहां उसका भाई अस्करी हुकूमत करता था। अपने भाई की आवभगत और सहायता करनी तो दूर रही उसने उसे क़ैद करना चाहा। बड़ी कठिनाई से घोड़े को पोया चला के हुमायूं हमीदा बेगम के साथ भागा पर अकबर जो अभी दो ही बरस का था चचा के हाथ लगा और कुछ दिन क़ैद रहा। जब हुमायूं फ़ारस पहुंचा तो वहां के बादशाह तहमास्प ने उसका बड़ा सत्कार किया और उसको शिया मत का कर लिया क्योंकि ईरानी सब शिया हैं। तहमास्प ने कुछ दिनों हुमायूं को अपने दर्बार में रक्खा फिर बारह हज़ार ईरानी उसके साथ भेजे। हुमायूं यह सेना लेकर अफ़ग़ानिस्तान गया और वहां से अपने बेटे अकबर को छुड़ा लाया ; दस बरस तक अपने भाइयों से लड़ता रहा। कई बार वह इसके पंजे में आये और हुमायूं के सर्दारों ने सलाह दी कि इनको मारडालना चाहिये। पर हुमायूं ने उनकी न सुनी। इसने नित उनके साथ भला बर्ताव किया और उनके अपराध क्षमा किये। उसको बाप की सलाह और अपना वचन सदा स्मरण रहा। कई बार हुमायूं ने कामरां से कहा कि भाइयों की तरह मेरा सहायक बन, पर उसने एक न मानी।

१८—अकबर कामरां के हाथ लगा। हुमायूं उस समय काबुल घेरे पड़ा था। निर्दयी चचा ने अपने नन्हें से भतीजे को तीरों की बौछार में काबुलकी कोट पर बिठा दिया पर परमेश्वर की दया से कोई तीर उसके न लगा। हुमायूं ने देखा कि जो कामरां बिलकुल निर्बल न कर दिया जायगा वह अकबर को मारडालेगा।

इस कारण काबुल के सर होने पर हुमायूं ने आज्ञा दी कि कामरां की आंखें निकाल ली जायं। अन्धा कामरां हुमायूं के सामने दर्बार में लाया गया तो उसने सारे दर्बारियों के आगे यह कहा कि मेरे भाई ने कुछ अत्याचार नहीं किया और मैं सचमुच इसी दण्ड के योग्य था। हन्दाल लड़ाई में मारा गया। हुमायूं ने उसको भी अपने हाथ से नहीं मारा। अस्करी मिर्ज़ा मक्के की हज को चला पर रास्ते ही में मौत ने उसे आ घेरा।

१९—अब शेर खां भी मर चुका था। उसके पीछे उसके वंश के तीन बादशाह सिंहासन पर बैठे उनमें से अन्तिम बादशाह राज करने के योग्य न था। हुमायूं एक सेना लेकर दिल्ली पहुंचा। इस बार इसके साथ बहादुर सिपाही थे। पन्द्रह बरसके बिछुड़ने के पीछे अब फिर इसने दिल्ली और आगरा ले लिया। पर बहुत समय तक राज करना उसके भाग्य में न था। एक दिन तीसरे पहर ज़ीने से चढ़ कर महल की छत पर जा रहा था कि पास की एक मसजिद से मुअज्जिन की बांग सुन पड़ी। हुमायूं ज़ीने की ही एक सीढ़ी पर नमाज़ पढ़ने ठहर गया। पर संगमरमर की सीढ़ी पर से उसकी लाठी फिसली और यह लुढ़कता ज़ीने के नीचे जा पड़ा और इतनी चोट आई कि मर गया। इस समय उसकी आयु पचास बरस की थी।

२०—हुमायूं बहादुर आदमी था। उसने वीरता के बहुत से काम किये पर बाप के समान न फुर्तीला था, न चालाक, और न उसकी भांति अपनी प्रतिज्ञा का दृढ़ था; जवानी आराम और चैन में काटी और बड़ी उम्र में अफ़ीम खाने लगा था जिसके कारण आलसी और बेसमझ हो गया था; भाइयों को प्यार करता था और उनके साथ अच्छा बर्ताव करता था। उनपर इतना दयालु न होता तो कदाचित हिन्दुस्थान की बादशाहत भी

न खोता। उसके एक नौकर ने जिसका नाम जौहर था बादशाह का जीवन चरित लिखा है और अभीतक वह इतिहास पढ़ने-वाले के लिये मौजूद है।

३४—सूर वंश।

(१५४० ई० से १५५५ ई० तक)

१—शेरशाह अफ़ग़ान जो असल में पेशावर से आया था सूर जाति का था। यह और इसके पीछे के तीन बादशाह सूर वंश के बादशाह कहलाते हैं। इसका असली नाम फ़रीद खां था। इसका दादा बहलोल लोधी के समय में जङ्गी नौकरी की खोज में हिन्दुस्थान आया था। इसका बाप सुलतान जौनपुर की सरकार में सवारों का जमादार हुआ और उसको बिहार में कुछ थोड़ी सी जागीर भी मिल गई। फ़रीद खां एक दिन सुलतान के साथ शिकार खेल रहा था। उसने शेर को तलवार का एक हाथ ऐसा मारा कि वहीं वह गिर कर मर गया। बस सुलतान ने वहीं उसको शेर खां की पदवी दे दी।



शेर शाह।

२—जब शेर खां दिल्ली के तख़्त पर बैठा तो उसने अपना नाम शेरशाह रख लिया। यह शेर के समान बली और चतुर था। शत्रु पर दया करना तो जानता ही न था और जो देखता कि अपनी बात के तोड़ने में कोई नाम है तो उसमें भी नहीं चूकता था।

३—जब बाबर बादशाहत करता था तो यह भी उसके दर्बार में पहुंचा और एक पद पर नियत किया गया। एक दिन दस्तरख़ान पर कुछ खाना आया जिसे चमचे से खाना चाहिये था। शेरखां चमचे से खाना नहीं जानता था। और सभासद उसे देख कर हँस रहे थे। उसने तलवार म्यान से निकाली और उस वस्तु के छोटे छोटे टुकड़े किये और उन्हें खाता गया; इसबात का कुछ बिचार न किया कि कोई मुझ पर हँस रहा है। बाबर ने जो देखा कि शेरखां दर्बार के आचार नहीं जानता और दस्तरख़ान पर भी तलवार से काम लेता है तो अमीरों से बोला कि यह सर्दार अपनी तलवार के बल से किसी ऊंचे पद पर पहुंचेगा।

४—जब हुमायूं ने उस पर चढ़ाई की और चुनार गढ़ ले लिया तो शेरखां ने बिहार के रोहतास गढ़ को छीन कर अपने आधीन कर लिया जो चुनार गढ़ से भी मज़बूत था। रोहतास गढ़ उसने बड़ी चतुराई से लिया। वहां के राजा से कहा कि मैं अपने परिवार और धन को किसी सुरक्षित स्थान में रखना चाहता हूं। जो मैं हुमायं से लड़ाई में मारा जाऊं तो तुम मेरा धन ले लेना। राजा ने यह बात्त स्वीकार की; इसपर एक हज़ार डोले तय्यार हुए। शेरखां ने आगे के दो तीन डोलों में तो औरतों को बिठा दिया और सब में हथियार बंद सिपाही बिठा दिये। जब डोले क़िले में पहुंचे तो राजा ने अगले दो तीन डोलों के पर्दे उठा उठा कर देखे। उनमें स्त्रियां थीं। शेरखां का चोबदार बोला कि यदि कोई बाहरी मनुष्य हमारी बेगमों को देखेगा तो हमारे मालिक का बड़ा अपमान होगा। राजा ने समझा कि ठीक कहता है और बचे हुए डोलों को बिना देखे जाने दिया। जब सब डोले क़िले के भीतर आगये तो अफ़ग़ान

सिपाहियों ने डोलों से निकल कर किले के फाटक खोल दिये और शेर खां की सेना भीतर घुस आई और क़िले पर अपना अधिकार जमा लिया।

५—बादशाह बनने के पीछे शेरशाह ने बड़ी बुद्धिमानी से राज किया। इसने देखा कि अगले बादशाह अपनी बड़ाई और सजधज के अभिमान में छोटी छोटी बातों पर ध्यान ही नहीं देते थे। यह लोग अपने वज़ीरों और सलाहकारों पर इतना भरोसा रखते थे कि आंख मूंद कर राज के प्रायः कुल काम काज उन्हीं के ऊपर छोड़ देते थे। पहिले तो वज़ीर और सलाहकार मेहनती और बहादुर होते थे। फिर यह भी सुख चैन में पड़ जाते थे और खाने पीने सोने ही को अपना कर्तव्य जानते थे। राजकाज सब नौकरों के हाथ में छोड़ देते थे।

६—शेरशाह ऐसा नहीं करता था। यह हर एक बात को आप देखता भालता था। एक बड़े भारी राज का मालिक होने पर भी वह कभी सुस्त नहीं बैठता था और राज के कारबार में ऐसा लगा रहता था जैसे कोई दरिद्री मज़दूर अपनी जीविका की चिन्ता में अपने हाथ पांव से अड़ा रहता है। और जैसे आप काम करता था वैसे ही अपने मातहतों से भी काम लेता था। इस से पहिले किसी अफ़ग़ान बादशाह ने इस योग्यता के साथ राज नहीं किया। यह जानता था कि प्रजा की रक्षा और उनका पालन करना बादशाह का सब से बड़ा धर्म है। इसने हिन्दुओं को नहीं सताया और बहुत से हिन्दुओं को ऊंचे पद पर नियत करके राजकर्मचारियों में मिला लिया। इन में से एक टोडरमल थे जो माल के मुहकमे के मंत्री थे।

७—शेरशाह सिपाहियों की तनख़ाह बहुधा अपने आगे

बटवाया करता था, इस बिचार से कि ऐसा न हो किसी की तनख़ाह मारी जाय; बङ्गाले से पञ्जाब तक और आगरे से मालवे तक सड़क के किनारे बराबर सरायें बनवा दी थीं जहां यात्रियों को बिना दाम भोजन मिलता था; चिट्ठियों के पहुंचाने के लिये सड़कों पर घोड़ों की डाक बिठा दी थी। सड़कों पर दोनों ओर मेवेदार पेड़ लगवा दिये थे और थोड़ी थोड़ी दूर पर यात्रियों की सुगमता के लिये कूएं बनवा दिये थे।

८—शेरशाह ने मालवा और मारवाड़ देश जीत लिये, मारवाड़ में रायसेन के राजपूतों को बहुत सताया। यहां के राजा पूरनमल से वादा करलिया था कि जो तुम मेरी आधीनता स्वीकार करो तो क़िले से अपना माल अस्बाब, बाल बच्चे और नौकर चाकर लेकर निकल जाओ मैं किसी को न रोकूंगा न किसी तरह का कष्ट दूंगा। राजपूत इस भरोसे पर क़िले से निकल आये कि बच जायंगे पर शेरशाह ने उन्हें मारडाला। यह कहा करता था कि शत्रु के साथ अपने बचन के पूरा करने की क्या आवश्यकता है? इस घटना के दूसरे बरस शेरशाह बुन्देलखंड में कालोंजर के क़िले का घेरा कर रहा था कि मारा गया।

सुलतान असलम शाह या सलीम शाह।

९—शेरशाह के मरने पर उसका बड़ा बेटा तो कहीं दूर था इस कारण उसके छोटे बेटे ने तख़्त पर अधिकार जमा लिया। पहिले पहल तो यह कहता था कि मैं अपने भाई के आने तक बादशाह हूं पर भाई इस से डरता था। वह एक रियासत लेकर तख़्त और ताज का ध्यान छोड़ बैठा। सलीम ने उसको मारना चाहा पर वह बिहार की ओर भागा और फिर न जाने उसपर क्या बीती और वह कहां गया। बहुत से अफ़गान

अमीर बाग़ी हो गये पर सलीम शाह ने उनको दबा दिया और फिर कोई दंगा फ़साद न हुआ। शान्ति हो जाने पर उसने भी अपने बाप के समान बड़ी योग्यता से राज किया। यह लम्बे डील का सुन्दर और बुद्धिमान जवान था; विद्या और विद्वानों का प्रेमी भी था। इसने नौ बरस तक राज किया।



सलीम शाह।

१०—सलीम के मरने पर उसका छोटा बेटा फ़ीरोज़ सिंहासन पर बैठा। पर तीन ही दिन राज करने पर अपने चचा मुबारज़ खां के हाथ से मारा गया। मुबारज़ खां आदिल-शाह के नाम से बादशाह हुआ। थोड़े ही दिनों राज करने पर इसके व्यवहारों से प्रगट हो गया कि यह राजकार्य करने का सामर्थ्य नहीं रखता। इसने कुल ख़ज़ाना नाच रङ्ग में उड़ा दिया और एक नीच जाति के हिन्दू को जिसका नाम होमू था अपना मित्र और सलाहकार बनाया। अफ़ग़ान अमीर बड़े अभिमानी थे। उन्हों ने चारों ओर बिगड़ना और फ़साद मचाना आरम्भ किया। हुमायूं को जब यह समाचार मिला तो उसने बिचारा कि राज के फिर ले लेने का अवसर यही है। वह काबुल से चला और दिल्ली और आगरे का बादशाह हो गया। पर मौत ने उसे अधिक राज करने न दिया और जैसा पहिले लिखा जा चुका है वह शीघ्र ही मर गया।

३५—अकबर ।

(सन् १५५६ ई० से सन् १६०६ ई० तक)

१—भारत में जितने मुसलमान बादशाह हो गये हैं अकबर सब से अच्छा था। उसका पूरा नाम जलालुद्दीन महम्मद था। उसके पिता हुमायूं ने उसके जन्म के समय उसे अकबर की पदवी दी थी। अकबर का अर्थ है, सब से बड़ा, और वास्तव में यह बादशाह और सब बादशाहों से ज़बर्दस्त हुआ है। उसने पचास बरस राज किया। जिस समय महारानी इलीजबेथ इंगलिस्तान की मलका थी अकबर उसी समय भारत में राज करता था। तीन सौ बरस बीते कि यह दोनों एक ही समय में इस लोक से परलोक को सिधारे थे।



अकबर।

२—पिता की मृत्यु के समय अकबर की आयु कुल तेरह बरस की थी। चारों ओर बैरी ही बैरी दिखाई देते थे परन्तु उसका सेनापति बैरम खां बड़ा राज-भक्त था। वह एक तुर्की सरदार था और सोलह बरस की अवस्था से उसके बाप के दरबार में नौकर था और उसकी बुआ के साथ ब्याहा था। पहिले पहिल उसको हेमू से युद्ध करना पड़ा था। हेमू अपने को महाराजा विक्रमादित्य कहने लगा था। उसने जो सुना कि बैरम खां अकबर के साथ लाहौर में है तो सेना लेकर दिल्ली को आधीन करने के लिये

बिहार से चला और आगरा और दिल्ली जीतता हुआ लाहौर की ओर बढ़ा। बैरम खां उसके सम्मुख आया। पानीपत पर घमसान युद्ध हुआ, हेमू बीरता के साथ लड़ा परन्तु उसकी सेना हार गई। हेमू घायल हुआ और क़ैद करके अकबर के सम्मुख लाया गया। बैरम खां ने अकबर से कहा कि इसका सिर अपनी तलवार से आप अलग कर दीजिये परन्तु अकबर ने उस दुर्बल और घायल बैरी पर हाथ चलाना ठीक न समझा तब बैरम खां ने उसको अपने हाथ से मारा। इसके पीछे पांच बरस तक बैरम खां ने बड़ी सावधानी और रोब दाब के साथ राज काज किया।

३—इस समय मोग़ल राज में केवल दिल्ली और पंजाब के देश थे। बंगाल, बिहार, जौनपूर, सिन्ध, गुजरात, मालवा और खानदेश में पठानों की जबरदस्त रियासतें थीं; राजपूताने में राजपूत राज करते थे।

४—अब अकबर की आयु अठारह बरस की थी। बरम खां के कठोर व्यवहार से वह, उसकी मां, और सारे कम उमर दरबारी चिढ़े हुए थे। सब ने अकबर को यही सम्मति दी कि अब आप राज काज अपने हाथ में ले लें। बैरम खां इस बात पर राज़ी न था परन्तु बादशाह बिचार का पक्का था और अन्त में बरम को आधीनता स्वीकार करनी पड़ी। बैरम खां मन में जल रहा था। इस कारण कुछ दिनों में उसने कुछ सेना इकट्ठी कर ली और पंजाब पर चढ़ाई कर दी। अकबर की आयु कम थी परन्तु



बैरम खां।

बैरम खां के सम्मुख आपही पहुंचा। बैरम खां पराजित हुआ और

पहाड़ की ओर भागा। अन्त को गले में पगड़ी डाले अभय प्रार्थना करने के लिये राज-सभा में उपस्थित हुआ। अकबर को उसके जन्म भर की स्वामि-भक्ति और नौकरी का ध्यान था। अपने हाथों से उसे उठाया और राज-सभा के सब सभासदों से ऊपर बिठाकर पूछा कि क्या तुम किसी प्रान्त की सूबेदारी पसंद करते हो अथवा राज-सभा में किसी ऊंचे पद पर नियत होना चाहते हो? जो हज करने का विचार हो तो अच्छा वेतन नियत कर दिया जाय और साथ जानेवालों का प्रबंध किया जाय। बैरम खां ने मक्के जाना पसन्द किया परन्तु राह में एक अफ़ग़ान ने जिसके बाप को उसने कुछ बरस पहिले मार डाला था उसको परलोक पहुंचा दिया।

५—अब अकबर स्वतन्त्र हो गया; जो चाहता कर सकता था। बाल्यावस्था में काबुल में रहने के कारण वह हृष्ट पुष्ट हो गया था। वह बुद्धिमान था और बहुत सोच विचार कर काम करता था। उसने देखा कि जब तक हिन्दुओं को राज-भक्त न बनाऊंगा मेरा राज दृढ़ न होगा, और जी में ठान ली कि जातिपांत के भेद को दूर करके कुल भारतवासियों को अपना बनाना है। परन्तु इस विचार के पूरा होने से पहिले इस बात की आवश्यकता थी कि अपने सूबेदारों को आधीन करके दिल्ली के राज को पुष्ट कर ले।

६—बैरम खां के छूटते ही तीन सूबेदारों के जी में यह बात समाई कि अकबर केवल अठारह बरस का बालक है। उसको जीत लेना सहज है। ऐसा विचार कर तीनों अपने अपने प्रान्तों के पूरे अख़तियार के मालिक बन बैठे। इनमें से एक जिसका नाम खानज़मा था जौनपूर का सूबेदार था, दूसरा आदम खां मालवे का, और तीसरा आसफ़ खां कड़े का हाकिम था। परन्तु अकबर ने दिखा दिया कि उसकी अवस्था तो कम थी पर उसमें युद्ध

और राज करने की योग्यता जन्म ही से थी। चलते चलते जब अकबर ने देखा कि अब खानज़मा दूर नहीं है तो सारी सेना पीछे छोड़ दी और एक हज़ार सवार लेकर आधी रात के समय गंगा के पार होगया और रातों रात तीस मील का कूच कर सवेरे बैरी पर टूट पड़ा। किसी को यह बात न मालूम थी कि अकबर पास है। दो बरस में अपनी बीरता के कारण अकबर ने अपने तीनों सूबेदारों को दबालिया और इक्कीस बरस की अवस्था में दिल्ली सम्राज्य का बेखटके सम्राट हो गया।

७—इसके पीछे राजपूतों से युद्ध आरम्भ हुआ। इस समय भारत में कम से कम सौ राजपूत राजा थे। अकबर यह चाहता था कि उनको अपना मित्र बनाकर उनकी सहायता से उत्तरीय भारत के पठान बादशाहों को आधीन करे। इस कारण एक भारी सेना लेकर राजपूताने में घुस गया और सब से बली राजाओं से लड़ना आरम्भ किया। उन्हों ने देखा कि अकबर धीर बीर और शक्तिमान बादशाह है। उसकी शक्ति से वह डरे और उसकी बीरता से प्रसन्न हुए क्योंकि वह आप भी बीर होते हैं और बीरों का मान करते हैं। अकबर की जीत हुई। उसने उनके साथ मेहरबानी का बर्ताव किया। उनके देश उन्हीं को दे दिये; केवल इतना बचन ले लिया कि उसको अपना सम्राट मानते रहेंगे।

८—परन्तु राना सांगा का बेटा उदयसिंह जो मेवाड़ का राजा था अकबर को डोला देकर सन्धि करने पर राज़ी न हुआ। अकबर ने उसकी राजधानी चित्तौड़ पर चढ़ाई की। उदय सिंह अरवली पहाड़ में चला गया और एक बीर और जवान क्षत्रिय को जिसका नाम जयमल था चित्तौड़ की रक्षा के लिये छोड़ गया। चित्तौड़ गढ़ सारे राजपूताने की नाक थी और

सब से बलिष्ठ गढ़ था। इसमें जाने को एक ही राह है। यह राह पहाड़ को काट कर बनाई गई है इसमें एक के ऊपर एक चार फाटक हैं। पहले पहल १३०३ ई० में अलाउद्दीन खिलजी ने इसको पराजित किया था, और फिर १५३३ ई० में बहादुर शाह गुजरात के सुलतान ने। अकबर कई महीने इसको घेरे पड़ा रहा; कोई उपाय विजय करने का न दिखाई दिया। अन्त में एक रात अकबर की दृष्टि गढ़ की दीवार पर पड़ी तो उसने देखा कि जयमल उसपर खड़ा हुआ अपने सैनिकों से एक सेंध बन्द करा रहा है जो उसमें



उदय सिंह।

हो गई थी। अकबर ने तत्काल अपनी सब से अच्छी बन्दूक मंगाई और एक ऐसा निशाना लगाया कि गोली जयमल के माथे पर बैठी। जयमल गिरतेही परलोक सिधारा। राजपूत निराश हो गये। उन्हों ने प्राचीन नीति के अनुसार जौहर करके स्त्रियों और बालकों को अपने हाथ से मार दिया और फिर केसरिया वस्त्र धारण कर हाथों में तलवार ले गढ़ से निकल पड़े और ऐसे कट कट कर मरे कि आठ हज़ार में एक भी न बचा।

८—उदय सिंह ने अकबर की आधीनता स्वीकार न की। उसके पुत्र प्रताप ने भी जीते जी उसके आगे सिर न नवाया। राना प्रताप ने प्रतिज्ञा की थी कि जब तक चित्तौड़ न ले लूंगा चांदी सोने के बरतनों में भोजन न करूंगा न फूस के बिछौने के सिवा किसी और बिछौने पर सोऊंगा, न दाढ़ी को बल देकर चढ़ाऊंगा। यह लड़ता लड़ता मर गया पर चित्तौर न ले सका।

इस कारण इसने एक और नगर बसाया और उसका नाम बाप के नाम पर उदयपुर रखा। उदयपुर के राना आज तक न दाढ़ी चढ़ाते हैं न चांदी सोने के बरतनों में बिना पत्ता बिछाये भोजन करते हैं न सेज पर बिना फूस बिछाये सोते हैं। ऐसा अनुमान किया जाता है कि इस वंश में सोलहों आने राजपूती अंश भरा है। राजपूतों का एक यह वंश है जो यह अभिमान करता है कि हमने मुसलमान सम्राटों की आधीनता नहीं की न उनको डोले दिये।



राना प्रताप।

१०—मेवाड़ के राज्य में उदय सिंह का एक और बड़ा दृढ़ गढ़ था। इसका नाम रन्थम्भोर था। राजा सुर्जन यहां का अधिकारी था। उसकी चढ़ाई में भी अकबर को बहुत समय लग गया और अब भी गढ़ के टूटने की कोई आशा न दिखाई दी। राजपूतों की यह रीति थी कि चढ़ाई के दिनों में रात्रि के समय कभी कभी युद्ध बन्द करके दोनों ओर के लोग आपस में मिलते और बातचीत किया करते थे। एक राति को अकबर के सेनापति मानसिंह सुर्जन से भेंट करने को गढ़ में गया और अकबर असाबर्दार का भेस बदल कर उसके साथ गया। सुर्जन ताड़ गया उसने अकबर के हाथ से असा ली और उसको अपनी जगह पर बैठाया। अकबर ने मुस्कारा कर कहा कि राजा सुर्जन अब क्या किया जाय। मानसिंह ने तुरंत कहा कि मेवाड़ के राना का साथ छोड़ दो, गढ़ सम्राट को सौंप दो और उनको

आधीनता स्वीकार कर लो। अकबर ने कहा कि जो तुम मुझको अपना सम्राट मानकर मेरी आधीनता स्वीकार करो तो एक क्या पचास रजवाड़ों का अधिकारी बना दूंगा और तुम उनमें राज करना। मानसिंह ने यह भी कहा कि बादशाह ने तुम्हारे साथ कैसा अच्छा व्यवहार किया है और राजपूत राजाओं का कैसा आदर करता है। सुर्जन मान गया और गढ़ की कुंजियां सम्राट को सौंप दीं।

११—अकबर ने राजपूत राजाओं की कन्याओं से बिवाह कर लिया और उनके बाप भाइयों को अपनी सेना का अफ़सर बना दिया। अब वह उसके मित्र और नातेदार हो गये। अकबर की एक मलका जयपुर के राजा बिहारी-मल की बेटी थी। बिहारीमल का बेटा भगवानदास अकबर के बड़े सेनापतियों में था। भगवानदास का गोद लिया हुआ बेटा मानसिंह एक और बड़ा सुप्रसिद्ध सेनापति हुआ है। अकबर का बड़ा बेटा सलीम इसी स्त्री से था। जब सलीम बड़ा हुआ तो अकबर ने उसका बिवाह जोधपुर के राजा की कन्या जोधबाई से कर दिया। सात वर्ष के समय में अकबर राजपूताने का मालिक और राना उदयपूर को छोड़कर सब राजपूत राजाओं का सम्राट बन गया।



जोधबाई।

१२—जब हिन्दू इसके सहायक और आज्ञाकारी बने तो राजपूतों की सहायता से अकबर ने भारत के पठानी राज एक एक करके सब ले लिये। बिहार, बंगाल, उड़ीसा, काश्मीर, सिंध,

मालवा, गुजरात, ख़ानदेश, काबुल और कंदहार सब जीत लिये। अपने राज के अंत में अकबर विन्ध्याचल के उत्तर में सारे भारत का, और दखिन में ख़ानदेश, अहमदनगर और बरार का सम्राट था। एक समय उसने दखिन जीतने का बिचार किया। अहमदनगर के निज़ामशाही बादशाहों में से एक की मृत्यु पर चार मनुष्य राज के दावादार खड़े हुए। उनमें से एक ने अकबर से सहायता मांगी। अकबर ने अपने बेटे मुराद को उसकी सहायता के लिये भेजा। अहमदनगर के हाल में पहिले कहा जा चुका है कि चांद बीबी ने कैसी बीरता के साथ उसका सामना किया था। अंत को बरार का राज अकबर को मिल गया। सन् १५९९ ई० में अकबर आप दखिन गया और ख़ानदेश को अपने राज में मिला लिया। अहमदनगर और असीरगढ़ के गढ़ों को जीतने से उसको ख़ानदेश मिला। बीजापुर और गोलकुंडे के बादशाहों ने भेंटें दे कर दूत भेजे और अकबर के चौथे पुत्र दानियाल का बिवाह बीजापुर के सुलतान की कन्या से हुआ।

१३—सन् १६०० ई० के लगभग बाप के ४५ बरस के लम्बे राज से घबड़ा कर सलीम ने राज सिंहासन पर अधिकार जमाने का बिचार किया। उसकी आयु तीस बरस की थी। यह अजमेर का हाकिम था; बंगाले का सूबेदार मानसिंह उसका सहायक था। मानसिंह को बंगाले के एक अफ़ग़ान उमराव के बिद्रोही हो जाने के कारण वहां जाना पड़ा था। राजा मानसिंह के जाते ही सलीम के सिरपर भूत चढ़ा। उसने सोचा कि पिता दच्चिण में हैं। उसके सेनापति दूर दूर प्रान्तों में अलग अलग पड़े हैं। इस बिचार से इलाहाबाद पहुंचा, अवध और बिहार पर अधिकार जमा लिया, जो कुछ धन सम्पत्ति वहां मिली सब ले लिया और अपने सम्राट होने का ढंढ़ोरा पिटा दिया। यह कहता

फिरता था कि अकबर मुसलमानों के पैग़म्बर का बैरी है वह अबुलफ़ज़ल से मिल कर मुसलमानों से क़ुरान की शिक्षा छुड़ाना चाहता है। अब उसको सम्राट होने का कोई अधिकार नहीं है। धार्मिक मुसलमानों को चाहिये कि मेरा साथ दें। अकबर ने जब पुत्र के विद्रोह का हाल सुना तो स्नेह और करुणा से भरा हुआ एक पत्र लिखा और समझाया कि पुत्र, तुम अनजान हो और जो ठीक रास्ते पर आ जाओ तो मैं तुम्हारे अपराध क्षमा करूंगा। पत्र लिखने के पीछे ही वह कूच करता हुआ दिल्ली में आ उपस्थित हुआ। सलीम का कोई सहायक न हुआ और उसने जान लिया कि अभी उसके राज का समय नहीं आया है। सलीम ने अपना अपराध स्वीकार किया, अभय मांगी, और बंगाले और उड़ीसे का हाकिम नियत किया गया।

१४—सलीम ने देखाने को अभय प्रार्थना करली परन्तु जी में लज्जित न हुआ था। अब उसनें ऐसा काम किया जिसके करने से वह जानता था कि पिता को अत्यंत शोक होगा। अबुलफ़जल कुछ थोड़ से सैनिकों के साथ किसी सरकारी काम पर गवालियर की ओर जा रहा था। सलीम ने बीरसिंह देव को जो बुन्देलखण्ड के एक छोटे से राज का अधिकारी था बहकाया कि अबलफज़ल को रास्ते में मार डालो। अबुलफज़ल अच्छे स्वभाव का मनुष्य, विद्वान और राजभक्त था; अकबर अपने सब नौकरों से अधिक उसपर भरोसा करता था; और भाइयों की भांति उससे स्नेह करता था। अकबर ने जब उसके मरने का समाचार सुना तो बड़ा सोच किया और दो दिन तक न खाया न सोया। अभी तक वह यह न जानता था कि अबुलफज़ल को किसने मारा। सलीम ने जो अपना जीवनचरित्र लिखा है उसमें आपही कहता है कि मैंने अबुलफज़ल को मरवाया। केवल

इतना ही नहीं, वह साफ़ साफ़ कहता है कि मैंने यह एक पुण्य किया है। जब अकबर ने यह समाचार सुना तो कहा कि सलीम को राज की अभिलाषा थी तो मुझे क्यों न मारा अबुलफ़ज़ल को क्यों मारा ?

३६—अकबर (उत्तरार्द्ध) ।

१—अकबर का रूप कैसा था ? वह कौनसी भाषा बोलता था ? अकबर लम्बे डील डौल का था रूपवान पुरुष था उसकी छाती चौड़ी और हाथ लम्बे थे ; आंखें और बाल काले और मुंह गोरा और लाल था परन्तु अवस्था बढ़ने पर सांवला पड़ गया था। यह आधा ईरानी और आधा तुर्क होने के कारण फ़ारसी और तुरकी दोनों भाषाएं बोल सकता था ; शरीर का पुष्ट था, घोड़े की सवारी बहुत पसन्द करता था, पैदल चलता था दिन भर में बहुधा तीस चालीस मील की यात्रा करता था, बन्दूक का निशाना लगाने में बड़ा चतुर था। उसके पास बहुत सी बन्दूकें थीं जिनमें से सबके अलग अलग नाम थे। दुरुस्त अन्दाज़ अर्थात ठीक निशाना लगानेवाली बन्दूक़ के बारे में पहिले ही कहा जा चुका है। यह वही बन्दूक़ है जिससे अकबर ने चित्तौड़ में जयमल को मारा था। इस बन्दूक़ से अकबर १९०० जन्तु मारे थे। यह आप दाढ़ी नहीं रखता था और औरों के दाढ़ी देखकर प्रसन्न नहीं होता था। यह गौ मांस और प्याज़ नहीं खाता था। कारण यह था कि उन वस्तुओं से वह घृणा करता था जिनसे उसकी हिन्दू स्त्रियां और हिन्दू मित्र घृणा करते थे। इसी कारण उसने आज्ञा दी थी कि कोई गोहत्या न करे।

२—ज्यों ज्यों आयु बढ़ती जाती थी अकबर का हृदय कोमल होता जाता था। उसे बहुत से युद्ध करने पड़े परन्तु

उसने कभी कोई देश नहीं उजाड़ा और न कहीं प्रजा ही को लटा मारा। छोटी अवस्था में सलीम बड़ा निर्दयी था। एक बार अकबर ने सुना कि सलीम ने जीते जो किसी की खाल खिंचवा ली। अकबर कहने लगा, आश्चर्य है कि जो मनुष्य मरी बकरी की खाल खींचते देखकर अत्यन्त दुखी होता है उसका पुत्र क्योंकर किसी जीते मनुष्य पर ऐसा अत्याचार करता है?

३—अकबर की शिक्षा मुसलमानी रीति के अनुसार हुई थी परन्तु हिन्दुओं के लिये बड़ा कोमल और दयालु था। यह कहा करता था कि हर मत में भलाई और सत्य पाया जाता है। उसका बचन था कि जो ईश्वर से प्रेम रखता है वह हर जगह उसका दर्शन कर सकता है, मुसलमान मसजिद में हिन्दू अपने मन्दिर में और ईसाई गिरजे में। अकबर के राज में हर मनुष्य को अधिकार था कि जो मत पसन्द करे उस पर चले। उसके सिक्के पर फ़ारसी में एक शेर लिखा था जिसका अर्थ यह है कि, "सच बोलना ईश्वर को प्रसन्न करने का उपाय है। मैंने किसी को सचाई की राह में भटकते नहीं देखा।" उसकी अभिलाषा थी कि अपनी राजसभा में हर मत के विद्वानों को बुलाये। बहुधा गुरुवार को सन्ध्या को वह उन विद्वानों को आज्ञा देता कि अपने धर्म के पुष्ट करने के लिये व्याख्यान दें। सुन्नी, शिया, ब्राह्मण, पारसी, ईसाई और यहूदी बारी बारी अपने अपने धर्म का मण्डन करते थे। इन सब शास्त्रार्थों के पीछे अकबर ने एक नया मत निकाला; इसका नाम दीन इलाही (ईश्वरीय धर्म) रक्खा। जिस धर्म की जो बात पसन्द आई वही अकबर ने अपने मत में रखली। इस धर्म की शिक्षा यह थी कि ईश्वर एक है और अकबर उसका खलीफ़ा या दूत है। अकबर कहता था कि कोई मनुष्य ईश्वर का कर्त्तव्य देखना चाहे तो सूर्य, अग्नि और तारे मौजद हैं।

जिस भांति प्राचीन आर्यलोग उनका पूजन करते थे तुम भी कर सकते हो। पर अकबर ने कभी किसी पर दबाव नहीं डाला कि वह इस नये मत को माने। कुछ लोगों ने केवल यह बिचार कर कि अकबर प्रसन्न होगा इस दीन को स्वीकार कर लिया था पर उसकी मृत्यु के पीछे कभी ऐसा नहीं सुना गया। अकबर के शान्त स्वभाव होने का एक कारण यह भी था कि उसके महल में बहुत स्त्रियां ऐसी थीं जो मुसलमान न थीं। हर हिन्दू स्त्री के लिये एक अलग मन्दिर था और हर मन्दिर का अलग पुजारी था। उसको अधिकार था कि जिस भांति चाहे अपने देवता की पूजा करे। आप भी कभी कभी माथे पर तिलक लगा लेता और गले में जनेऊ धारण कर लेता था।

४—अन्तिम अवस्था में अकबर कुछ बुद्धिहीन सा हो गया था और अपने आप को और मनुष्यों से बढ़ कर समझता था। एक मुल्ला ने उसकी बुराई में एक शेर लिखा था जिसका अर्थ यह था कि इस बरस सम्राट पैग़म्बर होने का दावा करता है दूसरे बरस अपने को ईश्वर ही कहेगा। अब जो सिक्का उसने जारी किया उसपर अल्लाह अकबर के शब्द लिखे थे। उनका अर्थ यह हो सक्ता है कि ईश्वर बड़ा है और यह भी हो सक्ता है कि अकबर ईश्वर है। फ़ैज़ी पहिले ही अपनी कविता में कह चुका था कि "तुमने अकबर को देख लिया तो स्वयं ईश्वर को देख लिया"। फिर कट्टर मुसलमान, जैसे विद्वान और मुल्ले, क्यों कर अकबर से



अकबर हिन्दू के रूप में।

अप्रसन्न न होती ? उनमें से बहुतेरों ने सलीम को भड़का कर, जैसा पहिले कहा जा चुका है, अकबर का विद्रोही कर दिया।



मानसिंह।

५—अकबर आप विद्वान न था। एक समय तो ऐसा था कि वह लिख पढ़ भी न सकता था। कारण यह था कि बाल्यावस्था में जिस निर्दयी चचा के यहां वह बन्दी था उसने उसको शिक्षा पर ध्यान ही नहीं दिया। हां अकबर को यह चाह थी कि किसी पढ़े लिखे को पास बैठा कर उससे पुस्तकें पढ़वाता जाता और आप सुनता था। उसने एक बड़ा पुस्तकालय बनवाया था जिसमें लगभग पांच हजार पुस्तकें थीं। उसको चित्रकारी से बड़ा प्रेम था। बहुत से चित्र उसके यहां मौजूद थे। कविता और गाना सुन कर भी बहुत प्रसन्न होता था।

६—अकबर की राजसभा में उस समय के सुप्रसिद्ध विद्वानों का जमघट रहता था और उन्हीं की सहायता से वह हिन्दू और मुसलमान दोनों को मिलाये रहता था। हम पहिले ही कह चुके हैं कि राजा भगवान दास और जयपूर नरेश मानसिंह दोनों अकबर की सेना के सेनापति थे। मानसिंह पहिले बङ्गाले का सूबेदार हुआ, फिर बिहार का, फिर दखिन का, और अन्त में काबुल का। उसने उड़ीसा को जीत कर अकबर के राज में मिला लिया। अकबर का अपने सैनिक अफ़सरों में सब से अधिक विश्वास मानसिंह ही पर था। मुसलमान अफ़सरों में अकबर के

सब से बड़े विश्वास पात्र दोनों भाई शेख अबुलफ़ैज़ी और शेख अबलफ़ज़ल थे। फ़ैज़ी अकबर की राजगद्दी के बारहवें बरस उसकी सेवा में आया उसके छः बरस पीछे अबुलफ़ज़ल जो केवल अठारह बरस का था सम्राट के सम्मुख लाया गया और तत्काल राज सभासदों में भरती हो गया। दोनो भाई तनमन से अकबर को चाहते थे। और उसी के धर्म में भी थे। अकबर भी उनका बड़ा सम्मान करता था। इस स्नेह और विश्वास के कारण अबुलफज़ल तो जीताही बलिदान हो गया। सलीम इस बात को न देख सकता था कि मेरा पिता किसी दूसरे पर मुझ से अधिक विश्वास करे। जैसे जैसे दिन बीतते गये, डाह की अग्नि उसके हृदय में और अधिक भड़कती गई। अन्त में सलीम ने उसे मरवा ही कर छोड़ा।



राजा भगवान दास।

७—फ़ैजी बड़ा विद्वान था। संस्कृत और फ़ारसी भाषायें भली भांति जानता था। उसने संस्कृत की बहुत सी पुस्तकों का फ़ारसी में अनुवाद किया है। उसने कविता भी फ़ारसी में बहुत की है और अपने भाई के कार्य्य में भी बहुत सहायता दी। आधी रात का समय था कि अकबर को सूचना मिली कि फ़ैज़ी परलोक सिधारनेवाला है। तत्काल उसके समीप गया और सेज के निकट दोनों घुटनों के बल बैठकर धीरे धीरे फ़ैज़ी के सिर को अपने हाथ से उभारा और कहने लगा कि, हे शेख़ जी, हे मेरे मित्र, आप को

दिखाने के लिये मैं हकीम साहब को लाया हूं। परन्तु फ़ैज़ी संसार में हो तो बोले। उसकी आत्मा तो परलोक पहुंच चुकी थी अकबर ने पगड़ी सिर से उतार कर फेंक दी और धाड़ मार मार कर रोने लगा।

८—अबुलफ़ज़ल अकबर का जन्म का मित्र और बड़ा भारी विद्वान था। वह बड़ा सूर बीर योद्धा और दांव घात का पक्का सेनापति भी था। यह सब से बड़ी सैनिक पदवी को पहुंचा और धीरे धीरे प्रधान मंत्री हो गया। अकबरनामा जिसे अकबर के राज का इतिहास कहना चाहिये इसी का लिखा है। उसका एक भाग आईने अकबरी के नाम से प्रसिद्ध है। उसमें केवल व्यवहार ही का वर्णन नहीं है परन्तु उसमें अकबर की राज सभा का पूरा हाल दिया हुआ है। आधीन देशोंका विस्तार के साथ बर्णन किया है। राजके प्रबन्ध की रीति भी दी हुई है। सारांश यह है कि अकबर के राज का बर्णन पूरा पूरा दिया है। अबुलफ़ज़ल अकबर में कोई अवगुण न देखता था इस कारण आरम्भ से अन्त तक सम्राट की प्रशंसा ही प्रशंसा सुनाई देती है।



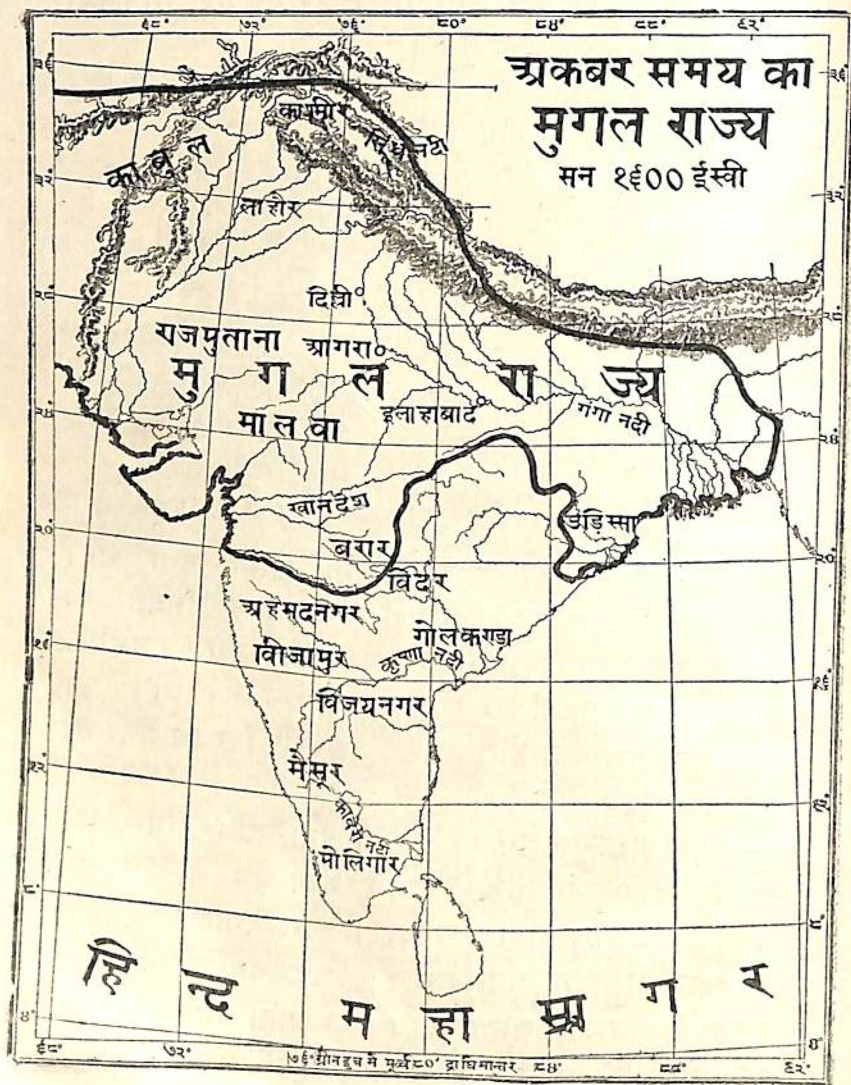
अबुलफ़ज़ल।

९—राजा टोडरमल पंजाब प्रान्त का हिन्दू था; इससे पहले बहुत दिनों तक शेरशाह के यहां नौकर रह चुका था; गणितविद्या में बड़ा चतुर था। भूमि के बन्दोबस्त और लगान लेने के नियमों में, राजसभा में कोई भी ऐसा चतुर न था जैसा कि यह था। न केवल वह लगान ही के मामले में निपुण था परन्तु सैनिक विद्या

में भी कम न था। कई बार सेना साथ लेकर युद्ध पर, या किसी प्रान्त का सूबेदार करके भेजा गया। उसी की सम्मति और बुद्धि का परिणाम था कि अकबर ने लगान के नियम बनाये। सारा देश नापा गया और उपज के विचार से सारी भूमि आठ भांति पर बांटी गई। घटिया पर थोड़ा लगान लगाया गया। इससे पहले बटाई के नियमानुसार लगान लिया जाता था। अर्थात उपज का कुछ भाग सरकार ले लेती थी, कुछ किसान के पास रह जाता था। टोडरमल ने यह रीत निकाली कि अनाज की जगह किसान रुपया दिया करें। तहसीलदारों और लगान लेनेवालों का वेतन नियत हो गया। इससे यह हुआ कि प्रजा केवल लगान देती थी। तहसीली अफ़सरों और कर्मचारियों की भेंट पूजा से छूट गई थी। हर दसवें बरस नया बन्दोबस्त होता था। कुछ और कर जो प्रजा को अखरते थे छोड़ दिये जाते थे।


राजा टोडरमल।

१०—सारा बशीभूत देश १५ सूबों में बँटा था। हिन्दुस्थान के बारह और दखिन के तीन। उनके नाम यह हैं,—काबुल, लाहोर, मुलतान, इलाहाबाद, अवध, बिहार, बंगाला, अजमेर, गुजरात, बरार, खानदेश, अहमदनगर। अहमदनगर सम्पर्ण रूप से शाहजहां के समय में जीता गया। हर प्रान्त में एक सेनापति होता था जो पीछे सूबेदार कहा जाता था। उसके आधीन एक दीवान होता था जिसके हाथ माल का काम रहता था।


अकबर समय का
मुगल राज्य
सन १६०० ईस्वी
काबुल
काश्मीर
लाहौर
दिल्ली
राजपुताना
आगरा
मुगल राज्य
मालवा
इलाहाबाद
गंगा नदी
खानदेश
उड़िसा
बरार
बिदर
अहमदनगर
गोलकण्डा
बिजापुर
कृष्णा नदी
विजयनगर
मैसूर
पोलिगार
हिन्द महासागर
७६° ग्रीनडुच से पूर्व ८०° द्राघिमान्तर

एक फौज़दार, एक कोतवाल, एक मीरेअदल अर्थात न्यायाधीश और एक काज़ी भी होता था।

११—अकबर के राज में प्रजा का क्या हाल था ? प्रजा ऐसी सुखी और निश्चिन्त रहती थी कि पहिले कभी न थी। पठान बादशाहों के राज्य की अपेक्षा अब कर बहुत कम लगता था। जो महसूल मुसलमानों को देने पड़ते थे वही हिन्दुओं को भी। पहिले जज़िया मुसलमानों के सिवाय और सब से लिया जाता था। अकबर ने जज़िया लेना बंद कर दिया। तीर्थयात्रा करनेवालों से जो महसूल लिया जाता था वह भी छोड़ दिया गया।

१२—हर मनुष्य को अधिकार था कि जिस धर्म पर चाहे चले और जिस भांति उसकी इच्छा हो रहे। कोई किसी को दुख देनेवाला न था। किसी को किसी का भय न था। हां हिन्दुओं के यहां जो सती की रसम थी उसको अकबर ने जहां तक हो सका रोका।

१३—अकबर और दूसरे मुग़ल सम्राटों के समय में प्रजा और देशके प्रबन्ध का कोई ठीक क्रम न था। सम्राट को अधिकार था जो चाहे सो करे। जो सम्राट अकबर की नाईं अच्छा होता तो राज का प्रबन्ध अच्छा होता और जो अच्छा न होता तो देश की दशा शोचनीय हो जाती। अकबर सारा राजकाज अपने हाथों में रखता था ; जो चाहता सो करता था ; उसकी आज्ञा की अपील न थी। अङ्गरेज़ी राज में चाहे हिन्दू हो चाहे अङ्गरेज़ सब के लिये न्याय का राज है। हर मनुष्य व्यवहार से परिचित है और उसपर चलता है। चाहे वह इङ्गलिस्तान का राजाही क्यों न हो उसे क़ानून के अनुसार उतनाही चलना पड़ता है जितना किसी दीन मंगते को।

१४—मृत्यु के समय अकबर की आयु ६३ बरस की थी।

उसने ५१ बरस राज किया। उसके पीछे उसका जेष्ठ पुत्र सलीम राज-सिंहासन पर बैठा।

३७—जहांगीर।

(१६०५ ई० से १६२७ ई० तक)

१—सलीम जहांगीर की पदवी धारण करके सिंहासन पर बठा। इसकी मां राजपूत राजकुमारी थी। इस कारण यह भी आधा राजपूत ही था। इसके दो भाई मुराद और दानियाल अकबर के आगे ही मर चुके थे परन्तु उसी के बेटे खुसरो ने, जो जोधाबाई के पेट से था, अपने मामा राजा मानसिंह और अपने ससुरे खानज़मान की सहायता से जो अकबर का सब से सिरचढ़ा सेनापति था, राज लेने के लिये बड़ा ज़ोर मारा। मरते समय अकबर ने अपने दरबारी और अफ़सरों को बुलाकर घोषणा कर दी थी कि मेरे पीछे सलीम मेरे मुकुट का अधिकारी होगा।



जहांगीर।

२—जहांगीर खुसरो से रुष्ट था; इससे खुसरो के साथ अच्छा बर्ताव भी न करता था। सिंहासन पर बठने के चार महीने पीछे आधी रात को सोते से जगाकर चर ने जहांगीर को यह

समाचार दिया कि खुसरो दिल्ली भाग गया। वहां उसने कुछ सेना भी इकट्ठी कर ली है और लाहोर पहुंच गया है। जहांगीर उसके पीछे चला। लाहोर पहुंचकर उसने देखा कि क़िला घिरा पड़ा है। खुसरो की सेना की हार हुई और वह भागा। सिन्धु नदी पार जाने का उपाय कर रहा था कि पकड़ा गया और पांवों में बेड़ी पहिने बाप के सामने लाया गया। उसके ७०० साथी बड़ी निठुराई से बध किये गये और वह सोलह बरस तक क़ैद में रहा; इसके पीछे अपने सगे भाई खुर्रम (शाहजहां) के हवाले किया गया और खुर्रम ने उसे मरवा डाला।

३—अकबर की नाईं जहांगीर ने भी कई राजपूत राजकुमारियों के साथ बिवाह किया। उनमें एक से खुर्रम था जो पीछे शाहजहां के नाम से सिंहासन पर बैठा। पर बादशाह होने के छठे साल जहांगीर ने एक ईरानी स्त्री से ब्याह किया। यह नूरजहां थी जो भारतवर्ष की एक प्रसिद्ध मलका हो गई है।

४—नूरजहां का बाप तुर्किस्तान का रहनेवाला था; अपनी जन्मभूमि में दरिद्रता से घबराकर भारत में चला आया था। लाहोर में उसकी एक पुराने मित्र से भेंट हुई। उसकी सहायता से दर्बार में एक ऊंचे पद पर नियुक्त हो गया। वह बुद्धिमान मनुष्य था; जल्दी जल्दी बढ़ता गया और अन्त में ख़ज़ाने का हाकिम बना दिया गया। उसकी इकलौती बेटी मेहरुन्निसा बड़ी सुन्दर और बुद्धिमती थी। उसके पिता ने उसकी मंगनी एक नवयुवक ईरानी सर्दार शेर अफ़गन से, जो बङ्गाले का हाकिम था, कर दी थी।

५—अभी ब्याह न होने पाया था कि सलीम की दृष्टि उसपर पड़ी। शाहज़ादा उसके प्रेम में फँस गया और उससे निकाह

करना चाहा। नूरजहां का पिता शेर अफ़गन के साथ मंगनी कर



नूरजहां।

चुका था और अपने बचन से फिरना नहीं चाहता था। सलीम ने अकबर से फ़र्याद की पर अकबर ने बड़ी रुखाई से उसकी सहायता करने से इनकार किया। फिर मेहरुन्निसा का ब्याह शेर अफ़गन के साथ हो गया और वह उसके साथ बङ्गाले चली गई।

सिंहासन पर बैठते ही सलीम को कोई रोक टोक न रही। उसने शेर अफ़गन को मरवा डाला और उसकी स्त्री को राज-महल में लेकर उसका नाम नूरमहल रक्खा। स्वामी के मारे जाने पर नूरजहां बड़ी दुखित थी। क्रोध और दुःख के कारण उसने छः बरस तक जहांगीर की सूरत न देखी। अन्त में उसका क्रोध शान्त हुआ। मातम के भी कई बरस हो चुके थे इस कारण उसने बादशाह से ब्याह करना स्वीकार कर लिया।

६—अब फिर उसका नाम बदला गया और इसबार उसको नूरजहां की पदवी मिली। अब राज का पूरा अधिकार नूरजहां के हाथ में चला गया। जहांगीर ने सब काम उसी पर छोड़ दिये। सरकारी कागज़ों और आज्ञापत्रों पर जहांगीर के बदले नूरजहां के हस्ताक्षर होने लगे। नूरजहां का बाप बड़े वज़ीर के पद पर नियत किया गया। उसका भाई सभासदों में पहिले नम्बर पर था। बीस बरस तक नाम को जहांगीर बादशाह था पर वास्तव में नूरजहां बादशाही करती थी। जहांगीर कहा करता था कि मुझको तो पेट भर स्वादिष्ट भोजन और पीने को उत्तम शराब मिल जाया करे इसके सिवाय मुझे और कुछ न चाहिये। वह यह जानता था कि राज का प्रबंध मलका मुझसे अच्छा कर सकती है;

इस कारण उसको कोई रोक टोक न करता था। लोग अनुमान करते हैं कि गुलाब का इत्र नूरजहां ही ने निकाला। हम्माम के हौज़ों में गुलाब के फूल भरे रहा करते थे। मलका ने एक दिन पानी के ऊपर कुछ तेल सा तरता हुआ देखा। बस मलका को इत्र बनाने की रीति सूझ गई और तब से गुलाब का इत्र तैयार होने लगा।

७—यह भी जहांगीर और भारतवर्ष के अच्छे कर्मों का फल था कि मलका राज्य के प्रबंध में ऐसी चतुर थी, नहीं तो जहांगीर में न तो अकबर के समान बुद्धि थी और न उसका सा स्वभाव था। इसको सिवाय आराम और खुशी के और किसी बात का ध्यान ही न था। मुग़ल बादशाहों में इसके समान शराबी और आराम तलब कोई और नहीं हुआ।

८—भारतवर्ष के मुग़ल बादशाहों की चर्चा इङ्गलेंड में भी पहुंच गई थी। जहांगीर को वहां "बड़ा मोगल" कहते थे। १६१५ ई० में इङ्गलैंड के बादशाह पहिले जेम्स ने जहांगीर के पास एक राजदूत भेजा जिसका नाम सर टामस रो था। उसकी इच्छा यह थी कि अङ्गरेज़ी सौदागरों को भारतवर्ष में व्यापार करने की आज्ञा मिल जाय। उस समय सूरत बन्दर में अङ्गरेज़ी सौदागरों की एक कोठी थी। सर टामस रो जहांगीर के दर्बार में तीन बरस रहा। उसने जो कुछ वृत्तान्त भारतवर्ष का सुना या देखा था लिख डाला। सर टामस रो का कथन है कि राज्य का प्रबंध ऐसा अच्छा न था जैसा अकबर के समय में था। सूबेदार प्रजा को सताते थे। देश में डाकुओं और लुटेरों ने बड़ा गड़बड़ मचा रक्खा था। जब तक बचाव के निमित्त पूरा जङ्गी सामान न रहता यात्रा करना बड़े जोखिम का काम था। सर टामस रो बादशाह के मुजरे के निमित्त दर्बार में जाया करता था। बादशाह एक

नीचे तख़्त पर इजलास करता था जिसमें हीरे और लाल जड़े हुए थे। कभी कभी बादशाह सर टामस रो को खाने के लिये संग बिठालता था और इतनी शराब पीता था कि नशे में मतवाला हो जाता था। तुजुक जहांगीरी में बादशाह स्वयं लिखता है कि जब मैं जवान था तो दिन भर में बीस प्याली 'मै' (मदिरा) की पिया करता था पर तख़्त पर बैठने के दिन से पांच ही सात प्यालियां पीकर संतुष्ट हो जाता हूं। खाने पर बैठने के समय किसी



सर टामस रो।

की क्या मजाल थी कि जबतक बादशाह को नींद न आजाय उठ खड़ा हो। जब सर टामस रो ने भारतवर्ष में व्यापार करने की आज्ञा मांगी तो बादशाह ने उत्तर दिया कि मलका से कहो, वही देश का प्रबंध करती है। इस कारण इस बात की आवश्यकता हुई कि नूरजहां के भाई आसफ़जाह को एक बहुमूल्य जड़ाऊ आभूषण भेंट किया जाय। भेंट देने पर सर टामस का कार्य सिद्ध हो गया, अर्थात् भारतवर्ष में व्यापार करने की आज्ञा मिल गई।

८—जहांगीर के राज में स्थान स्थान पर लड़ाइयां और बग़ावतें होती रहीं विशेष कर दखिन में। जहांगीर अपने जीवन चरित में लिखता है कि एक बार कन्नौज में विद्रोह हुआ और तीस हज़ार विद्रोही मारे गये; दस हजार के सिर काट कर दिल्ली भेज दिये गये और दस हज़ार पेड़ों पर उल्टे टांगे गये। बादशाह लिखता है कि कोई भी सूबा ऐसा न था जिसमें लगभग पांच लाख बागी मारे न गये हों।

१०—जहांगीर के चार बेटे थे—खुसरो, पर्वेज़, खुर्रम अथवा शाहजहां, और शहरयार। इनमें सब से प्यारा शाहजहां था। उसका निकाह नूरजहां की भतीजी के साथ हुआ था। जहां कहीं लड़ाई भिड़ाई होती थी सेना के साथ शाहजहां ही भेजा जाता था। पर नूरजहां की एक बेटी शेर अफ़गन से थी वह शहरयार से ब्याही थी और नूरजहां ने बहुत चाहा कि जहांगीर का शहरयार ही उत्तराधिकारी हो।

११—जहांगीर के अन्तिम समय में खुर्रम ने उसे बहुत दिक किया। यह बादशाह बनने का आसरा करते करते थक गया था। इसने शाहजहां की पदवी धारण की और इस बात के उद्योग में लगा कि ज़बर्दस्ती राज का मालिक बन जाय। नूरजहां ने एक शक्तिमान और बहादुर सर्दार महाबत खां को बुलाया कि जहांगीर की रक्षा और सहायता करे। उसने शीघ्र ही शाहजहां को दखिन की ओर भगा दिया पर नूरजहां को चिन्ता हुई कि कदाचित महाबत खां आप बादशाह बनना चाहे इस कारण उसने उसे दर्बार में बुलाया। उसकी इच्छा यह थी कि वह आ जाय तो उसको मरवा डाले पर महाबत ख़ां राजपूतों की एक ज़बर्दस्त सेना अपने संग लाया था। महाबत खां ने देखा कि जहांगीर डेरों में है, वहीं उसको घेर लिया। यह जहांगीर को किसी प्रकार की हानि पहुंचाना नहीं चाहता था। उसको तो अपने प्राण बचाने थे ; इस कारण उसने जहांगीर को जाने न दिया और उसका आदर किया।

१२—कुछ दिन पीछे जहांगीर क़ैद से निकला और नूरजहां से जा मिला। अब महाबत खां को अपने प्राण बचाने की पड़ी और वह भाग कर दखिन में शाहजहां से जा मिला। शाहजहां उसके आने से बहुत प्रसन्न हुआ।

१३—इसके थोड़े दिनों पीछे जहांगीर मरगया। शाहजहां सिंहासन पर बैठा। नूरजहां के निमित्त एक अच्छा वेतन नियत कर दिया गया। पीछे नूरजहां तीस बरस तक जीती रही पर राज से इसका कुछ सम्बन्ध न था।

३८—शाहजहां।

(सन् १६२७ ई० से १६५८ ई० तक)

१—शाहजहां में तुर्क पठान की अपेक्षा राजपूत अंश बहुत था। इसकी मां राजपूत राजकुमारी थी और उसका बाप भी राजपूत मां का बेटा था। मुग़ल बादशाहों में उससे बढ़कर राजसी ठाटवाला सम्राट दूसरा न हुआ। तीस बरस के राज्य में उसने ऐसे शहर बसाये और महल मक़बरे और मसजिदें बनवाईं जिन से बढ़कर दूसरे इस देश में नहीं हैं।

२—सिंहासन पर बैठतेही उसने अपने सब भाइयों और उनकी अनाथ सन्तान को बड़ी निठुराई से मरवा डाला जिससे कोई राजका दावादार न रह जाय।


शाहजहां।

३—पहिले तो उसने ऐसी निठुराई की पर पीछे अपने राज्य का प्रबंध बहुतही अच्छा किया; और जहांगीर से बहुत बढ़कर निकला। वह न जहांगीर ऐसा आलसी न उतना शराबी था; अपने दादा अकबर की तरह हिन्दू मुसलमान सब को बराबर मानता था। उसकी प्रजा उससे बहुत प्रसन्न थी। राजपूत उसे राजपूत ही मानते थे और इसके बैरियों से लड़ाई में उसका साथ देते थे।

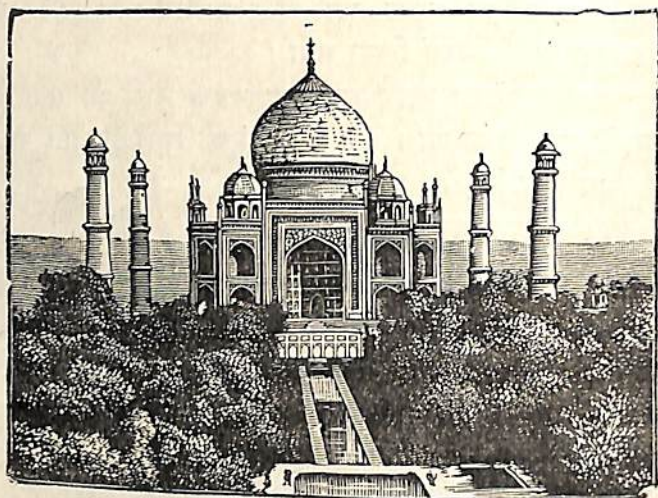
४—शाहजहां को सिंहासन पर बैठते थोड़ेही दिन बीते थे जब दखिन का सूबेदार खानजहां लोधी बिगड़ गया। अहमदनगर के सुलतान ने इसकी सहायता की। शाहजहां ने अपने सबसे बलवान सेनापति महाबत खां को दक्षिण भेजकर आप भी दल बादल समेत वहीं पहुंचा। दस बरस लगातार लड़ाई होती रही। अन्त को खानजहां मारा गया और अहमदनगर १६३७ ई० में मुग़ल साम्राज्य में मिला लिया गया।

५—शाहजहां का ब्याह मुमताज़ महल नाम की एक ईरानी महिला के साथ हुआ था। यह नूरजहां की भतीजी थी। मुमताज़ महल अपने पति से बड़ा प्रेम रखती थी। चौदह बरस के सुहाग के पीछे जब उसकी मृत्यु का समय आया तो अपने पति से बोली कि तुम और ब्याह न करना और मेरी समाधि ऐसी बनवाना कि जिससे संसार में मेरा नाम रहे। शाहजहां रो रहा था पर उसने यह दोनों बातें स्वीकार कीं और अपने बचन पर अटल रहा। उसने दूसरा ब्याह न किया और मुमताज़ महल की क़ब्र पर ताज महल बनवाया जो संसार की समस्त समाधियों से बहुमूल्य और सुन्दर है। यह आगरे में यमुना जी के किनारे बना है। और देखने में ऐसा जान पड़ता है मानों कल ही बन कर तैयार हुआ है। इसके बनवाने में तीस बरस लगे थे और लगभग तीस लाख रुपये का खर्च बैठा था।



मुमताज़ महल।

६—शाहजहां ने एक बड़ी मसजिद दिल्ली में बनवाई जिसको जामामसजिद कहते हैं; एक मसजिद आगरे में भी बनवाई जो मोती मसजिद के नाम से प्रसिद्ध है। संसार में कोई पूजागृह इसकी सुन्दरता को नहीं पहुंचता। शाहजहां का सिंहासन भी ऐसा भड़कीला था कि किसी और राजा को मुयस्सर न हुआ



(रौज़ा) ताजमहल, आगरा।

होगा। इस सिंहासन को "तख़्त ताऊस" कहते थे। एशिया भर में इसकी धम थी। यह नाचते हुए मोर के आकार का बनाया गया था। मोर के पंख जो उठते हुए बनाये गये थे उनमें हीरा माणिक पन्ना और नीलम जड़े हुए थे। इस पर साढ़े छः करोड़ रुपये की लागत लगी थी।

२—शाहजहां के शासन काल में ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने पूर्वीय समुद्रतट पर मदरास का स्थान मोल लेकर सेण्ट जार्ज का क़िला

बनवाया। बङ्गाले में भी कम्पनी ने एक छोटी सी कोठी बनवाली। यह कलकत्ते से लगभग २५ मील उत्तर हुगली स्थान में थी।

८—शाहजहां ने दखिन के जीतने के निमित्त बड़ा परिश्रम किया। हम ऊपर लिख चुके हैं कि दस बरस के घोर युद्ध के पीछे अहमदनगर हाथ लगा था। लगभग इतना ही समय बीजापुर के भी पराजित करने में बीता। बीजापुर का सुलतान बड़ी वीरता से लड़ा किन्तु उसे हार माननी पड़ी और उसने एक बड़ा वार्षिक कर देना स्वीकार किया। १६५३ ई० में शाहजहां ने अपने तीसरे पुत्र औरङ्गजेब को एक बड़ी सेना के साथ सारे दखिन को जीतने के लिये भेजा। वह अकस्मात गोलकुण्डा की रियासत पर चढ़ गया। वहां के सुलतान को एक बड़ा कर देना पड़ा और उसने अपनी बेटी भी औरङ्गजेब के पुत्र शाहज़ादा मुहम्मद को ब्याह दी। इसके पीछे बीदर का क़िला जीता गया। इस समय बीदर का पहिला बादशाह जिसके साथ संधि की गई थी मर चुका था और दो शाहज़ादियां पृथक् पृथक् राज्य की अधिकारिणी होना चाहती थीं। इस कारण औरङ्गजेब फिर बीजापुर पहुंचा। बीजापुर को घेरनेहीवाला था कि उसे बाप की बीमारी का समाचार मिला और वह हिन्दुस्थान लौट चला आया।

९—इस समय दखिन के लोग बड़ी बुरी दशा में थे। दखिन के बादशाहों ने अपने अपने देश उजाड़ दिये थे कि बैरी की सेना को खाने पीने का भी कष्ट भुगतना पड़े। जो कुछ बचा बचाया था वह मुग़ल सैनिकों ने लूट खसोट लिया। पानी न बरसने के कारण कई बरस तक बड़ा विषम काल पड़ा। इसपर एक बला यह और पड़ी कि सारे देश में महामारी फैल गई और बहुतेरे अभागों को समेट कर ले गई।

१०—शाहजहां के चार पुत्र थे। सबसे बड़े का नाम दारा था। वह बड़ा बीर सुन्दर और शुद्ध प्रकृति का था; पर अभिमानी और अदूरदर्शी भी था। यह भी अकबर की भांति हिन्दू जाति का पक्षपाती था इसी कारण मुसलमान अमीर इस से अप्रसन्न थे। दूसरे का नाम शुजा था। यह भी बड़ा बीर और चतुर था पर अपने दादा की भांति सुरापान और भोगविलास में दिन काटा करता था। तीसरा औरङ्गजेब था, यह ऊंच हौसले वाला परन्तु कट्टर मुसलमान था। इसने अपने छोटे भाई मुराद से कहा कि मुझे बादशाहत करने की अभिलाषा नहीं है; मैं तो फ़क़ीर बन कर एकान्त में बठने और परमात्मा का ध्यान करने में अपने दिन काटना चाहता हूं पर मैं इस बात का उद्योग करूंगा कि तुमही राज्य के अधिकारी हो। सब से छोटा बेटा मुराद सुरा और शिकार में मस्त रहता था। जो कुछ औरङ्गजेब ने उससे कहा था आंखें मीच कर उसी को वह सच समझ बठा। चारो भाइयों के पास अलग अलग बड़ी सेना थी। चारों अलग अलग सूबों के सूबेदार थे। दारा दिल्ली में था, औरङ्गजेब दखिन में, शुजा बङ्गाले में और मुराद गुजरात में।

११—१६५८ ई० में शाहजहां बीमार पड़ा। इस समय इसकी आयु ७० बरस की थी और ३० बरस राज्य करते हो गये थे। लोगों ने अनुमान किया कि अब यह मर जायगा। इसके चारों बेटों में राज्य के निमित्त युद्ध होने लगा। पांच बरस तक इनमें युद्ध होता रहा। अन्त में औरङ्गजेब ने सब को परास्त किया और बादशाह बन बैठा। इसने दारा और मुराद को मरवा डाला; शुजा आसाम को भागा यहां के हाकिम ने उसको और उसके बच्चों को मरवाडाला। शाहजहां बीमारी से बच गया उसको औरङ्गज़ेब ने आगरे के क़िले में कैद कर दिया और वह सात

बरस पीछे वहां से मरा निकला। शाहजहां ने जैसा किया था वैसा उसे फल मिला। उसने भी अपने बाप जहांगीर से लड़ाई ठानी थी और अपने भाइयों और उनकी सन्तान को मरवा डाला था। देखो तो मुगल वंश के पहिले दो बादशाहों और इन पिछले दो बादशाहों में कितना भेद था। बाबर ने अपने बेटे के निमित्त अपने प्राण दिये। हुमायूं ने कई बार उन भाइयों के अपराध क्षमा किये जो उसकी जान के प्यासे थे। शाहजहां और औरङ्गजेब ने अपने बाप से लड़ाई ठानी और अपने भाइयों को मरवा डाला।

३९—औरङ्गजेब।

(१६५८ ई० से १७०७ ई० तक)

१—यों तो औरङ्गजेब ने भी अकबर की भांति पचास बरस राज किया पर और बातों में अकबर के विरुद्ध था। दस बरस तक तो यह उन राजपूत सरदारों को अप्रसन्न करने से डरता था जो इसके सेनापति थे। पहिले तीन बरस इसने अपने भाई भतीजों के मारने मरवाने में बिताये। जब तक यह न होलिया उसको अपनी कुशल में सन्देह रहा। फिर बाप का भी उसे ध्यान था। जब तक वह जीता था उसे भय था कि कहीं राजपूत लोग उसे फिर सिंहासन पर न बैठा दें। इस कारण उसे इसने आगरे के क़िले में बन्द रक्खा और वहां से १६६६ ई० में ७७ बरस की पूरी आयु होने पर वह मर कर ही निकला।

२—औरङ्गजेब अब सुचित होकर सिंहासन पर बैठा और दस बरस तक उन हिन्दुओं और ईसाइयों को जो पहिले बादशाहों के नौकर थे अलग करता गया और उनकी जगह पर

मुसलमानों को नियुक्त किया। अकबर ने बहुत से हिन्दुओं को नौकर रक्खा था और उनपर बहुत दयालु था। राजपूत अकबर पर प्राण देते थे और उन्हों ने उसके राज्य को बड़ा शक्तिमान बना दिया था। अब वही राजपूत औरङ्गजेब से घृणा करने लगे। राजपूत और और हिन्दू उससे लड़े और मुग़ल राज्य को जिसकी नेव अकबर ने डाली थी तहस नहस कर दिया। औरङ्गजेब ने शिया मुसलमानों का भी नाक में दम कर दिया था; बहुत से शियों की जागीरें छीन लीं जो उनको अकबर ने दी थीं।



औरङ्गजेब।

३—औरङ्गजेब स्वच्छप्रकृति और अपने धर्म का पक्का था; मद्यपान और भोगविलास से चिढ़ता था, अपने सुख के निमित्त रुपया नहीं फेंकता था बरन अपने हाथों टोपियां सीकर पैसा कमाता था। बहुत सादे कपड़े पहिनता था। उस समय को छोड़ कर जब वह सिंहासन पर बैठता था और कभी वह चांदी सोने या जड़ाऊ चीज़ नहीं पहिनता था। अकबर की भांति वह भी बड़ा बीर था और सेनापति ऐसा था कि कैसी ही बिकट मुहिम हो न डरता था न झिझकता था।

४—औरङ्गजेब बड़ा कठोर और क्रूर था। वह अपने दबदबे से काम लेता था। राज काज में छोह को अपने पास न फटकने देता था। उसके भय से उसके बेटों के ही प्राण सूखा करते थे। उनमें से एक की तो यह दशा थी कि जब कभी पिता का पत्र

उसके पास आता था उसे देखते ही पीला पड़ जाता था। औरङ्गजेब आज्ञा टालने को सह नहीं सकता था। जो उसकी आज्ञा से मुंह फेरता उसको वह कभी क्षमा नहीं करता था। सारे सेनाध्यक्ष और कर्मचारी उसके नाम से थर्राते थे।

५—औरङ्गजेब नाच और गाने बजाने से घृणा करता था। सिंहासन पर बैठतेही उसने उन गवैयों और बैसवावों को निकाल दिया जो उसके बाप के समय के नौकर थे। कुछ ही दिन पीछे लोगों ने एक अर्थी बनाई और उसे लेकर रोते पीटते झरोखों के नीचे से निकले। बादशाह ने सिर उठाकर देखा और पूछा कि यह किसका मुर्दा है। उन्हों ने उत्तर दिया कि यह संगीत विद्या का मुर्दा है। हम लोग इसे गाड़ने लिये जाते हैं। बादशाह ने उत्तर दिया कि इसे ऐसा नीचे गाड़ो कि फिर न निकल सके।

६—सम्भव है कि औरङ्गजेब अपने मनही मन में लज्जित हुआ हो कि मैंने अपने बाप और भाइयों के साथ बुरा बर्ताव किया और अपनी हिन्दूप्रजा का चित दुखाया। इसी कारण उसने अपने राज्यकाल में इतिहास लिखने का निषेध कर दिया था। उसके समय का वृत्तान्त जो कुछ कि हम लिखते हैं ख़फ़ी ख़ां के रचे इतिहास से लिया गया है। यह छिपे छिपे और डरते डरते जो कुछ होता गया लिखता रहा। जब तक औरङ्गजेब जीता था इसने अपना लिखा हुआ किसी को नहीं दिखाया। जान पड़ता है कि औरङ्गजेब को अपनी आयु में कभी सुख न मिला और अन्तिम काल में अपनी निठुराई सोच सोच कर वह बड़ा दुखी रहता था। नव्वे बरस की आयु में औरङ्गजेब अपने बेटे को लिखता है कि मैं अपने राज्य का रक्षक नहीं था अब मेरी मृत्यु निकट है; मैं अपने पापों का फल अपने साथ ले जाऊंगा। कौन जानता है ईश्वर मुझे क्या दंड दे।

७—दखिन को जीतने का ध्यान इसे जन्म भर रहा। बहमनी राज्य के टूटने पर जो पांच रियासतें दखिन में स्थापित हुई थीं इनमें से तीन अर्थात बीदर, बरार और अहमदनगर तो इसके बाप ही के राज में जीती जा चुकी थीं। रही गोलकुंडा और बीजापुर की रियासतें सो उनके जीतने का बीड़ा औरङ्गजेब ने उठाया। पच्चीस बरस तक इसके सेनापतियों ने इन दो पठानी रियासतों के आधीन करने में कठिन परिश्रम किया परन्तु कुछ लाभ न हुआ। अन्त में जब औरङ्गजेब ने देखा कि यह काम करना ही है तो मुझे आप करना चाहिये। यह ठानकर पैंसठ बरस की आयु में दिल्ली से निकला और रणभूमि में ऐसा गया कि वहां से वह फिर दिल्ली लौटकर न आया। उसके राज के अन्तिम पच्चीस बरस दखिन के युद्ध में बीते। बरसों की लड़ाई और मारकाट के पीछे गोलकुंडा और बीजापुर मुग़ल राज्य में मिला लिये गये। उस समय मुग़ल राज्य इतना लम्बा चौड़ा था जैसा पहिले कभी नहीं हुआ था। इन दोनों रियासतों को मिलाकर एक नया सूबा बनाया गया। पहिले पहिल इस सूबे का हाकिम नवाब या सूबेदार कहलाता था पीछे दखिन का निज़ाम कहलाने लगा। हैदराबाद इसकी राजधानी थी।

८—इसी समय मरहठों के छोटे छोटे झुण्डों के आपुस में मिल जाने से एक नई जाति बन गई। बीजापुर के सुलतान ने इनके सर्दारों को दबा रक्खा था। अब औरङ्गजेब को मरहठों के राजा शिवाजी का सामना करना पड़ा। यह पुराने मरहठा सरदारों से बहुत शक्तिमान था। शिवाजी का वृतान्त आगे चलकर एक अलग अध्याय में लिखा जायगा; यहां इतना कह देना उचित है कि औरङ्गजेब शिवाजी को आधीन न कर सका।

९—पंजाब में भी सिक्खों की नई जाति का जन्म हुआ।

बाबर के समय में गुरु नानक एक महात्मा हो गये थे। हिन्दू मुसलमानों का आपुस में लड़ना इनको अच्छा नहीं लगता था। इन्हों ने कुछ बातें हिन्दू धर्म को लीं और कुछ मुसलमान मत को और दोनों को मिला कर एक नया पंथ चलाया। बहुत से मनुष्य उनके अनुगामी हुए जो सिख (शिष्य) अथवा चेले कहलाये। बाबर और और बादशाहों ने इनसे कुछ छेड़ छाड़ न की। कारण यह था कि यह बड़े शान्त स्वभाव के थे, न कर देने में बखेड़ा करते थे न किसी को सताते थे। पर औरङ्गजेब ने इन्हें बड़ा कष्ट दिया और बहुत से सिक्खों को मरवा डाला। इस कारण इन्हें अपने प्राणों की रक्षा के निमित्त हथियार बांधने पड़े और इनको एक लड़नेवाली जाति बन गई। औरङ्गजेब ने इनको हरा दिया और इनको भागकर हिमालय में शरण लेनी पड़ी। औरङ्गजेब के मरने पर यह पहाड़ों से लौट आये और उत्तरीय भारत में सब से शक्तिमान हो गये।



नानक।

१०—मरहठों से लड़ते लड़ते औरङ्गजेब के सैनिक थक गये थे। भोजन करने को अन्न न मिलता था। कूओं में बिष डालदिया गया था। पानी को तरसते थे। बादशाह की आयु अब नब्बे बरस की थी। ऐसा कोई मनुष्य उसके निकट न था जिससे वह कुछ सलाह पूछता। बेटे बाप की कठोरता और बहुत दिन राज करने से चिढ़ गये थे। एक बेटा मरहठों से जा मिला था, एक

भाग कर फ़ारस चला गया था। अमीर बिगड़े हुए थे। प्रजा धिक्कारती थी। अब समय आगया था कि बादशाह संसार के झगड़ों से मुक्त हो। निदान बुढ़ापे ही के रोग से निर्जीव होकर १७०७ ई० में चलता बना। उसके थोड़े ही दिनों पीछे मुग़ल राज भी नष्ट भ्रष्ट होने लगा।

४०—भारतवासियों और यूरोपवालों में वाणिज्य व्यवहार का आरम्भ होना।

१—आज कल भारतवर्ष ब्रिटिशराज का एक भाग है। इङ्गलैण्ड का बादशाह क़ैसर हिन्द भी कहलाता है। पर हमको देखना चाहिये कि अङ्गरेज़ों ने भारतवर्ष में कब प्रवेश किया कैसे आये, उनके आने का कारण क्या था और भारतवर्ष ब्रिटिशराज में कैसे आगया। अब इस पुस्तक में इसी बात का वर्णन होगा।

२—लगभग ३०० बरस हुए, पहिले पहिल अंगरेज़ यहां वाणिज्य की अभिलाषा से आये थे। काली मिर्च, चावल, रूई, नील, अदरक, गरम मसाला, नारियल, पोस्ता जिससे अफ़ीम निकलती है, गन्ना जिससे खांड़ और शक्कर तैयार होती है इत्यादि वस्तु इङ्गलैंड ऐसे शीत स्थान में नहीं उपजतीं। प्राचीन काल में भारतवर्ष की मलमल और रूई और रेशम के कपड़े इङ्गलैंड की अपेक्षा अच्छे बनते थे। अङ्गरेज़ सौदागर यह सब वस्तु यहां से विलायत ले जाते थे और विलायत से कपड़ा लोहे तांबे और फ़ौलाद का बहुत सा सामान लाते थे जो यहां प्राप्त नहीं होता था।

३—पहिले भारतवर्ष का माल थल राह से ऊंटों और खच्चरों पर लद कर विलायत जाता था। भारतवर्ष से जो कारवां चलते थे वह अफ़गानिस्तान, फ़ारस और ऐशिया कोचक होते हुए जाते थे।

जब अरबों ने यह देश जीत लिये तो इस तरह का बाणिज्य बहुत कुछ बन्द हो गया। सैकड़ों बरस तक अरबों और ईसाइयों में युद्ध होता रहा इस कारण ईसाई सौदागर पुराने रास्ते माल अस्बाब नहीं ले जा सकते थे।

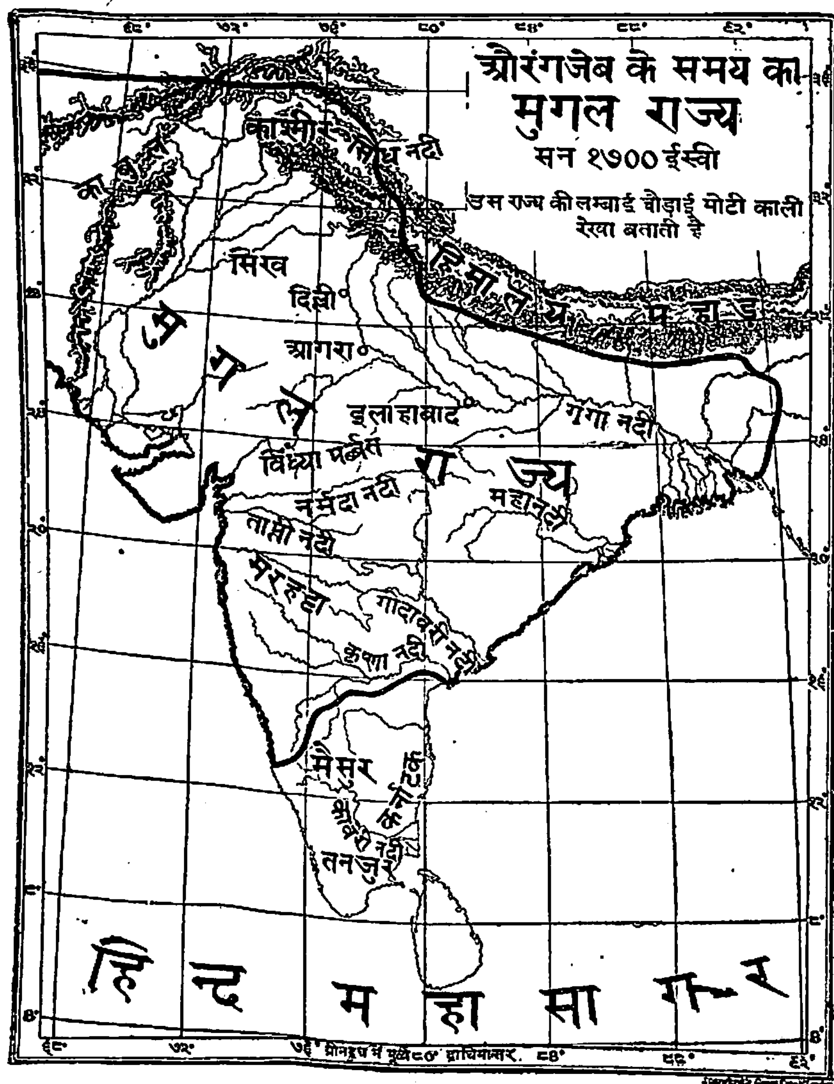
४—जब यूरोपवाले प्राचीन थल पथ से अस्बाब ले जाने में असमर्थ हुए तो उनको इस बात की चिन्ता हुई और यह सूझी कि कोई रास्ता समुद्र का निकालना चाहिये।

५—उनदिनों सब से सुगम समुद्र का रास्ता वह था जो अफ़्रिका के पश्चिम और दक्षिण होता हुआ आता था। इसको पुर्तगाल-वालों ने ढूंढ निकाला था। समुद्र में जहाज़ छोड़ कर अफ़्रिका के किनारे किनारे चले इसका फल यह हुआ कि दक्षिणीय तट पर पहुंच कर ज्यों पूर्व की दिशा में मुड़े त्यों हिन्द महासागर में जा निकले। होते होते एक प्रसिद्ध पुर्तगीज़ कप्तान वास्को डिगामा कुछ जहाज़ लेकर १४९८ ई० में भारतवर्ष के पश्चिमीय समुद्रतट पर आया और कालीकट नगर में उतरा।

६—कालीकट का राजा ज़मोरिन कहलाता था। उसने वास्को डिगामा को पुर्तगीज़ बादशाह के नाम एक पत्र दिया जिसका सारांश यह था, "मेरे राज्य में दारचीनी, लौंग, कालीमिर्च और अदरक अधिक होती है, मैं तुम्हारे देश से सोना चांदी मूंगा और क़िरमज़ी मखमल चाहता हूं"।

७—अब से सौ बरस तक अर्थात् १५०० ई० से १६०० ई० तक भारतवर्ष का समुद्रीय व्यांपार पुर्तगीज़ों के हाथ में रहा। उन्हों ने गोवा स्थान में एक बड़ा क़िला बना लिया था। आज तक यह स्थान उन्हीं के आधीन चला आता है।

८—यूरोप के और और देशवालों ने जो देखा कि पुर्तगीज़ भारत के व्यापार से बड़े धनी हुए जा रहे हैं तो उनके मुंह में


औरंगजेब के समय का
मुगल राज्य
सन १७०० ईस्वी
इस राज्य की लम्बाई चौड़ाई मोटी काली रेखा बताती है
काश्मीर
सिंध नदी
सिख
दिल्ली
आगरा
इलाहाबाद
गंगा नदी
हिमालय पहाड़
मुगल राज्य
विंध्या पर्वत
नर्मदा नदी
महानदी
तापी नदी
मरहठा
गोदावरी नदी
कृष्णा नदी
मैसूर
कर्नाटक
कावेरी नदी
तनजुर
हिन्द महासागर

पानी भर आया और उन्हों ने सोचा कि कोई ऐसा उपाय करना चाहिये कि हमलोग भी इस व्यापार में साझी हों। निदान हालैंड, इङ्गलैंड, फ़ान्स, जर्मनी, डेनमार्क और स्वीडन के व्यापारियों ने अपने अपने जहाज़ भेजने आरम्भ किये। पर कुछ सफलता हुई तो केवल हालैंड, इङ्गलैंड और फ्रान्सवालों को। और किसी को कुछ लाभ न हुआ और उन्हों ने कुछ दिन में भारतवर्ष के साथ व्यापार करना बन्द कर दिया।

८—पुर्तगीज़ के पीछे भारतवष में डच आये। यह यूरोप के उस छोटे देश के रहनेवाले थे जिसे हालैंड कहते हैं। अब यह लोग बल और पौरुष में बहुत घट गये हैं पर अब से ३०० बरस पहिले यह यूरोप की जहाज़ी क़ौमों में सब से चढ़े बढ़े थे और जहाज़ भी इन्हीं के सब से अच्छे होते थे। यह लोग पुर्तगीज़ से अधिक शक्तिमान थे; इस कारण इन्हों ने पुर्तगीज़ों को गोवा छोड़ और सब स्थानों से निकाल दिया और १६०० ई० से १७०० ई० तक गरम मसाले का व्यापार अपने हाथ से न जाने दिया। इनकी कोठियां कोचीन, जावा, लंका और सुमात्रा के टापुओं में भी थीं।

४१—संयुक्त ईस्ट इंडिया कम्पनी।

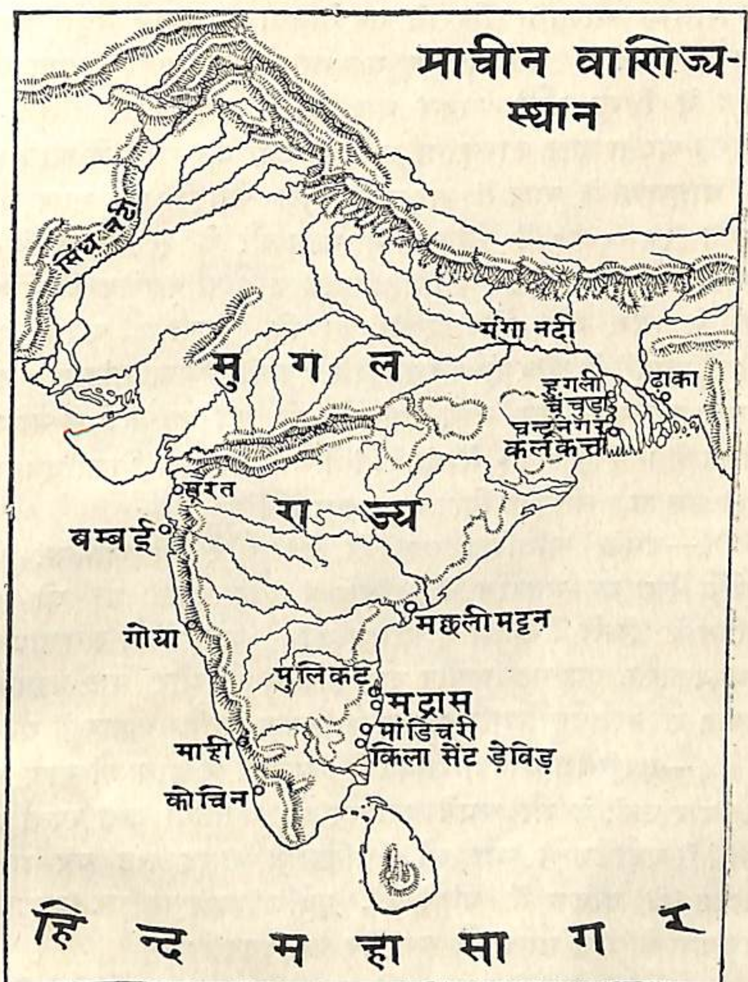
१—१६०० ई० में लण्डन के लगभग सौ सौदागरों ने मिलकर मन्सूबा किया कि भारतवर्ष के साथ व्यापार किया जाय। इस अर्थ से उन्होंने एक कम्पनी बनाई जिसका नाम "इंगलिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी" था। कम्पनी ने इलीज़बेथ से जो उस समय इंगलिस्तान की रानी थी यह आज्ञा ले ली थी कि भारतवर्ष को जहाज़ भेजे। अकबर उस समय भारत का बादशाह था।

१६१२ ई० में कम्पनी ने सूरत नगर में, जो मुगलराज का सब से बड़ा बन्दरगाह था एक कोठी बनाई। कम्पनी के कर्मचारी साल भर तक भारत के व्यापारियों से माल मोल लेकर कोठी में इकट्ठा रखते थे और जब उनके जहाज़ आते थे तो उनपर लाद कर यूरोप को भेज देते थे; और इङ्गलैण्ड का जो माल जहाज़ों पर आता था उसको अपनी कोठी में उतार लेते थे और बेचते रहते थे। अपने माल और प्राण की रक्षा के लिये उन्हों ने कोठी के चारों ओर एक पुष्ट दीवार बनाली थी, उसपर तोपें चढ़ा दी थीं।

२—इङ्गलिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी को इतना लाभ हुआ कि अङ्गरेजों ने और और कम्पनियां भी बनालीं और भारतवर्ष के साथ व्यापार करना आरम्भ कर दिया। अन्त में लगभग सौ बरस पीछे यह सब कम्पनियां मिलाकर एक कर दी गईं। यह बात १७०० ई० की है। इस बड़ी कम्पनी का नाम "संयुक्त ईस्ट इण्डिया कम्पनी" रख दिया गया और इङ्गलैण्ड के बादशाह ने भारतवर्ष से व्यापार करने का पूरा अधिकार इस कम्पनी को दे दिया।

३—१६३९ ई० में ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने चन्द्रगिरि के राजा से जो कर्नाटक में एक छोटी सी पहाड़ी गढ़ी का शासक था मदरास मोल ले लिया। यह उस समय मछुओं का एक छोटा सा गांव था। अंगरेजों ने इस स्थान पर एक क़िला बनवाया और उसका नाम सेण्ट जार्ज का क़िला रक्खा। बहुत से हिन्दू यहां आकर इनकी शरण में रहने लगे और इनके साथ लेन देन करने लगे।

४—बम्बई पहिले पहिल पुरतगीज़ों के आधीन था। इङ्गलैण्ड के बादशाह द्वितीय चार्लस् ने पुर्तगाल के बादशाह की बेटी से



ब्याह किया और पुर्तगाल के बादशाह ने १६६२ ई० में अपनी लड़की के जहेज़ में बम्बई इङ्गलैण्ड के बादशाह को दे दिया। इसके छः बरस पीछे चार्लस् ने यह नगर ईस्ट इण्डिया कम्पनी को

दस पाउण्ड सालाना किराये पर देदिया। बम्बई बहुत अच्छा बन्दरगाह था। इस कारण यह नगर बहुत बड़ा होगया और बहुत से हिन्दू यहां आकर बस गये। कुछ काल बीतने पर अंगरेज़ अपना कुल कारख़ाना सूरत से उठा कर यहीं ले आये।

शाहजहां के राज में मदरास मोल लेने के एक साल पीछे अर्थात १६४० ई० में अंगरेज़ों ने गङ्गा जी के मुहाने के निकट हुगली स्थान पर एक कोठी बनवाई और औरङ्गजेब के राज में उन्हों ने तीन गांव मोल लिये जो कि हुगली की अपेक्षा गङ्गा जी के मुहाने की ओर भी निकट थे। इनमें से एक गांव का नाम कालीघाट था। यह वही स्थान है जो अब कलकत्ते के नाम से प्रसिद्ध है। १६९० ई० में अंगरेज़ों ने यहां पर एक क़िला बनवाया और उसका नाम फ़ोर्ट विलियम रक्खा।

५—इनके अतिरिक्त अङ्गरेजों की और भी कोठियां थीं। पूर्वीय तट पर मदरास के दक्षिण में एक कोठी थी जो सेण्ट डेविड के किले के नाम से प्रसिद्ध थी। एक कोठी मसलीपटम, एक बङ्गाला, एक पटना और एक ढाके में थी और एक बङ्गाले के नवाब की राजधानी मुर्शिदाबाद के निकट क़ासिमबज़ार में थी।

६—फ़रांसीस भी भारतवर्ष में अंगरेज़ों के साथ ही साथ आये थे और उन्हों ने भी अपने व्यापार की कोठियां बना रक्खी थीं। इनमें से बड़ी बड़ी यह थीं,—पश्चिमीय समुद्र तट पर माही, मद्रास के दक्षिण में पांडीचरी, पूर्वीय समुद्रतट पर बङ्गाले में कलकत्ते से बीस मील की दूरी पर चन्द्रनगर।

७—डच लोगों के व्यापार के स्थान भिन्न थे। उनमें से बड़े बड़े यह थे, कोचीन पश्चिमीय समुद्रतट पर, पुलीकट, अर्थात पलिया घाट, मद्रास के उत्तर में पूर्वीय समुद्रतट पर और चन्द्रनगर के पास चिंसुरा बङ्गाले में।

४२—शिवाजी की बढ़ती।

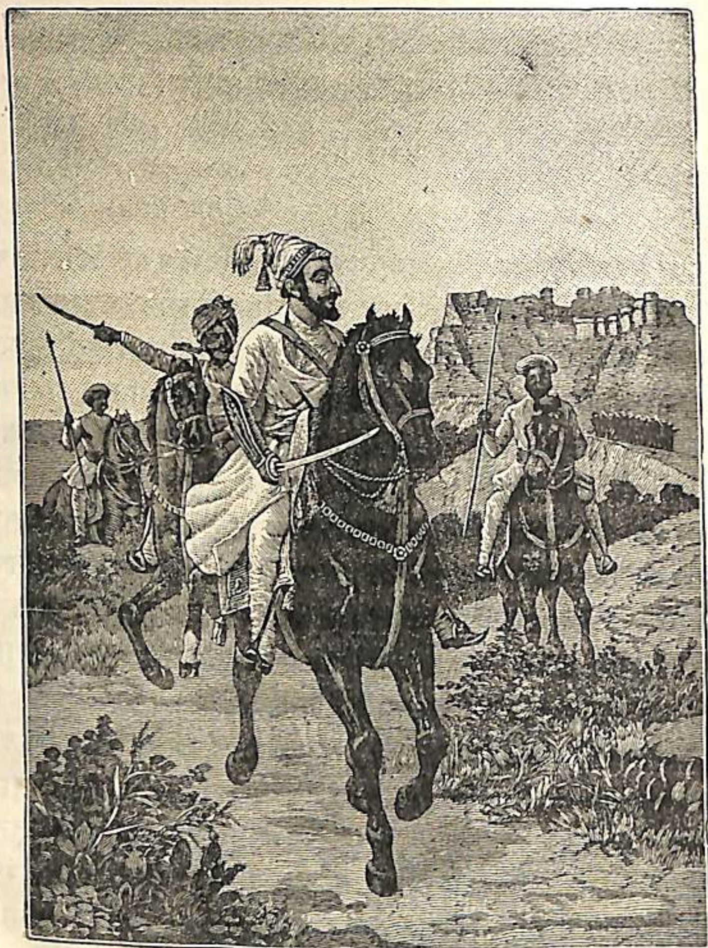
मरहठे।

(१६२७ ई० से १६८० ई० तक)

१—मरहठे भारत के उस पहाड़ी हिस्से में रहते थे जिसे अब बम्बई हाता कहते हैं। यह लोग डील डौल में छोटे, बदन के पुष्ट, वीर और स्वभाव में सीधे साधे थे। इनका देश पहाड़ियों से पटा पड़ा था। उस समय सड़कें न थीं और पहाड़ियों पर घने वन थे। लगभग हर पहाड़ की चोटी पर एक गढ़ था; और हर गढ़ का एक सरदार था जो आस पास के गावों का हाकिम था। बहुत दिनों तक यह सरदार दखिन के मुसलमान सुलतानों के आधीन थे और उनको कर देते रहे। केवल इतना ही नहीं परन्तु उनके साथ होकर मुग़ल सम्राटों की सेना से युद्ध भी करते थे। शिवाजी ने उन सब को मिलाकर एक बली जाति बना ली।

२—शिवाजी शाहजहां की राजगद्दी की साल सन् १६२७ ई० में पदा हुआ था। उसका बाप बीजापुर के दरबार में नौकर था। बाप नौकरी में था, शिवाजी पूने में पल रहा था। लिखना पढ़ना तो पण्डितों और ब्राह्मणों का काम समझा जाता था इस कारण शिवाजी को नहीं सिखाया गया; अलबत्ता शस्त्र विद्या की सब कलायें सिखाई गईं, जैसे घोड़े पर चढ़ना, तीर चलाना, कुश्ती लड़ना, बल्लम चलाना इत्यादि। उसको प्राचीन हिन्दू सूर वीरों के चरित याद थे। और उसकी अभिलाषा थी कि मैं भी उनकी भांति काम करके नाम और उन्नति प्राप्त करूं।

३—मरहठे सरदारों की यह रीति थी कि जब अवसर



शिवाजी।

पाते थे तो अपने पहाड़ी गढ़ों से उतर कर नीचे के इलाक़ों में लूट मार करने लगते थे। शिवाजी बहुधा इनके साथ जाया करता था और बीस बरस की अवस्था में आप एक झुण्ड का सरदार बन

गया था। उसने पहले पुरन्धर का गढ़ लिया और फिर एक एक करके और गढ़ जीत लिये; हथियार और सामान और रुपया इकट्ठा किया और उसका नाम दूर दूर तक फैल गया।

४—होते होते बीजापुर के सुलतान को भी उससे डर लगने लगा। उसने शिवाजी से युद्ध करने के लिये अपने सेनापति अफ़ज़ल खां को भेजा। शिवाजी ने कहला भेजा कि मुझ में खां साहब का सामना करने की शक्ति कहां है; अगर वह शस्त्र छोड़ कर अकेले मुझसे मिलें तो मैं उनकी आधीनता स्वीकार करने को तैयार हूं। अफ़ज़ल खां के जी में कुछ संदेह न हुआ। वह सब सेना और अरदली के सवार पीछे छोड़ गया और पतली मलमल का वस्त्र पहन कर ख़ाली एक आदमी अपने साथ लेकर शिवाजी से मिलने चला। इधर यह जवान मरहठा सरदार दावघात का पक्का, ऊपरी वस्त्र के नीचे कवच पहने हुए था; मुट्ठी में बिछुवा और बांह में कटार छिपी हुई थी। अफ़ज़ल खां जो उससे मिलने को बढ़ा तो शिवाजी बाघ की भांति उस पर टूट पड़ा। पहले बिछुवा उसके पेट में घुसेड़ दिया फिर कटार से उसे मार डाला। शिवाजी के सैनिक जो पासही पेड़ों की आड़ में छिपे थे निकल कर मुसलमानों पर टूट पड़े। मुसलमान कुछ लड़ाई के लिये तैयार हो कर तो आये ही न थे हार कर भाग गये।

५—शिवाजी ने सारे देश को रौंद डाला और सारे दखिन का महाराजा बन गया। लगभग सब छोटे मोटे मरहठे सरदार और राजा उसके आधीन और सहायक हुए। यह मुसलमानों का बैरी था और उन्हें उसने जता दिया कि मैं गौ और ब्राह्मणों की रक्षा के लिये युद्ध करता हूं। यह वह समय था कि जब दखिन के मुसलमान बादशाह औरङ्गजेब की सेना से युद्ध कर रहे थे।

उनको इतना अवकाश न था कि अपने बल को इकट्ठा करके शिवाजी को पराजित करने में लगते। परिणाम यह हुआ कि शिवाजी सबल होता गया और बीजापुर के सुलतान को उससे यह सन्धि करनी पड़ी कि अब से शिवाजी पश्चिमीय समुद्रतट का राजा माना जाय।

६—अब औरङ्गज़ेब भी सम्राट के पद पर पहुंच चुका था। इस मरहठे सरदार की बढ़ती को देखकर यह भी डरा और एक बहुत बली सेना देकर शाइस्ता खां को जो दखिन का सूबेदार था उसको परास्त करने के लिये भेजा। शाइस्ता खां इस भारी सेना को लेकर पूना में घुस गया। शिवाजी ने देखा कि ऐसे बली बैरी से खुले मैदान में लड़कर बिजयी होना तो असम्भव है। इस कारण उसने बैरागियों का भेस बना लिया। उसके साथ बीस जवान और थे; उन्हों ने भी यही भेस बना रक्खा था। शिवाजी उन बीसों साथियों के साथ एक रात पूना में घुस गया और जिस घर में शाइस्ता खां ठहरा था उस में घुस कर उसे मारही लिया था पर वह खिड़की की राह कूद कर निकल गया। शिवाजी उसके पीछे दौड़ा और एक हाथ तलवार का जो मारा तो उसकी अंगुलियां कट कर गिर गईं। मरहठे जिस भांति आये थे उसी भांति लौट गये परन्तु शाइस्ता खां ऐसा डरा कि पूना छोड़ कर चला गया। अब शिवाजी निडर जहां चाहता था जाता था और देश जीत कर अपना राज बढ़ाता रहा।

७—इसके पीछे कुछ सैनिक लेकर शिवाजी पश्चिमीय तट के धनी बन्दरगाह सूरत में पहुंचा; छः दिन तक नगर को लूटा। यहां अंगरेजों की कोठी थी। उन्हों ने उसकी बड़ी सावधानी से रक्षा की और शिवाजी को पास न आने दिया।

८—औरङ्गज़ेब ने फिर उसे दबाने को एक बड़ी भारी सेना

भेजी। इस बार शिवाजी ने सन्देसा भेजा कि जो बादशाह मेरा कुछ राज मेरे पास रहने दे और मुझे अपनी सेना में कोई ऊंची पदवी दे तो मैं उसकी आधीनता स्वीकार करने को तैयार हूं। औरङ्ग़ज़ेव ने यह बात मान ली। वह यह चाहता था कि जो किसी भांति शिवाजी मेरे हाथ आ जाय तो मैं उसे मरवा डालूं। शिवाजी दिल्ली पहुंचा और राज दरबार में हाज़िर हुआ परन्तु यहां उसके साथ ऐसा बुरा बरताव किया गया कि वह जान गया कि अब मेरा कुशल नहीं है। शिवाजी एक घर के भीतर बन्द होकर पड़ रहा और बीमारी का बहाना किया। उस घर की चारों ओर मोग़ल सैनिकों का पहरा था; फिर भी उसके साथी उसे कुशल पूर्वक एक सुरक्षित स्थान पर ले गये। निकालते समय उन्हों ने उसे एक टोकरे में बैठाकर ऊपर से मिठाई रख दी। पहरेवालों ने समझा कि यह केवल मिठाई का टोकरा है, इस कारण उन्हों ने कोई रोक टोक न की और यह निकल गया। क़ैद से निकलते ही शिवाजी ने दाढ़ी मोछ मुड़ा डाली गेरुवा वस्त्र धारण कर लिया, भभूत बदन पर मली; किसी ने न जाना कि यह कौन है; इस भांति शिवाजी फिर अपने देश में पहुंच गया।

९—औरङ्गजेब ने फिर उसको कितनी ही बार पकड़ने की चेष्टा की, बड़े बड़े लालच दिये, और बुलाया परन्तु वह उसके फंदे में न फंसा।

१०—अब शिवाजी राजगद्दी पर बैठा और वह मरहठों का राजा कहलाया। वह बड़ी भारी सेना लेकर दक्षिण की ओर चला; मदरास के पास आया परन्तु उस पर चढ़ाई नहीं की। उसने मैसूर और करनाटक के सब गढ़, जैसे जिंजी, वेलहोर, आरनी, बंगलौर और बिलहारी ले लिये; अठारह महीने के मुहिम के पीछे पूना लौट आया। जो देश उसने जीते थे उनके हाकिमों ने

शिवाजी को चौथ अर्थात अपनी आमदनी का चौथा भाग देना स्वीकार किया।

११—इसके कुछ काल पीछे सन् १६८० ई० में शिवाजी की मृत्यु हुई। उस समय उसकी आयु ५२ बरस की थी। मरहठों में ऐसा बीर और बुद्धिमान सरदार दूसरा न था। उन दिनों के मरहठों के हाथ के चित्र जो मौजूद हैं उन में दिखाया गया है कि शिवाजी घोड़े पर चढ़ा चला जा रहा है और चावल फांक रहा है। अर्थात् उसे आराम के साथ खाने का भी समय नहीं मिलता था।

१२—शिवाजी के पीछे उसका बेटा सम्भाजी (शम्भुजी) बाप की गद्दी पर बठा परन्तु उसमें बाप की योग्यता कुछ भी न थी। वह आलसी और निर्दयी था। औरङ्गज़ब ने उसे थोड़े ही दिनों में पकड़ लिया और मरवा डाला।

४३—मुग़लराज की घटती।

(सन् १७०७ ई० से १७४८ ई० तक)

१—मुग़ल घराने के कुल १५ बादशाह हुए। उनमें से पहिले छः शक्तिमान और सचमुच सम्राट कहे जाने के योग्य थे। मुग़ल घराने के इन सच्चे सम्राटों में औरङ्गजेब अन्तिम था। उसके समय में मुग़ल राज की हद इतनी बढ़ गई थी कि पहिले किसी सम्राट के समय में न हुई थी पर औरङ्गजेब के बुरे बर्ताव ने जगह जगह बैरी पैदा कर लिये थे। सिक्ख, राजपूत और मरहठे बिगड़ गये। औरङ्गजेब के जीवन के अन्तिम बीस बरस युद्धक्षेत्र में इस चेष्टा में बीते कि मरहठों को पराजित किया जाय परन्तु मरहठे बिद्रोही ही बने रहे।


बहादुर शाह।

२—औरङ्गजेब का बड़ा बेटा बहादुर शाह के नाम से अपने बाप के सिंहासन पर बैठा परन्तु केवल पांच बरस राज करने पाया था कि परलोक सिधारा। उसकी मृत्यु के पीछे सात बरस के समय में तीन सम्राट हुए। राज्य क्या था कठपुतलियों का खेल था; क्योंकि दरबार के उमराव लोग ऐसे शक्तिमान हो गये थे कि जिसे चाहते थे गद्दी पर बैठाते थे और जिसे चाहते थे गद्दी से उतार कर मरवा डालते थे। औरङ्गजेब की मृत्यु के बारह बरस पीछे अर्थात सन् १७१९ ई० में मुग़ल घराने का एक सम्राट जिसका नाम महम्मद शाह था सिंहासन पर बैठा और ३० बरस अर्थात सन् १७४८ ई० तक नाम मात्र का सम्राट रहा।


महम्मद शाह।

३—औरङ्गजेब की मृत्यु के पीछे किसी बड़े सूबे का सूबेदार दिल्ली के सम्राट का दबाव न मानता था और आप ही वहां का हाकिम और राजा बन बैठा था। सूबेदार सम्राट को कुछ रुपया भेजते रहते थे परन्तु जो

जो चाहता था सो भेजते थे। दिखाने को यह लोग अभी तक सम्राट के आधीन थे परन्तु असल में सम्राट केवल दिल्ली का बादशाह था।



निज़ामुलमुल्क।

४—जिस भांति सूबेदार सम्राट की आधीनता से निकल गये थे उसी भांति नवाब सूबेदारों की आधीनता से निकल गये थे; यद्यपि अभी तक सूबेदारों के आधीन कहलाते थे। इनमें से बड़ बड़े सूबेदार और नवाब यह थे; उत्तरीय भारत में अवध का सूबेदार, और बङ्गाल और बिहार का नवाब, और दखिन में हैदराबाद का सूबेदार जो निज़ामुल-मुल्क कहलाता था, और करनाटक का नवाब।

४४—मरहठों की बढ़ती।

(सन् १७०८ ई० से १७४८ ई० तक)

१—ऊपर कहा जा चुका है कि शिवाजी मरहठों को लिये हुए सारे दखिन में फिरता था और उनको लूट खसोट का पाठ पढ़ा रहा था। मरहठों ने जो देखा कि रुपया इकट्ठा करने का यह उपाय सब से सहज है तो खेती के कटते ही और वर्षा-ऋतु के समाप्त होते ही बड़े बड़े हथियारबन्द झुण्ड बांध कर निकलने लगे और मध्य भारत को रौंद डाला।

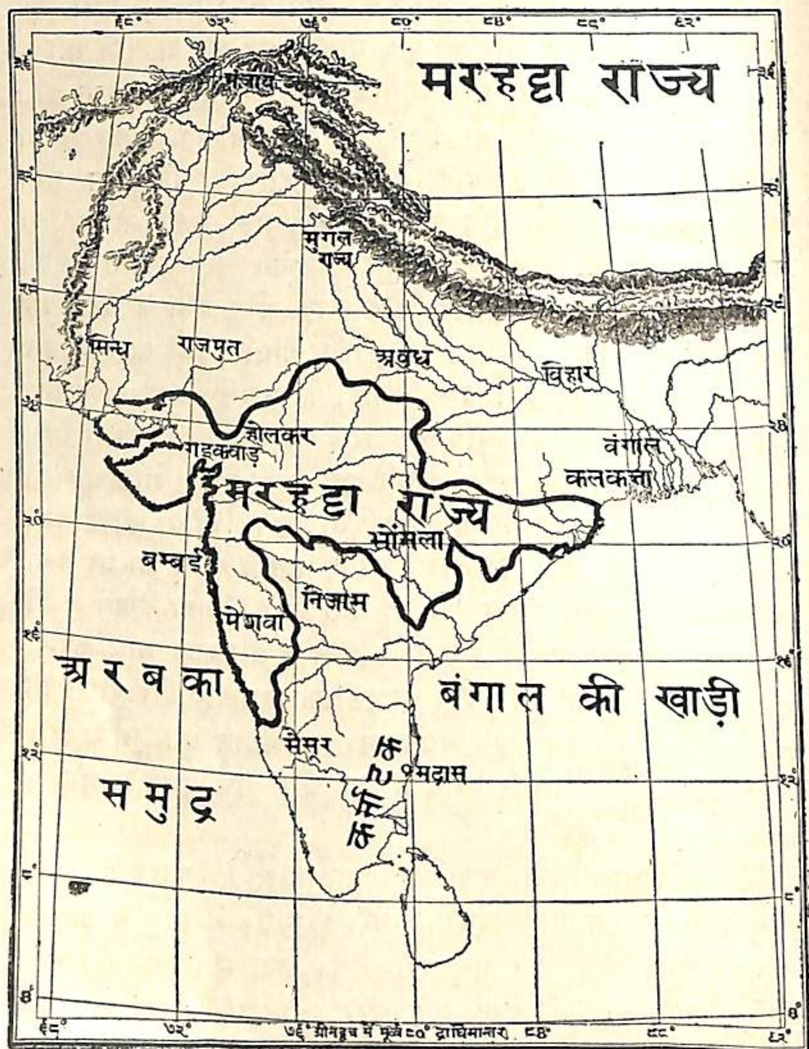
२—कुछ समय पाकर उनका हियाव ऐसा बढ़ा कि विन्ध्याचल के उत्तर में दिल्ली तक धावा मारने लगे; जहां जाते थे वहां के

हाकिम से चौथ मांगते थे, जब तक चौथ न मिलती प्रजा को सताते और मारते थे और जो कुछ पाते थे लूट कर ले जाते थे।

३—औरङ्गजेब की मृत्यु के पीछे साहु मरहठों का राजा था। वह सम्भाजी का बेटा था जिसे औरङ्गजेब ने पकड़ कर मरवा दिया था। वह औरङ्गजेब के दरबार में पढ़ाया लिखाया गया था, बादशाह उसको साहु अर्थात विश्वासपात्र कहा करता था और शिवाजी को चोर। जब औरङ्गजेब की मृत्यु हुई तो उसको आज्ञा हो गई कि अपने देश लौट जाय और वहां के बादशाह का आधीन होकर मरहठों का राजा बने। इस कारण वह मरहठों का राजा हुआ और सितारा को उसने अपनी राजधानी बनाई। परन्तु साहु कुबुद्धि और मूर्ख था और बड़ा विषयी था; मेहनत से जी चुराता था। उसने कुल काम अपने ब्राह्मण मंत्री पर जो पेशवा कहलाता था छोड़ दिया था। पेशवा की पदवी मौरूसी हो गई और जिस भांति एक घराना राजा का था उसी भांति दूसरा घराना पेशवा का बन गया था। पेशवा देखने में तो राजा का आधीन था और उसी के नाम से सब राज काज करता था परन्तु वास्तव में धीरे धीरे मरहठों का हाकिम और राजा हो गया था। सब मरहठे उसे अपना सरदार जानते थे। सन्धि और विग्रह करना सब उसी के हाथ में था और वह सारे महाराष्ट्र मंडल का अधिकारी था।

४—पहिला पेशवा बालाजी विश्वनाथ था। औरङ्गजेब की मृत्यु के एक बरस पीछे अर्थात सन् १७०८ ई० में साहु ने उसको पेशवा बनाया और यह सन् १७२० ई० तक मंत्री बना रहा। इसने महम्मद शाह को दबा कर सारे दखिन में चौथ लेने की आज्ञा ले ली।

५—दूसरा पेशवा बाजीराव था। यह सन् १७२० ई० से


मरहट्टा राज्य
मुगल राज्य
सिन्ध
राजपुत
अवध
बिहार
होलकर
गाइकवाड़
बंगाल
कलकत्ता
मरहट्टा राज्य
भोंसला
बम्बई
निजाम
पेशवा
अरब का समुद्र
बंगाल की खाड़ी
मैसूर
मद्रास

१७४० ई० तक राज काज करता रहा। इसने बड़े बड़े मरहठा सरदारों को आज्ञा दी कि जहां तुम्हारा जो चाहे जाओ और उस देश से चौथ लो। महम्मद शाह ने दिल्ली को बचा रखने के कारण मरहठों को आज्ञा देदी कि दिल्ली के सिवाय जहां चाहो वहां चौथ लो। महम्मद शाह अभी तक नाममात्र मुग़ल राज्य का सम्राट था। इससे मरहठों को अधिकार हो गया कि भारत के हर प्रांत से चौथ लें।

६—उसके समय में मरहठों के पांच बड़े राज बन गये। मरहठों के प्रधान लोगों ने जहां किसी सूबेदार या नवाब को दुर्बल पाया उसे सूबे से निकाल दिया और आप वहां के हाकिम बन गये।

७—महाराष्ट्र अर्थात् मरहठों का प्राचीन देश वहां था जहां अब बम्बई हाता है। उसका राजा मरहठों का नाम मात्र राजा था जो सितारे में रहता था पर वास्तव में देश का राजा पेशवा था जो बम्बई से अस्सी मील के लगभग अग्निकोण की ओर पूने में रहा करता था। गुजरात एक मरहठा सरदार के आधीन था जो गायकवाड़ कहलाता था। मालवे में दो राजा थे,—होलकर जिसकी राजधानी इन्दौर थी और सिन्धिया जिसकी ग्वालियर रही। बरार और गोंडवाने में जो अबतक मध्यदेश का सूबा कहलाता है भोंसला राजा था। उसकी राजधानी नागपुर थी।

८—यह रियासतें मौरूसी थीं; अर्थात बाप के पीछे बेटा गद्दी पर बैठता था। इस से यह जाना गया कि महाराष्ट्र के सिवाय मरहठों के चार बड़े बड़े राज और थे। पहिले उन राजों के अधिकारी जो चौथ लेते थे उसे पेशवा के पास भेज देते थे परन्तु पीछे से उन्हों ने चौथ का भेजना बंद कर दिया। उनमें से

तीन राज अब तक हैं। इनके नाम यह हैं गुजरात या बड़ौदा, ग्वालियार, और इन्दौर।

९—मरहठों ने हैदराबाद लेने की बड़ी चेष्टा की परन्तु उनका सब उपाय व्यर्थ रहा। निज़ाम हैदराबाद और मरहठों में बराबर युद्ध होते रहे; मरहठे बराबर चौथ मांगते रहें, निज़ाम ने जहां तक हो सका चौथ नहीं दी।

१०—तीसरा पेशवा बालाजी बाजीराव था। यह अपने बाप और दादा के पीछे सन् १७४० ई० से सन् १७६१ ई० तक राज करता रहा।

११—औरङ्गजेब की मृत्यु के पचास बरस पीछे तक भारत का हाल वही हो गया था जो किसी समय में पठान बादशाहों के राज में हुआ था अर्थात इसके बीच में कोई ऐसा बली राजा न था जैसा अब है जो प्रजा को डाकुओं से बचाता है और उसके जान और माल की रक्षा करता है। मरहठे डाकुओं के दल के दल देश में फिरते थे; अपने घोड़ों के लिये किसानों की खड़ी खेतियां काट डालते थे और प्रजा को लूटते मारते थे। इस समय में लोग हर गांव के पास पास दृढ़ कोट बनाते थे और चारों ओर कांटों की बाड़ लगाई जाती थी जिसमें कि लुटेरे न घुस आयें। किसान हल जोतने जाते थे तो अपनी तलवार साथ ले जाते थे। ऊंचे मचानों पर रखवारे बैठाये जाते थे जिसमें कि चारों ओर देखते रहें और जब डाकुओं के आने की धूल उड़ती हुई देखें तो जता दें। हर गांव में एक बड़ा भारी धौंसा रहता था जिसकी धमक एक मील की दूरी पर सुनाई देती थी। जहां डाकू आते दिखाई दिये और धौंसे पर चोट पड़ी लोग उसे सुनते ही खेतों से भागकर गावों के कोट के भीतर चले जाते थे।

१२—रास्ते लुटते थे। इस कारण लोग अपनी रक्षा के निमित्त

सिपाही को साथ लिये बिना राह नहीं चलते थे। इलाके के इलाके उजाड़ पड़े थे। जो कुछ सड़कें पहिले को बनी मौजूद थीं बिलकुल चौपट हो गई थीं। कोई उनको देख भाल नहीं करता था, गाड़ियों



गांव का मचान।

का चलना बन्द हो गया था, लोग घोड़ों या बैलों पर चढ़ कर यात्रा करते थे। हर इलाके का सरदार अलग था। यात्री जब तक उनको कुछ भेट न देते थे वह लोग उनको अपने इलाके में

होकर जाने न देते थे। यह उतरवाई कहलाती थी। कभी कभी बीस मील की जात्रा में दस बारह जगह उतरवाई देनी पड़ती थी।

४५—नादिरशाह।

१—औरङ्गजेब के मरने के तीस बरस पीछे नादिर खां नाम एक सरदार ने फ़ारस की राजगद्दी पर अधिकार जमा कर अपना नाम नादिरशाह रख लिया और अफ़गानिस्तान को भी पराजित कर लिया। इसके पीछे महम्मदशाह के पास मित्रता व्यवहार में एक दूत भेजा। महम्मद शाह ने दूत के साथ वैरभाव का बरताव किया और कहने लगा कि "आज नादिरशाह बादशाह हो गये हैं"।



नादिरशाह।

२—नादिर क्रोधी स्वभाव का पक्का मुसलमान था। उसने महम्मदशाह पर यह दोष लगाया कि वह मुसलमान बादशाह के धर्मानुसार काम नहीं करता अर्थात् उसने हिन्दुओं से जज़िया क्यों नहीं लिया और भयभीत होकर मूर्त्तिपूजक मरहठों को चौथ क्यों दी। इस बहाने से नादिरशाह ने महम्मदशाह को दण्ड देने का बिचार किया। और ईरानियों और अफ़ग़ानों की एक बड़ी सेना लेकर जिस तरह २४० बरस पहिले तैमूरलङ्ग आया था यह भी ख़ैबर के दर्रे से निकल कर पंजाब को कुचलता और सत्यानाश करता हुआ दिल्ली में आ गया।

३—नादिरशाह बड़े डील डौल का मनुष्य था। वह छः फुट लम्बा, बदन का रंग काला, माथे पर बाल पड़ा हुआ, घनी भँवें, बोली में बादल के समान गर्ज, आंखें बिजली की नाईं चमकती हुई थीं। वह भेड़ के बच्चे की काली खाल के चमड़ों का चोग़ा पहिनता था और फ़ारस की नोकदार कुलाह दिया करता था। परन्तु भारत में आकर उसने लाल रंग का बड़ा मुड़ासा सिर पर बांधा; कमर में खंजर हाथ में लोहे का तबर रखता था। हिन्दुओं की दृष्टि में वह पूरा राक्षस जान पड़ता था।

४—नादिरशाह कहता था कि जो मुझे बहुतसा धन मिल जायगा तो मैं नगर को न उजाड़ूंगा। परन्तु रात के समय दिल्ली के लोगों ने नादिरशाह के कुछ सोते हुए सैनिक मार डाले। नादिरशाह ने जब सवेरे यह हाल देखा तो उसके शरीर में आग लग गई और उसने आज्ञा दी कि नगर को लूट लो और जो सामने आये उसको मार डालो। दिन भर नादिरशाह की सेना ने तैमूर के तुर्कों की नाईं लूट खसोट, अग्निदाह और हत्याकाण्ड मचा रक्खा। सायंकाल को महम्मदशाह आकर नादिरशाह के पैरों पर गिरा और प्रार्थना की कि अब यह हत्याकाण्ड बन्द कर दिया जाय। नादिरशाह ने अपनी सेना को आज्ञा दी बस अब किसी को न मारो और सेना ने उसकी आज्ञा मान ली।

५—दूसरे दिन नादिरशाह और उसके साथियों ने दिल्ली के उस कुल धन को समेटा जो बाबर के समय से मुग़ल सम्राट बटोरते आये थे। शाहजहां का तख़्ते ताऊस, शाही ताज और बेगमों के जड़ाऊ गहने, अच्छे से अच्छे हाथी, घोड़े, तोपें, बहुमूल्य अतलस, कमख़ाव, मलमल, शाही ख़ज़ाने और दिल्ली और अवध के बड़े आदमियों और रईसों के जमा किये हुए धन के ढेर अपने साथ ले गया। नादिरशाह के हाथ इतना धन लगा कि वह

हैरान था कि इसको क्या करूं। इस कारण उसने कुल सेना को तीन मास की तनखाह अगौड़ दे दी और एक बरस तक फ़ारस के रहनेवालों से किसी प्रकार का कर न लिया।

६—इस नादिरशाह की चढ़ाई ने बचे खुचे मुग़ल राज्य का नाश कर दिया। सूबेदारों और नवाबों ने रुपये की भेंटें भेजनी बन्द कर दीं। मरहठों को और भी बन गई। उन्हों ने कुल दखिन और बंगाले को चौपट कर डाला और जहां गये वहीं चौथ लगा दी। कलकत्ते के अंग्रेजी व्यापारी भी भयभीत हुए। उन्हों ने एक गहरी खाई खोदी जिस में मरहठे उन्हें लूट न सकें और इस खाई का नाम मरहठाडिच अर्थात मरहठा खाई रक्खा गया।

आगरा-अवध संयुक्त प्रदेश के लिये उपयोगी किताबों की फ़हरिस्त।

हिस्ट्री।

भारतवर्ष का इतिहास, पहिला भाग, ई. मार्सडन और लाला सीताराम रचित, १० आना।

भारतवर्ष का इतिहास, दूसरा भाग, ई. मार्सडन और लाला सीताराम रचित, ८ आना।

हिन्दुस्तान के इतिहास की सरल कहानियां (मानचित्र और चित्र समेत) १० आना।

मिडल वर्नेक्युलर हिस्ट्री रीडर, ई. मार्सडन बी. ए. का बनाया, उर्दू और हिन्दी प्रत्येक ५ आना।

जिओग्राफी।

जिओग्राफी, संयुक्त देशकी ३री और ४थी क्लासों के लिये, बाबू [illegible] दत्त बी. ए. की बनायी सचित्र और बहुत रंगीन मानचित्र, संयुक्त देशके लिये, हिन्दी और उर्दू प्रत्येक ४ आना।

फ़िज़िकल ट्रेनिंग।

ए टेक्स्ट-बुक अव् फ़िज़िकल ड्रिल, हिन्दुस्तान के स्कूलों के आवश्यकीय द्रव्य विशेषकर के शामिल हैं। जे. सी. फिसचर और जी. आर. क्राए का बनाया १२ आना। (उर्दू और हिन्दी में भी)।

मैकमिलन हिन्दी ग्रामर।

भाषा सरल व्याकरण, पार्ट १, १ आना; पार्ट २, २ आना।

मैकमिलन डिगलट ग्रामर, हिन्दी-इङ्गलिश, बुक १ – शब्द भेद, ३ आना; बुक २ – सरल पदपरिचय, ४ आना।

मैकमिलन उर्दू ग्रामर।

तसहील उल् क़वाइद, सम्पूर्ण संशोधित और परिवर्द्धित। ए. सी. मुकर्जि बी. ए. का बनाया, पार्ट १, २ आना; पार्ट २, ३ आना।

क़वाएद-इ-उर्दू मौलवी महम्मद [illegible]ल्ला एम. ए. का बनाया, पार्ट १, १ आना, पार्ट २, २ आना।

मैकमिलन डिगलट ग्रामर, उर्दू-इङ्गलिश, बुक १ – शब्द भेद, ४ आना; बुक २ – सरल पदपरिचय, ४ आना।
